Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

# जन ज्ञान [मासिक]

जून १९८६ ज्येष्ठ २०४३

(१६ जून १९८६ से १५ जुलाई १९८६ तक)

स्वातंत्र्य योद्धा – महाराणा प्रताप

१० जून जयन्ती दिवस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# करौल बाग कार्यालय का नया पता

दयानन्द संस्थान का करौल बाग कार्यालय १५६७ हरध्यान सिंह रोड से स्थानान्तरित होकर २२८६, आर्य समाज रोड, करौल बाग नई दिल्ली-५ में आ गया है। कृपया इसी पते पर पत्र व्यवहार करें।

● कार्यालय के खुलने का समय ●

१२ बजे दोपहर से ६ बजे सायं तक है।

फोन : ५७२४७४१, ५७२२६३६

# अगले अंक में पढ़िए

- हिन्दू राष्ट्र ही क्यों ?
- नेताजी तिलक की अमरवाणी
- हम इस देश को बंटने नहीं देंगे

तथा अनेक नियमित और कुछ नये स्तम्भ !
सभी स्तम्भों के लिए आपके लेख आमंत्रित हैं।

—सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू राज्य स्थापना हेतु संघर्ष करो ।

संस्थापक—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु:

सम्पादक—राकेशरानी

वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली—११००३६

वार्षिक मूल्य : ३० रुपये
विदेश में : विमान से ४२ पौंड, ६० डालर
समुद्री डाक से ४ पौंड, ६ डालर
आजीवन : ५०१ रुपये
विदेश में : १५०१ रु.
यह अंक : तीन रुपये

वैशाख संवत् २०४३
मई १९८६, वर्ष १८, अंक १

प्रार्थना

## जन-सेवा सर्वश्रेष्ठ ईशोपासना

यस्य संस्थे न वृण्वते हरी समत्सु
शत्रव: तस्मा इन्द्राय गायत: ।
ऋ० ८।५।४।।

शब्दार्थ :—(यस्य संस्थे) जिसकी संस्था में वाले (हरी) कार्य भार का हरण करने वाले उच्च और साधारण इन दोनों से (समत्सु) युद्धों में (शत्रव:) शत्रु भी (न वृण्वते) स्पर्धा नहीं कर सकते (तस्मै इन्द्राय) उस प्रभु की (गायत) स्तुति कीजिए ।

अर्थ—जो प्रभु के भक्त, जनसेवा रूपी प्रभु कार्य में अपने आपको समर्पित करते हैं, वे समर्थ हों या न हों, उनका मुकाबला शत्रु भी नहीं कर सकता । यह सामर्थ्य जिस प्रभु की शक्ति से प्राप्त होती है, हम उसी एक प्रभु की उपासना करें ।

—मनुष्यों को चाहिए कि पुरुषार्थ सिद्धि के लिए सत्य वाणी, बुद्धि और क्रिया का अनुष्टान करें जिससे देहान्तर और जन्मान्तर में मगल हो ।

—महर्षि दयानन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# इस अंक में पढ़िए


जीवन-यात्रा का एक पग और (सम्पादकीय)

महाराणा प्रताप की प्रासंगिकता —धर्मपाल शास्त्री

सीमावर्ती राज्यों से हिन्दुओं का निष्क्रमण–एक गम्भीर खतरा —(राकेशरानी)

इतिहास के साथ सरकारी छल —आचार्य किशोरीदास वाजपेयी

धूप एक दवा है —किरण अरोड़ा

विदेशी धरती से पनपा है खालिस्तान का नारा —प्रो० शेर सिंह

हिन्दू समाज की रक्षा —आनन्द शंकर पंडया

उपनिषदों की कथाएं —महात्मा नारायण स्वामी

अमी रस पिलाओ... —आचार्य सुभाषचन्द्र शास्त्री

मानसिक क्षमता कैसे बढ़ाएं ?

पुत्र से बढ़कर पुत्री का महत्त्व —डा० प्रज्ञादेवी आचार्य

लव और कुश —प्रेमचन्द्र शास्त्री

युगपुरुष स्वामी विवेकानन्द —राधेश्याम मित्तल

महान सेनापति तात्याटोपे —कुमार योगी

हिन्दुओं के प्रति अन्याय —आनन्द शंकर पड्या


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

# जीवन-यात्रा का एक पग और

जीवन यात्रा के पचास मील के पत्थर पार कर चुकी हूं। यह सफर बहुत लम्बा तो नहीं, किन्तु इस इतनी-सी डगर में भी अनुभवों की एक अच्छी-खासी गठरी इस देह की ठठरी में सहेजी अवश्य ही है। उत्तर प्रदेश के जनपद बुलन्दशहर के एक छोटे-से गांव गिनौरा में ममतामयी माता लीलावती की गोद में आंखें खोली थीं, किन्तु जब जानने-पहचानने की स्थिति में आई तो अपने पूज्य पिताजी पं० रामचरण शर्मा के साथ लवपुर (लाहौर) में बचपन बिताया। आज भी स्मृतिपटल पर सहेजे हूं उस महानगर की अनेक स्मृतियां। दयानन्द के अनुरक्त भक्त पूज्य पिताजी के साथ आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में उनकी उंगली पकड़ कर जाना, कई बार उपस्थित आर्यजनों के आग्रह पर ईश्वर-भक्ति के भजन अथवा वैदिक गीत गाना यह सभी कुछ तो बार-बार याद आता है और फिर याद आते हैं वे रक्तपात भरे दिन जब भारत-भूमि के दुखद विभाजन की घड़ियां आयीं। उस समय छूटते हुए रक्त के फव्वारे जो आज भी भुलाए नहीं भूलते।

आज भी सोचती हूं कि जिस लाहौर में कभी हिन्दुत्व की विजय-वैजयन्ती फहराती थी, जिसमें कभी देवतास्वरूप भाई परमानन्द और महात्मा हंसराज सरीखी विभूतियों ने देश-धर्म की रक्षार्थ आह्वानकर राष्ट्र जागरण का महायज्ञ-महान अनुष्ठान किया था। वही नगर अब पराया ही नहीं, 'विदेश' क्यों हो गया? क्यों उत्पन्न हुई थीं वे स्थितियां? कौन-सी थी हिन्दू समाज की दुर्बलताएं? इस जाति के पास जन-बल भी था और धन-बल भी——किन्तु फिर भी वैदिक धर्म के जयनाद से गुंजित होने वाली वह महानगरी वैदिक धर्मावलंबियों से सर्वथा शून्य क्यों हो गई? लाहौर ही नहीं, अपितु पुरुषपुर (पेशावर) तक का अंचल भी कभी हिन्दुस्तान ही था



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

अब पाकिस्तान क्यों कहा जाता है ? यह प्रश्न आज भी बना प्रश्न ही बना हुआ है। [illegible] सिर [illegible] रहे हैं। बार-बार मन में भावनाएँ [illegible] हैं। सोचती हूँ मैं ही नहीं अपितु अनेक विचारवान बन्धु-भगिनी भी मेरी तरह आज [illegible] हैं कि कहीं १९४७ में हुई मार-काट के बाद बचा-खुचा पंजाब भी हिन्दुस्तान का अंग रहेगा या पाकिस्तानियों के समान अब [illegible] की दुर्दशा वहां होगी।

लाहौर छोड़कर आने के बाद दिल्ली की देहरी पर जिसने [illegible] में ही [illegible] का नाम आगे बढ़ा और फिर [illegible] आशीर्वाद से यह [illegible] बना (पंडित [illegible]) जिनके [illegible] (पं० प्रकाशचन्द शुक्ल) ने [illegible] और [illegible] के लिए अपने जीवन का हर क्षण समर्पित करने का संकल्प लिया था जो सामाजिक क्रांति की अग्रदूत [illegible] (शिवावली जी) [illegible] जिसमें गुरुकुल में [illegible] धर्म की शिक्षा और वैदिक सिद्धांतों के लिए जीवन-होम देने का अधिकार [illegible] लिया था। इस प्रेरक व्यक्तित्व ने जीवन को नई राह दिखाई थी। उसी के [illegible] ने मुझे लाहौर में अपने मन में उठे [illegible] प्रश्न का उत्तर भी बताया। [illegible] पार करते हुए यह [illegible] और [illegible] कि [illegible] के लिए [illegible] हिन्दू-समाज [illegible] है, उसका एक प्रकार हिन्दू राष्ट्र के रूप में पुनःस्थापन ही [illegible] है। वह तो [illegible] मुझे अन्धकार में [illegible] राह [illegible] दिखाई दे गए, किन्तु मुझे आते-जाते भी इतना [illegible] कि अभाव, अविरोध और अपमानों तथा अपनों के भी [illegible] नहीं, अपितु राष्ट्र-[illegible] को [illegible] रखना। उस वरेण्य पुरुष ने मुझे बताया था कि संघर्ष ही जीवन है। हर पल हर पग पर संघर्ष ही वह [illegible] है जो मैं [illegible] रहा है। उनके गुरु ने [illegible] किया था कि देश [illegible] के साथ ही साथ हिन्दू-संगठन के लिए महायज्ञ में उसने अपनी [illegible] आहुति दी है, उसी में मेरे जीवन की भी हर श्वास समर्पित हो।

मेरी [illegible] है, मैं उस पथ पर बढ़ती हूँ। [illegible] मुकदमों की [illegible] में [illegible] पर बढ़ने को अग्रसर हूँ। अभाव चिरसंगी बन गए हैं। पग-पग पर अपने-परायों के द्वारा खड़े किए जाने वाले

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अवरोध मन को प्रकम्पित करने में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। लेकिन फिर भी मैं आगे बढ़ रही हूं। यथाशक्ति उस राष्ट्र को शक्तिशाली स्वरूप देने के लिए जूझ रही हूं। जिसका ऋण मुझ पर है। मुझे विश्वास है कि "जन-ज्ञान" के सहस्रों पाठक आज नहीं तो कल स्वकर्तव्य के प्रति जागरूक होंगे और मेरी इस राष्ट्र-रक्षा-यात्रा में सहयोगी बनेंगे। उनमें से जो प्रभु-कृपा से धन-सम्पन्न हैं वह अपनी पुण्य कमाई का कुछ अंश "जन-ज्ञान" को राष्ट्रवाद का प्रबल प्रहरी बनाने और इस 'पत्र' के माध्यम से सोई मानव जाति को जगाने के महात्मा वेदभिक्षु: के सपनों को साकार करने में मुझे योगदान देंगे तो जिन्हें प्रभु ने बौद्धिकता धन से सम्पन्न किया है, वे अपनी वाणी से हमारे अभियान को गतिमान करने में सहयोगी बनेंगे।

मैं आज अपनी जीवन-यात्रा का एक और पग पार करते हुए 'जन-ज्ञान' के सुधि पाठकवृन्द का आह्वान कर रही हूं कि आपका तन-मन और धन का कुछ न कुछ अंश तो दयानन्द संस्थान और 'जन-ज्ञान' के प्रचार-प्रसार और विस्तार में समर्पित होना ही चाहिए। आपका सहयोग मिलेगा तो आपदाओं से टकराने का मेरा साहस और बढ़ेगा। जो वयोवृद्ध हैं उनसे अपने अभियान की सफलता के लिए आशीर्वाद मांग रही हूं, तो समवयस्क बन्धु-भगिनियों के सक्रिय सहयोग के लिए झोली फैलाए खड़ी हूं। इस विश्वास के साथ कि आप निराश नहीं करेंगे। आप में से प्रत्येक यदि प्रति मास दस रुपए की अल्पराशि भी प्रदान करेगा तो वैदिक धर्म रक्षा का हमारा अभियान—जो आपका अपना भी है, गतिमान होगा। हम आप सबके भरोसे ही घर फूंक कर जीवन की सुख-सुविधाओं को त्याग कर इस पथ पर बढ़ रहे हैं। वैदिक धर्म के प्रति आस्था में आप में से कोई भी कमजोर नहीं है। आइये, मेरे साथ उच्चारण कीजिए—संगच्छध्वम (हम साथ-साथ चलें) आपका सहयोग मुझे हर चुनौती को झेलने का सबल प्रदान करता रहा है और करेगा भी। वेद प्रचार, हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य का घर-घर तक विस्तार और अजेय हिन्दू राष्ट्र का स्वप्न पूर्ण करने में आप हाथ बटाएं। मैं तो मात्र आप सबसे यही याचना करती हूं कि जिस जाति में हम जन्मे हैं, उसका हम पर जो ऋण है, उसे उतारने में आप दयानन्द-संस्थान और 'जन-ज्ञान' को आप आत्म-निर्भर बनाएंगे। पुनःश्चय इसी विश्वास के साथ कि मैं अकेली नहीं हूं अपितु, आप सब मेरी इस यात्रा के सहभागी हैं, क्योंकि आप भी तो मेरे समान ऐसे हिन्दुस्तान, ऐसे भारत के भव्य रूप के दर्शन करने को उत्कंठित हैं जो विश्व भर में अनीति, दुर्नीति और अन्याय के प्रचारकों



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

तथा प्रशासकों को यह चेतावनी देकर सद्मार्ग पर बढ़ने में समर्थ हो कि वो "आर्य वयम् मुसलिम: वयं वयं हिन्दवा" [illegible] के वैदिक उद्घोष को साकार कर सकें और किसी समय [illegible] अथवा [illegible] आगे और पूर्ण शक्ति-सहित करे यह उद्घोष -जय अखण्ड भारत जय हिन्दुस्तान,
जय-जय अपना राष्ट्र महान।

और जिसके [illegible] में आने के बाद [illegible] के किसी भी ओर-छोर में कोई भी हिन्दू की ओर वक्र दृष्टि नहीं [illegible] पवित्र स्वदेश के पल-पल में यह उद्घोष [illegible]—"वैदिक धर्म की जय, हिन्दू राष्ट्र की जय" और पंडित मदन मोहन मालवीय के शब्दों में हम इस महामंत्र को अपने जीवन का [illegible] संगीत बना सकेंगे।
जय [illegible] सब महान,
हिन्दू हिन्दी हिन्दुस्तान।

## कुम्भ में वोट : आप भी लें ओट!

कुम्भ पर पार्श्व [illegible] पहुंचे श्री देव दयानन्द थे। उन महायोगक के [illegible] कुरीतियों और [illegible] के विरुद्ध भरत का शंखनाद किया था। हमने भी [illegible] कि समाज के समस्त विद्यमान आदर्शों और [illegible] अपना दायित्व पूर्ण करें। अतएव दयानन्द संस्थान एवं हिन्दू रक्षा समिति के कार्यकर्ताओं की एक टोली के साथ हम भी कुम्भ पर्व में पहुंचे। हिन्दू [illegible] सो कार्य संस्थान और समिति अपने सीमित [illegible] से कर रही है, इसी क्रम को गतिमान करने के लिए हम यहां पहुंचे। [illegible] श्री अमरस्वामी वेद का पावन प्रचार भी हमारी इस योजना का [illegible]। हिन्दू रक्षक साहित्य का निःशुल्क प्रचार भी हमारा संकल्प था।

हम यहां दस और [illegible] एक माह तक रहे। हिन्दू समाज में मोक्ष प्राप्ति की जो आकांक्षा है, वह भी कुम्भ सरीखे पावन पर्व पर लाखों श्रद्धालु [illegible] के समागम का कारण बनती है। [illegible] सत्ता के प्रति

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

…न्दू मन में बद्धमूल आस्था के जहां-तहां विराट रूप में दर्शन हुए वहीं यह …य भी छिपा नहीं रह सका कि हिन्दू जन की आत्मकेन्द्रित मनःस्थिति भी …सके समक्ष विद्यमान संकटों का एक प्रमुख कारण है।

अपने संकल्प की पूर्ति के लिए हमने ट्रैक्ट एवं हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य …पुन संस्करण में मुद्रित किया कराया था। इस महत् कार्य में सहयोग के लिए …म्भ पर्व से पूर्व ही आपका द्वार भी खटखटाया था। अनेक बन्धु-भगिनियों … हमारे अनुरोध पर ध्यान दिया भी किंतु फिर भी जो कुछ मिला वह …गर में सरिता नहीं अपितु बिन्दु समान ही रहा। अतएव आपके संस्थान …र एक बोझ-सा आ पड़ा।

हमने लगभग एक लाख ट्रैक्ट तथा हजारों की संख्या में 'जन-ज्ञान' की …तियां कुम्भ मेले के अवसर पर वितरित किए। प्रायः सभी महामण्डलेश्वरों के शिविरों में हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य निःशुल्क पहुंचा तो सहस्रों श्रद्धालु नर-नारियों के हाथों में भी वह साहित्य पहुंचाया गया। इस प्रचार कार्य में …संस्थान और समिति के कार्यकर्ताओं ने जिस लगाव का परिचय दिया उससे मुझे नवोत्साह मिला और विश्वास भी बढ़ा। प्रो० धर्मवीर और राजीव भारद्वाज एवं हरीश कुमार तथा कैलाश सत्यार्थी आदि ने प्रचार कार्य में जिस उत्साह से योगदान दिया, वह सर्वथा सराहनीय था।

हमने जो कल्पनाएं की थीं वह पूर्णतः तो सफल नहीं हो पायीं, क्योंकि कुम्भ पर्व के विशेष स्नान के अवसर पर घटित हुई दुर्घटना के कारण लोगों में जिस भय भावना का सृजन हुआ, उसके कारण एक प्रकार से भगदड़-सी ही मच गई थी। इसका प्रभाव संस्थान की आर्थिक स्थिति पर भी पड़ा है। अपेक्षा के अनुरूप वेदादि साहित्य का विक्रय नहीं हो पाया। वो भी वेद के सैट के साथ इकहत्तर रुपए का साहित्य निःशुल्क देने की हम पूर्व घोषणा आप तथा बन्धु, भगिनियों के सहयोग का विश्वास लेकर कर ही चुके थे, उसे हमने पूर्ण भी किया। अब संस्थान पर जो संकट आया है, उसे अपने इस प्रिय प्रतिष्ठान को आपको ही अपना सहयोग का हाथ बढ़ाकर उबारना है। मैं सहयोग के इस आह्वान और 'जन-ज्ञान' के माध्यम से आपके द्वार पर उपस्थित हूँ। मुझे विश्वास है कि सदैव की भांति आप सहयोग का हाथ बढ़ाएंगे और वेद एवं हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य प्रचार अभियान को आगे बढ़ाएंगे।

ज्येष्ठ संवत् २०४३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कतिपय अनिवार्य आवश्यताओं के कारण हमें संस्थान का १५६७ हरध्यान सिंह मार्ग स्थित कार्यालय वेद मन्दिर, इब्राहीमपुर में स्थानान्तरित करना पड़ा था, परन्तु नगर से दूर होने के कारण अनुक असुविधाएं समक्ष आयीं, जिसके कारण हमें अपना कार्यालय पुनः नगर में ही २२८७, आर्य समाज रोड, करौल बाग, नई दिल्ली-५ में लाना पड़ा।

पुनश्च: आपसे पुनः अनुरोध है कि जहां हम अपने दायित्व को निभा रहे हैं, वहां आप भी अपने कर्तव्य को निभाएंगे और कम से कम हर पाठक परिवार से ५१) रु० तो अवश्य ही भेजकर समस्याओं से जूझती अपनी इस बहन की प्रार्थना को स्वीकार करें।

---

उत्सव समाचार

# वेद-मन्दिर में सावरकर श्रद्धांजलि समारोह

विगत २८ मई को "सावरकर जयन्ती" पर वेद मन्दिर में उन्हें स्मरणांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वातन्त्र संघर्ष के लिए स्वातन्त्र वीर सावरकर के अनन्य योगदान की चर्चा हुई। हिंदू रक्षा समिति की अध्यक्ष पंडिता राकेशरानी ने कहा—"सावरकर जी के स्वातन्त्र्य संघर्ष से भी अधिक उनका हिन्दू जागरण का कार्य हमारे लिए स्थायी प्रेरणा बना रहेगा। और उन्होंने कहा कि सावरकर पहले नेता थे जिन्होंने हिन्दू समाज के सैनीकरण पर बल दिया था। हिन्दू रक्षा समिति की अध्यक्ष के अनुसार सावरकर जी का स्पष्ट मत था कि श्रेष्ठ हिन्दुत्व ज्ञान के बावजूद हमारे पराभव का कारण हिन्दू समाज में सैन्य गुणों का अभाव रहा है। उनकी मान्यता थी कि श्रेष्ठ दर्शन के साथ ही हिन्दू समाज में तेजस्वी शक्ति और सैन्य गुणों का विकास करना समय की आवश्यकता है।"



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महाराणा प्रताप
१० जून को जिनका जन्म-दिवस है

# महाराणा प्रताप की प्रासंगिकता

—धर्मपाल शर्मा

महाराणा प्रताप का नाम आज पर्याय बन गया है। देशभक्ति, शौर्य, पराक्रम और राष्ट्र के लिए अनुपम उत्सर्ग का। आज जबकि देश में पृथकतावादी शक्तियों का बोलबाला है, सत्ता के लिए निम्नतम हथकंडे अपनाकर देश की एकता और अखंडता के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है, तब महाराणा का स्मरण यह सोचने को बाध्य करता है कि क्या राष्ट्रभक्ति के वे उदात्त गुण आज तिरोहित हो गए हैं?

भले ही मेवाड़ भारत का एक प्रादेशिक राज्य रहा है जिसके लिए महाराणा ने तिल-तिल संघर्ष किया किन्तु राष्ट्रीय सन्दर्भ में विचारणीय उनकी वह देशभक्ति और उत्सर्ग की भावना है जो आज के संकट में अभिप्रेत है। मुगलों ने जब सारे देश को पदाक्रान्त कर दिया था, विदेशी दासता के जुए तले सारा देश कराह रहा था, तब महाराणा के सम्मुख यही प्रश्न था कि वह उस मेवाड़ की रक्षा कैसे करें जो उस समय स्वतन्त्र राष्ट्र का एक-मात्र प्रतिमान बचा था और जिसमें भारतीय संस्कृति गुंजित, मुखरित और सुरक्षित थी। महाराणा की टक्कर थी विशाल मुगल सम्राट अकबर से जिसके पास विशाल सैन्यबल और धनसाधन थे और राणा के पास क्या था? केवल महान संकल्प, प्रखर देशभक्ति की पूंजी और मातृभूमि के लिए मर मिटने वाले रणबांकुरों की छोटी-सी जमात! लेकिन इसके बल पर ही वह मुगल सम्राट से टक्कर कैसे ले पाये? कैसे रक्षा कर पाए मेवाड़ के स्वाभिमान की? इन्हीं रहस्यों का अनावरण और इसी गौरवगाथा का स्मरण उनके जीवन की प्रासंगिकता है। महाराणा भले ही अकबर को पूर्णतया पराजित कर विशाल साम्राज्य स्थापित न कर पाये हों परन्तु वह आक्रमण



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की मनोवृत्ति को परास्त अवश्य कर पाए। भले ही वे समूचे देश पर राष्ट्रीय पताका न फहरा सके हों किन्तु उन्होंने हिन्दू जाति के हृदयों में विजय प्राप्ति की पताका अवश्य फहराई। महाराणा प्रताप की वही विजय गाथा भारतीय इतिहास की उज्ज्वल धरोहर है।

अपने चारों ओर की आपाधापी को देखें। थोड़ी-सी सुख-सुविधाओं, कार और बंगलों के लिए कितने लोगों ने अपने देश के साथ गद्दारी की है, यह स्मरण करने की आवश्यकता नहीं है। राष्ट्रीय सेवाओं के लिए पुरस्कृत सेनाधिकारियों तक ने चन्द ऐश्वर्य की खातिर देश के गोपनीय रहस्य शत्रुओं के हाथों बेच दिए थे। यह पिछले दिनों ही चर्चित हो चुका है और ऐसे लोग अपराधी भी ठहराए जा चुके हैं। यह भी जग-जाहिर है कि किस प्रकार कुछ देशद्रोही तत्व विदेशी धन की चमक-दमक के हाथों बिककर देश को बेच देने पर तुले हुए हैं। सत्ता के लिए किस प्रकार राष्ट्रविरोधी तत्वों को खुब खेलने की छूट दे दी जाती है, यह भी स्पष्ट देखने को मिलता है। ऐसी स्थिति में महाराणा प्रताप के उस त्याग का जरा स्मरण तो करें कि वे अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं करते। उनके बच्चे घास की रोटियां खाने को विवश होते हैं और उन्हें भी जंगली बिलाव छीन ले जाता है। महाराणा और उनकी पत्नी और बच्चे महलों में गद्दों पर नहीं सोते बल्कि वन की पथरीली चट्टानों पर सोते हैं और जब अपने बच्चों की इस दयनीय दशा उनसे देखी नहीं जाती, वे अकबर को संधि-पत्र लिखने के लिए लेखनी उठा लेते हैं तो उनकी पत्नी रणचन्डिका बनकर उन्हें ऐसा करने से रोक देती है। वह वीरांगना अपने और अपने बच्चों के सुख-वैभव की चिन्ता न कर उन्हें स्वदेश के लिए तिल-तिल कर मर मिटने के प्रेरित करती है। क्या प्रत्येक भारतीय वीरांगना से आज उसी त्याग की अपेक्षा नहीं है? महाराणा की साधना अकेली कहां थी, क्या उनकी पत्नी के बिना वह पूरी होती? अतः आज जब हम महाराणा की देशभक्ति का स्मरण करते हैं तो हमें यह भी स्मरण करना होगा कि उनकी पूरक वे देवियां भी बनें जो निजी सुख-सुविधाओं को महत्व न देकर राष्ट्र को सर्वोपरि समझें। यदि महाराणा की पत्नी जैसी देवियां इस देश में अवतरित हों तो क्या यह सम्भव होगा कि देश के साथ गद्दारी करने वाले लोग अथवा विदेशी धन के लिए बिकने वाले राष्ट्रद्रोही तत्व इस देश के आंगन में फलफूल सकें? सवाल महाराणा प्रताप, एक व्यक्ति का नहीं, आज उस प्रवृति का है जो घर-घर में उत्पन्न हो। यह प्रवृति है राष्ट्र के लिए अनुपम त्याग—अपनी सुख-सुविधाओं के



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बजाय राष्ट्र की अखंडता को वरीयता, परिवार के बजाय बहुजन हिताय को प्रमुखता, सत्ता के बजाय राष्ट्र के वैभव की कामना।

अतः आज के सन्दर्भ में यह कहना अप्रासांगिक न होगा कि महाराणा प्रताप का महत्व मुगल सम्राट अकबर के समय जितना था, आज उससे कहीं अधिक है, क्योंकि तब आक्रांता प्रत्यक्ष था, साकार था और आज साम्राज्यवादी आक्रमण हमें चारों ओर से घेर रहा है। धन-वैभव के द्वारा, घुसपैठ के रूप में, अन्तर्विग्रह और षड्यन्त्रों के रूप में और न जाने कितने ऐसे रूपों में जो इस देश को खोखला किये दे रहे हैं। अतः महाराणा प्रताप का नाम स्मरण करते हुए उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि प्रत्येक राष्ट्र भक्त प्रताप की राष्ट्र-भावना और चेतना को लोकमानस में जाग्रत करने के लिए स्वयं एक आंदोलन बनकर चल पड़ें। □

---

# रामराज्य की सार्थकता का स्मरण

नई दिल्ली। यहां संस्कार भारती के तत्वावधान में १६ मई को रामराज्याभिषेक समारोह मनाया गया। इस अवसर पर बम्बई के प्रसिद्ध गायक संगीतकार बन्धु शेखर कल्याण जी भी 'संगीत कार्यक्रम' प्रस्तुत करने के लिए पधारे थे।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डा० दशरथ ओझा ने कहा कि महात्मा गांधी की हत्या के बाद रामराज्य का उद्घोष साम्प्रदायिकता का प्रर्याय बना दिया गया था। उन्होंने आज के युग में इसकी उपयोगिता पर चर्चा चलाने का आह्वान किया। इस अवसर पर श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी ने श्रीराम के आदर्शों की चर्चा करते हुए आज उनकी महत्ती आवश्यकता बताई। संस्कार भारती के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण बंसल ने श्री रामराज्याभिषेक मनाने का उद्देश्य बताते हुए कहा कि इसका उद्देश्य रामराज्य के महान आदर्शों की कल्पना को ग्राम-ग्राम और जन-जन तक पहुंचाना है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू कहे तो मारिये मुसलमान वी ना।
पंच तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां॥
जगत् भिखारी फिरत है सबको दाता राम।
कहु नानक मन सिमर तिह पूरन होवहि काम॥
चिंता ताकी कीजिये जो अनहोनी होय।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहिं कोय॥
जो उपजियो सो विनस है मरो काल के गाल।
नानक हर गुन गाय ले छांड सकल जंजाल॥
राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार।
कह नानक थिर कछु नहिं सुपने जियुं संसार॥
झूठ बखान कहा करे जग सुहने जियुं जात।
इनमें कछु तेरो नहिं नानक कहियो बखान॥
विरथा कहो कोऊ सांचो निज मन की।
लोभ ग्रसयो दिस धावत आस लगयो धन की॥
संग सखा सब तज गये कोऊ न निबाहियो साथ।
कहु नानक एहु विपत में टेक एक रघुनाथ॥

—श्री गुरु नानक देव जी

जो हमको हरमेस उचरि है।
ते सब नरक कुंड महिं परि है॥

—दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज


# पंजाबी चंदू हलवाई करांचीवाला

प्रधान कार्यालय—१५८, बालकेश्वर मार्ग, तीनबत्ती, बम्बई-४००००६

१. जावेरी बाजार २. ग्रांट रोड ३. कोलाबा ४. दादरा टी० टी० ५. वरली नाका ६. सर्कल ७. ठाकुर द्वार ८. सूर्योदय स्टोर, चर्च गेट ९. घाटकोपर (पश्चिम) १०. लिंकिंग रोड, बांदरा ११. रेलवे स्टेशन के सामने सांताक्रुज (पश्चिम)।

कारखाना—'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रांट रोड बम्बई-४००००७


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# सीमावर्ती राज्यों से हिन्दुओं का निष्क्रमण—एक गम्भीर खतरा

—पंडिता राकेशरानी

विगत दिनों पंजाब के गुरुदासपुर और तरनतारन क्षेत्रों में हिन्दुओं के सामूहिक पलायन की शुरूआत ने एक भयंकर स्थिति को जन्म दिया है। पिछले छः वर्ष में उग्रवादी तत्त्वों ने अनेक षड्यंत्र किए जिससे किसी तरह हिन्दू और सिखों में सांप्रदायिक दंगे भड़क सकें और दोनों वर्गों में इतना जबर्दस्त तनाव हो कि पंजाब में आबादी की अदला-बदली की स्थिति आ जाए। उनका प्रयत्न और अभिलाषा थी कि हिन्दू लोग पंजाब छोड़कर चले जाएं और भारत के शेष भागों में बसे सिख पंजाब में लौट आएं। इस गणित के पीछे उनका चिंतन यह था कि इस प्रकार वह १९४७ में भारत-विभाजन के लिए घड़े गए मुस्लिम लीग के द्विराष्ट्रवाद सिद्धांत की मांग कर सकें और दुनिया के सामने कहें कि हिंदू और सिखों का एक साथ रहना कठिन है इसलिए भारत का एक और विभाजन होना चाहिए तथा खालिस्तान की मांग को तर्कसंगत बता सकें। किन्तु यह भी सत्य है कि अब तक उनके सांप्रदायिक दंगे भड़काने के सारे प्रयास विफल रहे। पर इस बार हिंदुओं को भगाने के लिए जिस प्रकार के प्रयास उग्रवादियों ने किए, उससे वे अपने षड्यंत्र में फिलहाल सफल होते दीख रहे हैं। उन्होंने अमृतसर के स्थानीय बाजार कृष्णा नगर में भी जिस तरह चुन-चुन कर हिन्दुओं की हत्या की और इससे पहले सिख दुकानदारों ने अपनी दुकानें बन्द कर दी थीं। उससे इस संदेह को बल मिलता है कि उग्रवादी अब दोनों वर्गों में विद्वेष उत्पन्न करने में भी सफल रहे हैं। यदि ऐसा न होता तो पड़ोसी सिख दुकानदार जिन्हें पहले ही इस हमले की सूचना मिल चुकी थी, अपने हिंदू दुकानदारों को सावधान जरूर कर देते किंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया और जानबूझकर हिंदू दुकानदारों को मरने दिया, जबकि इससे पहले दोनों वर्ग एक-दूसरे की रक्षा के लिए आगे आते रहे हैं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्ञातव्य है कि ठीक यही स्थिति सांप्रदायिक मुस्लिम संस्थाओं ने जम्मू कश्मीर राज्य में उत्पन्न करके रख दी है। सदियों से एक साथ रहने वाले हिन्दू-मुसलमानों में यहां भी वे योजनाबद्ध रूप से सांप्रदायिकता का जहर भर देने में सफल सिद्ध हुए हैं। जम्मू-कश्मीर से हिंदुओं का पलायन जारी हो गया है। इस सीमावर्ती राज्य में भी हिन्दुओं के लिए गम्भीर चुनौती बन गई है।

कैसी विडम्बना है कि पाकिस्तान, बंगला देश और श्रीलंका जैसे पड़ोसी देशों से तो हिन्दुओं को भगाया ही जा रहा है, अब अपने देश के सीमावर्ती राज्यों से भी हिन्दुओं का निष्क्रमण शुरू हो गया है। उधर पूर्वी राज्यों में पहले ही ईसाई षड्यंत्रों के कारण हिन्दुओं पर संकट घिरा है।

अनेक वर्षों से असम में भी मुस्लिम घुसपैठ के कारण हिन्दुओं का अस्तित्व संकट में पड़ता जा रहा था किन्तु असम के छात्रों की दूरदर्शिता के कारण इस समस्या से निपटा जा सका और असम में ऐसे राष्ट्रविरोधी तत्वों पर काबू पाया जा सका। आवश्यकता इस बात की है कि सीमावर्ती राज्यों में और देश भर में राष्ट्रवादी तत्व इन षड्यंत्रों के प्रति सजग हों और हिन्दुओं के निष्क्रमण को रोकने के साथ ही साथ ऐसे पृथकतावादी तत्वों से स्वयं आगे बढ़कर टक्कर लें जो यह घिनौना राष्ट्रविरोधी खेल खेल रहे हैं।

राष्ट्रवादी जनता यदि इस समय मूकदर्शक बनकर सरकार के भरोसे बैठी रही तो इतिहास हमें क्षमा नहीं करेगा। राष्ट्र किसी की बपौती नहीं है और यह भी स्मरणीय है कि इस देश की आजादी के लिए सत्ताधारियों ने ही नहीं बल्कि लाखों देशभक्तों ने खून बहाया है। अतः राष्ट्र की अखंडता की रक्षा करना भी हम सबका दायित्व है।

केन्द्रीय सरकार से भी हमारा अनुरोध है कि वह इस सच्चाई को पहचाने कि जिन क्षेत्रों में राष्ट्रवादी हिंदुओं का बहुमत कम होता है और वे देश की मुख्यधारा से कट जाते हैं। पाकिस्तान और बंगला देश का निर्माण हमारे सामने है। पूर्वोत्तर के राज्यों में उठते हुए पृथकता के स्वर भी इसके साक्षी हैं और अब पंजाब और जम्मू-कश्मीर में भी यही खेल खेला जा रहा है।

ऐसी स्थिति में केन्द्र सरकार के कर्णधारों से यह अपेक्षा है कि वह तुष्टीकरण की नीति बन्द करके कठोरता से ऐसे तत्वों को कुचलें। अल्पसंख्यकों



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के अधिकारों के नाम पर उन्हें देशद्रोही की छूट नहीं दी जा सकती। सरकार को चाहिए कि वह हिंदुओं का मनोबल बढ़ाने के लिए उन्हें सीमावर्ती क्षेत्रों में हथियार दें। यदि सरकार-स्वयं उनकी रक्षा करने में समर्थ नहीं तो उन्हें आत्मरक्षा के लिए साधन तो प्रदान करना ही चाहिए।

---

# पंजाब से लौटे हिन्दुओं की व्यथा-कथा

(जन-ज्ञान-प्रतिनिधि की नई दिल्ली में बातचीत)

'जन-ज्ञान' प्रतिनिधि ने पंजाब से पलायन कर दिल्ली के आर्य समाज मन्दिर मार्ग पर ठहरे कुछ परिवारों से बातचीत कर बताया कि पंजाब में ये परिवार ऐसी असुरक्षा की स्थिति में जी रहे थे कि एक-एक पल उनके लिए यातना-भरा था। वहां हिन्दू परिवारों की चुन-चुन कर हत्या की जा रही है। परिणामस्वरूप इन्हें पंजाब से अपनी सारी संपत्ति और व्यापार छोड़कर यहां आना पड़ा है। पीड़ित हिन्दुओं ने बताया कि पंजाब की स्थिति को देखकर ऐसा लगता है मानो वहां कोई सरकार है ही नहीं। इन भुक्तभोगियों ने बताया कि वहां किसी की हुकूमत है तो वह केवल उग्रवादियों की ही है और स्थानीय पुलिस उग्रवादियों की पुलिस प्रतीत होती है।

इन पीड़ितों बन्धुओं ने बताया कि हिन्दुओं को खुलेआम घरबार और कारोबार छोड़कर भाग जाने की चेतावनियां दी जा रही हैं और पुलिस तथा प्रशासन मूकदर्शक बना देखता रहता है।

ऐसी स्थिति में इन लोगों ने पंजाब छोड़ा है जो स्वाभाविक था। हालांकि इन्होंने अपनी चल और अचल सम्पत्ति, नौकरी आदि की परवाह न करते हुए पंजाब तो छोड़ दिया, लेकिन अब इनके बच्चों की शिक्षा और इन्हें देश में कहीं बसने की सुविधा की चिन्ता खाए जा रही है। क्या देश के 'लोकप्रिय' प्रधानमन्त्री इस ओर ध्यान देंगे।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू रक्षा समिति की अध्यक्षा पंडिता राकेशरानी द्वारा २५ मई १९८६ को नई दिल्ली में दिया गया वक्तव्य

विगत कुछ दिनों से पंजाब में आतंकवादियों द्वारा चुन-चुन कर हिन्दुओं की हत्या के कारण बड़े पैमाने पर वहां से हिन्दुओं का पलायन शुरू हो गया है। देश के इस सीमावर्ती राज्य से राष्ट्रीय समूह का इस तरह पलायन गम्भीर चिन्ता का विषय है। एक सुनियोजित साजिश के अन्तर्गत आतंकवादी इस क्षेत्र से हिन्दुओं को भगाकर खालिस्तान के तर्क को सार्थक करने में लग गए हैं। देश की पृथकता का यह ऐसा षड्यंत्र है जिसे बहुत गम्भीरता से लिया जाना चाहिए।

विगत छः वर्ष से सिख आतंकवादी अनेक हथकन्डों के द्वारा भी साम्प्रदायिक दंगे भड़काकर पंजाब से हिन्दुओं के निष्क्रमण में सफल नहीं हुए थे किन्तु अब पहली बार व्यापक नरसंहार के द्वारा वे ऐसा करने में सफल हो रहे हैं। यदि भारत सरकार ने कठोर कदम उठाकर इस सीमावर्ती राज्य से हिन्दुओं का पलायन न रोका तो व्यावहारिक रूप से खालिस्तान का स्वप्न साकार हो जाएगा।

ऐसी स्थिति सभी राष्ट्रीय दलों और केन्द्रीय सरकार का यह दायित्व है कि कठोरतम उपायों द्वारा हिन्दुओं के पलायन को रोका जाए।

यह समाधान का विषय है कि प्रधानमन्त्री ने बाबू जगजीवनराम की अध्यक्षता में पंजाब की स्थिति के आंकलन के लिए एक राष्ट्रीय समिति का गठन किया है। समय की मांग है कि एक भी क्षण गंवाए बिना तुरन्त कार्यवाही द्वारा आतंकवादियों का उन्मूलन किया जाए।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# इतिहास के साथ सरकारी छल

—आचार्य किशोरीदास वाजपेयी

यह लेख, जिसका संक्षिप्त रूप यहां प्रस्तुत है, आज से ३६ वर्ष पूर्व लिखा गया था, लेकिन उसकी प्रासंगिकता आज भी उतनी ही है, जितनी ३६ वर्ष पूर्व थी, कारण इतिहास के साथ सरकारी छल आज भी चल रहा है। इतना ही नहीं, उसकी मात्रा कई गुना और बढ़ गई है।

भारत की राष्ट्रीय सरकार राष्ट्र का एक इतिहास लिखवा रही है। जब वह इतिहास बन जाएगा और प्रकाशित हो जाएगा तब सम्पूर्ण राष्ट्र उससे प्रभावित होगा। इसीलिए तो सरकार का यह महोद्योग है। स्कूल-कालेजों में पढ़ाए जाने वाले आगे सभी इतिहास इसी 'राष्ट्रीय इतिहास' के आधार पर बनाए जाएंगे।

प्रत्येक शासक अपनी भावनाओं के आधार पर और अपने विचारों के अनुसार, अपने देश के इतिहास को ढालने का प्रयास करता है। इससे उसे अपने काम में बल मिलता है। धारा उसी ओर बहने लगती है।

हमें आशा करनी चाहिए कि हमारी भावनाएं उस इतिहास में अवश्य प्रतिफलित होंगी, जो शिक्षा मन्त्री मौलाना अबुल कलाम आजाद के आदेश और डाक्टर ताराचन्द साहब के निर्देशानुसार तैयार हो रहा है।

## इतिहास की भाषा अंग्रेजी

राष्ट्रीय सरकार राष्ट्रीय इतिहास को राष्ट्रीय भाषा (हिंदी) में न लिखवाकर अंग्रेजी में लिखवा रही है। इसका कारण हमारी सरकार की



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रगतिशीलता है। संसार की सभी सरकारें अपनी राष्ट्रभाषा को महत्व देती हैं। वे अपने राष्ट्र का इतिहास अन्य किसी भाषा में लिखवाने या बना... के बारे में सोच भी नहीं सकतीं। इंग्लैंड, अमरीका जैसे दकियानूसी देशों की बात तो जाने दीजिए, रूस जैसे कम्युनिस्ट देशों ने भी अपनी भाषा की कूपमंडूकता नहीं छोड़ी।

ऐसी स्थिति में हमारी राष्ट्रीय सरकार ने एक अन्तरराष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी को वस्तुतः अन्तरराष्ट्रीय रूप प्रदान किया है। कारण, जो अन्य देश अंग्रेजी को अन्तरराष्ट्रीय कार्यों में वरतते हैं, वे भी अपने राष्ट्र के भीतर विशेषतः राष्ट्रीय महत्व रखने वाले विषयों में अपनी राष्ट्रभाषा ही काम में लाते हैं।

## 'विश्वबंधुत्व' और 'अन्तरराष्ट्रीयता' का उच्च 'आदर्श'

किन्तु (हमारा सरकार के अनुसार) ये सब मूर्खता की बातें हैं। ए... राष्ट्रभाषा और एक अन्तरराष्ट्रीय भाषा का झमेला ठीक नहीं है। सम... संसार की एक ही भाषा होनी चाहिए और यह पद अंग्रेजी को ही मि... सकता है। हां जरूरत हो, तो प्रत्येक राष्ट्र अपनी एक राष्ट्रीय भाषा म... सकता है यदि बहुत दबाव पड़े तो। परन्तु तो भी, किसी प्रगतिशील सरक... का यह काम नहीं कि जनता का खयाल करके 'विश्व-बन्धुत्व' और 'अन्त... राष्ट्रीयता' का 'उच्च आदर्श' भुला दे। इसीलिए, हमारी सरकार ने राष्... इतिहास अंग्रेजी में लिखना शुरू किया है। इसके लिए, अवश्य ही हम... सरकार को अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त होगी। हां, हिन्दी आदि भाषाओं... उस प्रामाणिक इतिहास का प्रामणिक अनुवाद करा दिया जाएगा, ... संविधान का करा दिया गया।

यह तो हुई भाषा की बात, अब आइये तत्व पर, जो उस भाषा में ... जाएगा। कैसा इतिहास होगा, इसका आभास हम आपको दे सकते ... पंडित नेहरू ने दो बातों पर सदा जोर दिया है—अन्तरराष्ट्रीयता पर ... भारतीय इतिहास पर। इतिहास में आपकी रुचि भी है और कई ग्रन्थ ... आपने लिखे हैं। मेरा अनुमान है, नेहरू जी के इन इतिहास-ग्रन्थों ... अनुमान वह राष्ट्रीय इतिहास करेगा, जो बन रहा है। मुख्य बात ... की है। राष्ट्र में एकता स्थापित करने की चिन्ता है। इतिहास में शि...



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और महाराणा प्रताप के कार्य बहुत उलझन पैदा करते हैं। उनके कुछ कामों को पढ़कर मुसलमानों के दिल दुखते हैं। इसलिए, अब से दस-पन्द्रह वर्ष पूर्व, महात्मा गांधी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं से 'भूषण ग्रन्थावली' निकलवा दी थी। उन्होंने कहा, मुसलमान इसे बुरा मानते हैं। अंग्रेजों ने 'पहाड़ी चूहा' कहकर शिवाजी की उपेक्षा की थी, जो ठीक नहीं है। हमारे राष्ट्रीय नेता यही चाहते हैं कि उनके उन कामों का (जिन्हें मुसलमान बुरा मानते हैं) डंका न पीटा जाए। वैसे वे उनका आदर करते हैं।

## इतिहास का 'सत्य'

परन्तु, स्थिति तो इतिहासकार प्रकट करता ही है। 'भारत की खोज' में नेहरू जी ने अकबर को 'राष्ट्र-निर्माता' बताया है, जो उसकी बहुत अधिक प्रशंसा है। क्षत्रिय राजाओं की लड़कियों से विवाह करके उसने 'राष्ट्रीय एकता' की सुदृढ़ नींव रखी थी। किन्तु देश का दुर्भाग्य कि उस नींव पर उस समय राष्ट्रीय प्रासाद खड़ा न हो सका। पं० भगीरथ प्रसाद दीक्षित के शब्दों में—"गोस्वामी तुलसीदास की रामायण ने उस महारंभ को एकदम विफल कर दिया।" अब वह समय आ गया है कि हम अपने राष्ट्र-निर्माता' का यह अधूरा काम पूरा करें। इसलिए हमें इतिहास को राष्ट्रीय रंग में रंगना होगा। सो, यह महत्वपूर्ण कार्य शुरू हो गया है।

नेहरू जी ने शिवाजी को 'पहाड़ी चूहा' तो नहीं कहा, पर एक नया शब्द चलाया—'ले-भग्गू'। लिखा है, औरंगजेब के समय इधर-उधर गड़बड़ शुरू हुई, और फलतः जहां-तहां कुछ 'ले-भग्गू' लोग पैदा हो गए। इसके आगे शिवाजी का उल्लेख है। माना शिवाजी और छत्रसाल जैसे 'ले-भग्गुओं' से उस समय की राष्ट्रीय सरकार को तंग होना पड़ा था। इन लोगों का इसी रूप में राष्ट्रीय इतिहास में उल्लेख होगा।

'भारत की खोज' में महाराणा प्रताप के लिए भी आधा पृष्ठ दिया गया है। लिखा है कि वे अपनी बात पर अन्त तक अड़े रहे। तो इस तरह, संक्षेप में और उचित शब्दों में इन झगड़ालू लोगों का कुछ निर्देश हो जाए तो कुछ बुराई नहीं। इससे इतिहास की राष्ट्रीयता नहीं मारी जाती। परन्तु उनके कामों का धुआंधार वर्णन तो राष्ट्रीय इतिहास को भ्रष्ट कर देगा।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तब तो लोग उसे राष्ट्रीय सरकार का बनवाया इतिहास न समझकर 'जन संघ' या 'हिन्दू महासभा' का बनवाया समझ लेंगे।

हमें प्रसन्नता है कि हमारी सरकार से ऐसी भूल न होगी, क्योंकि उसने पहले से ही शिक्षा-विभाग विशुद्ध राष्ट्रीय तत्वों के सुपुर्द किया गया है।

---

## श्रीलंकावासी हिन्दू तमिलों की सुध लो

महोदय,

श्रीलंका से यों तो आजकल प्राय: प्रतिदिन ही दिल दहलाने वाले समाचार आते रहते हैं, लेकिन पिछले दिनों जो समाचार आया, उससे हिन्दू धर्म से प्रेम करने वाले हर हिन्दू को मर्मान्तक पीड़ा होगी। समाचार यह है कि अपनी जान बचाने के उद्देश्य से अनेक श्रीलंकावासी तमिल हिन्दू धर्म का परित्याग कर मुसलमान बन रहे हैं।

यह हकीकत किसी से छिपी नहीं कि श्रीलंका की सेना लंकावासी तमिलों का नरसंहार करने में जुटी है। इस नरसंहार की आग में झुलसने से बचने के लिए अनेक हिन्दू तमिल इस्लाम की शरण में जा रहे हैं। श्रीलंका सरकार की शह पर, श्रीलंका के धर्मान्ध मुस्लिम नेता भी खाड़ी देशों से प्राप्त धन-राशि के बल पर ऐसे कायर हिन्दुओं को मुसलमान बनाकर उनका विवाह तुरन्त मुसलमान लड़कियों से कर देते हैं, ताकि ये नए-नए बने मुसलमानों द्वारा हिन्दू बनने की कल्पना भी न कर सकें।

निरंकुशता का सामना करने वाले प्राय: सभी तमिल हिन्दू ही हैं। श्रीलंका के मुस्लिम नेता इन सबको धीरे-धीरे मुसलमान बनाने की कोशिश में लगे हैं। उन्हें अभी तक कितनी सफलता मिली है, इसका अनुमान 'आर्गेनाइजर' के ९ और १६ फरवरी १९८६ के अंकों में प्रकाशित समाचारों से लगाया जा सकता है कि "दिसम्बर १९८४ में त्रिनकोमातो जिले के १९ परिवारों के १०० हिन्दुओं को अपना धर्म छोड़कर इस्लाम धर्म अंगीकार



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किया। इस सामूहिक धर्म-परिवर्तन के तुरन्त बाद तरुण-तरुणियों का विवाह मुसलमान तरुण-तरुणियों से कर दिया गया ताकि श्रीलंका में शांति स्थापित करने की अवस्था में भी वे पुनः हिन्दू न बन सकें। कहा जाता है कि इस धर्म-परिवर्तन के लिए आवश्यक धन-राशि साउदी अरब के मुसलमानों ने भेजी थी।"

इस समय श्रीलंका की जनसंख्या हिन्दुओं और मुसलमानों का प्रतिशत क्रमशः १५.६४ और ७.६४ है। यदि असहाय तमिल हिन्दुओं के विवशतावश मुसलमान बनने की प्रवृत्ति पर वहां के हिन्दुओं द्वारा तुरन्त अंकुश न लगाया गया तो यह प्रतिशत बदल भी सकता है और लंकावासी हिन्दुओं के अस्तित्व के लिए गम्भीर खतरा उत्पन्न कर सकता।

—सदाजीवतलाल (बम्बई)

---

## क्या पोप मूलतः हिन्दू हैं?

प्रिय सम्पादक महोदय,

प्रख्यात हिन्दू विद्वान् श्री पी० एन० ओक के मतानुसार हाल ही में भारत की यात्रा पर आये पोप जॉन पाल द्वितीय मूलतः हिन्दू हैं और जिस उच्च धार्मिक पद पर वे आसीन हैं, उसे ध्यान में रखते हुए उन्हें 'यूरोप का शंकराचार्य' कहा जा सकता है। यह मत कि ताजमहल मूलतः एक हिन्दू महल था, श्री ओक ने ही सर्वप्रथम प्रतिष्ठापित किया था। तब उनकी मान्यता का लोगों ने विरोध किया था, लेकिन आज प्रमुख पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने भी प्रयोगों के आधार पर इस मान्यता की पुष्टि की है।

श्री ओक के मतानुसार 'पोप' शब्द संस्कृत के 'पापः' शब्द से निकला है, जिसके अर्थ हैं—वह व्यक्ति जो पाप-रहित है। तथा 'वेटिकन' शब्द का उद्गम श्री ओक के मतानुसार संस्कृत के 'वाटिका' शब्द से, जो हिन्दू ऋषियों-सन्तों के आश्रम-स्थल का परिचायक है, हुआ है। रोम, जहां पोप



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निकास करते हैं, 'राम' शब्द से उपजा है। आगे श्री ओक कहते हैं—"चर्चि तलाक, गर्भपात, सेवक आदि विषयों पर पोप के मत प्राचीन हिन्दू ऋषियों के मतों से काफी मिलते हैं, इसलिए इस बारे में कोई संदेह नहीं रह जाता कि पोप मूलत: हिन्दू ही थे और उनकी परम्परा का जन्म हिन्दू परम्परा से ही हुआ था।"

कान्स्टेनटाइन नामक एक आततायी व्यक्ति ने, जिसके नाम का मूल उसी के समान अत्याचारी राजा 'कंस दैत्यन्' के नाम में पाया जा सकता है, सन् ३१२ में हिन्दू पोप को बलात् ईसाई बनाया और उनकी वाटिका को भ्रष्ट किया। यह कहना है श्री ओक का, जो आगे कहते हैं—"क्रिश्चियेनिटी (ईसाई-धर्म) स्वयं 'कृष्ण-नीति' का ही अपभ्रंश है। उन्होंने इस विषय पर एक विचारोत्तेजक पुस्तक भी लिखी है।

आज हमें भले ही श्री ओक की उपरोक्त मान्यताएं दूरारूढ़ कल्पना प्रतीत हों, लेकिन इसमें कतई सन्देह नहीं कि उनमें प्रामाणिकता के बीज मौजूद हैं और एक न एक दिन इतिहास-लेखकों और विद्वानों को उन्हें स्वीकृत करने को बाध्य होना ही पड़ेगा।

सदाजीवतलाल

प्रधान : श्री आदर्श रामलीला समिति,

२१।२३, धनजी स्ट्रीट, बम्बई-४०००

---

## चुटकुले

पिता ने अपनी बेटी से कहा—"अरी मुन्नी, अपनी गुड़िया की शादी में हमें ले जाएगी न।"

इस पर मुन्नी ने तपाक से जवाब दिया—"ना ना आपने तो मुझे मम्मी की शादी में याद तक नहीं किया।

× × ×

अध्यापक : छात्र: ! वदत आम्राणि कस्मिन् काले चषितुं लभ्यन्ते ?
छात्र : यदा माली उद्याने न भवति।

---



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# धूप एक दवा है!

□ किरण अरोड़ा

आज सौर और ऊर्जा के उपयोग के लिए विश्वभर में हो रहे प्रयोगों ने सूर्य की शक्ति की तो निस्संदेह पुष्टि कर ही दी है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि सूर्य एक बहुत अच्छा डाक्टर भी है? जी हाँ! चौंकिए मत, 'सूर्य किरण-चिकित्सा' के माध्यम से हर तरह के रोग का इलाज भी किया जा सकता है। सूर्य की किरणों में बहुत से शक्तिशाली तत्व हैं, जिनमें बहुत सारे गुण भी हैं। अब अगर हमारे शरीर में किसी तत्व की कमी के कारण कोई रोग हुआ है और हम सूर्य की किरणों के द्वारा उस तत्व को अपने अन्दर ग्रहण करें, तो निस्सदेह उस रोग का इलाज किया जा सकता है। यही है सूर्यकिरण-चिकित्सा, जिसका दिल्ली के डाक्टर द्वारकानाथ नारंग पिछले ५३ सालों से सफल प्रयोग कर रहे हैं और इसके माध्यम से अनेक दुसाध्य रोगों का उपचार करने में सफल भी हुए हैं।

हमारे देश में प्राचीन काल से सूर्य की पूजा होती रही है। सूर्य के बिना जीवन असम्भव है। इसीलिए सूर्य को जीवनदायी मानते हुए भगवान की संज्ञा भी दी गई है। सूर्य की महानता के बारे में हमारे वेदों, उपनिषदों आदि में अनेक श्लोक हैं। ऋग्वेद में सूर्य की महिमा के बारे में लिखा गया है "सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुपश्च" अर्थात सूर्य चर और अचर विश्व सभी की आत्मा तथा उनके रक्षक हैं। "आरोग्यं भास्करादिच्छेत" अर्थात् सूर्य आरोग्य प्रदान करते हैं। यानी आरोग्य की कामना सूर्य से करनी चाहिए।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सूर्य की किरणों में अत्यन्त ही परिष्कृत रसायन पाये जाते हैं, जिन्हें पृथ्वी का हर तत्व अपने गुण के अनुकूल ग्रहण कर लेता है। यही कारण है कि विभिन्न तरह की जड़ी-बूटियों में अलग-अलग तरह के रसायन पाये जाते हैं, जो अपने गुणों के अनुसार उपयोग में आते हैं, जीवन में तत्व का स्रोत भी सूर्य ही है। अब कल्पना की जा सकती है, जिस सूर्य की किरणों में इतनी शक्ति है, उनका यदि मानव अपनी आवश्यकता के अनुसार प्रयोग करे, तो वह कितना प्रभावी हो सकता है!

## हर रोग का उपचार

डा० द्वारकानाथ नारंग ने सूर्य की किरणों की इसी शक्ति का उपयोग विभिन्न रंगों के माध्यम से सफलतापूर्वक किया है और इस विधि को नाम दिया है सूर्य-किरण चिकित्सा। डा० नारंग १९३० से इस प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली का उपयोग कर रहे हैं। १९२९ में लन्दन के प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान से प्राकृतिक चिकित्सा का डिप्लोमा प्राप्त करने के बाद उन्होंने इस चिकित्सा प्रणाली का उपयोग शुरू कर दिया और अपने ५ साल के अनुभव के आधार पर उनका दावा है कि यह प्रणाली हर तरह के रोग का उपचार करने में समर्थ है। इतना ही नहीं इसके माध्यम से उन्होंने गैंगरीन, हृदयरोग, रक्तचाप, मधुमेह, मुंह का लकवा आदि बीमारियों का सफल इलाज भी किया है।

डा० नारंग के अनुसार हर रंग में अपना एक गुण होता है। जैसे—लाल रंग का गुण गर्मी पहुंचाने वाला और नीले रंग का ठंडक और आराम पहुंचाने वाला है। प्रमुख रंग सात होते हैं—लाल, पीला, नारंगी, नीला, हरा, जामुनी और सफेद। लेकिन प्राथमिक रंग तीन ही होते हैं—लाल, नीला और पीला। बाकी सभी रंग इन्हीं रंगों का मिश्रण होते हैं। डा० नारंग के अनुसार लाल, पीला और नारंगी रंग गर्मी और उत्तेजना पहुंचाने वाले गुण रखते हैं। नीला और जामुनी ठंडक और राहत पहुंचाने वाला होता है और हरा रंग इनके बीच का अर्थात तटस्थ प्रकृति का होता है। अधिक गर्मी हो तो वह उसे संतुलित करता है और सर्दी हो तो उसे भी। हरा रंग खून को साफ करने वाला सबसे प्रमुख माध्यम है। अब सवाल यह है कि अगर सूर्य की शक्तिशाली किरणों का इन रंगों से सम्मिश्रण कर प्रयोग किया जाए तो ये कितनी असरदार हो सकती हैं। इसी सिद्धांत पर अमल



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करते हुए डा० नारंग ने सूर्यकिरण रंग-चिकित्सा (क्रोमोथेरेपी) का प्रयोग किया।

आज के भागदौड़-भरे और व्यस्त जीवन में मानव के पास समय का अभाव भी काफी विकट समस्या हो गई है। इसलिए डा० नारंग ने इन रंगों और सूर्यकिरणों के सम्मिश्रण का अत्यन्त आसान तरीका निकाला है।

डा० नारंग के अनुसार अगर शरीर में अधिक सर्दी हो जाए तो इसके लिए गर्म तत्वों अर्थात् लाल रंग की जरूरत है, जिससे सर्दी को भगाया जा सके। इसके लिए आपको ज्यादा तकलीफ करने की जरूरत नहीं है, बस लाल रंग की एक बोतल में पानी भर कर उसे ६ घन्टे या लगभग तीन दिन सूर्य की किरणों के सामने रख दीजिए। तीन दिन बाद यह पानी अब मात्र पानी न रहकर सूर्यकिरणों से 'चार्ज' होकर एक दवा बन चुका है। अब आप इसका इस्तेमाल दवा के रूप में बाकायदा नियमित खुराक के रूप में कर सकते हैं।

इसी प्रकार अगर शरीर में अधिक सर्दी की जरूरत है, तो नीले रंग की बोतल में पानी भरकर धूप में रख दीजिए। तीन दिन बाद यह सर्दी की औषधि का रूप ले चुका होगा। पानी चूंकि हर वक्त अपने पास रखना आसान नहीं है, अतः उसके बजाए आप चीनी भी काम में ले सकते हैं। अगर लाल रंग के गुणों की आवश्यकता है, तो लाल रंग की शीशी में चीनी डालकर उसे धूप में रख दें। फर्क इतना ही है कि चीनी को 'चार्ज' होने में एक पखवाड़े से महीना भर लगेगा। तैयार दवा हर रोज एक बार अच्छी तरह हिला लेनी चाहिए, जिससे अन्दर के कणों तक सूर्य की रोशनी पहुंच सके।

## रंगीन शीशियों का असरदार तेल

इसके अलावा डा० नारंग ने तेल को भी 'चार्ज' करने का सफल प्रयोग किया है। उसे भी औषधि के रूप में तैयार होने में एक पखवाड़े से महीना भर लगता है। तेल कोई भी हो अर्थात सरसों, नारियल या तिल का 'चार्ज' होने के बाद उसमें औषधि के गुण आ जाते हैं। यह तेल सिर-दर्द मिटाने में भी उतना ही प्रभावी है, जितना कान का दर्द दूर करने में। दिल्ली की



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक महिला जो मियादी बुखार के बाद बहरेपन की शिकार हो गई थीं, उसका बहरापन इसी प्रकार के तेल से दूर हुआ था। इतना ही नहीं चोट-घाव, फोड़े-फुंसी आदि के इलाज में भी यह तेल उतना ही असरदार है, जितना कोई ऐलोपैथिक मलहम।

मजे की बात है कि सूर्यकिरण-चिकित्सा का डा० नारंग के रोगियों और प्रशिक्षार्थियों ने अपने जानवरों पर भी प्रयोग किया और इसमें उन्हें सफलता मिली। एक सज्जन के कुत्ते को चोट लग गई तो उन्होंने नीले रंग की शीशी में 'चार्ज' किया हुआ तेल उसके घाव पर लगाया और दूसरे ही दिन वह चंगा हो गया।

डा० नारंग से इस चिकित्सा-प्रणाली की शिक्षा लेकर उनके विदेशी शिष्य अपने देशों में जाकर इसका सफल प्रयोग कर रहे हैं। डा० नारंग ने १९८० में बार्सीलोना (स्पेन) में प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया था, उसमें जर्मनी कनाडा और यूरोप से प्रशिक्षार्थी आए थे। अब वे अपने-अपने देश में इस चिकित्सा-विधि का सफल प्रयोग कर रहे हैं। यह विडंबना ही कही जायेगी कि भारत जैसे गरीब देश में ऐसी सर्वसुलभ चिकित्सा-प्रणाली को प्रोत्साहित करने की दिशा में सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया है।

डा० नारंग दिल्ली के साउथ एवेन्यु स्थित जवाहरलाल युवक केन्द्र और लाजपत भवन में सप्ताह में एक-एक दिन उपचार व प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करते हैं। उनका कहना है कि मात्र १२ से १५ कक्षाओं के बाद कोई भी व्यक्ति इस चिकित्सा-विधि का घर बैठे सफल उपयोग कर सकता है।

डा० नारंग ने रांची मेडिकल कालेज के एक डा० के पिता का भी डायबिटीज और गेंगरीन का इस विधि से सफलतापूर्वक इलाज किया है। इसके अतिरिक्त कंजेक्टिवाइटिस, मोतियाबिंदु, अल्सर जैसी बीमारियों का भी इलाज इस चिकित्सा से सम्भव है।

डा० नारंग के अनुसार इस चिकित्सा विधि को प्रचलन में लाने के पीछे तीन उद्देश्य हैं। पहला तो यह है कि आज अन्य चिकित्सा प्रणालियां इतनी महंगी हैं कि वे सर्वसुलभ नहीं हो पातीं। अतः एक ऐसी उपचार पद्धति की जरूरत है, जो सस्ती और सर्वसुलभ हो। दूसरा, सूर्यकिरणों में दवाइयों क



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भरपूर भण्डार है जिसे हमें प्रकृति से बिना मूल्य ले सकते हैं। तीसरा, प्राचीनकाल में माताएं घर पर ही इलाज कर लेती थीं। आज की भांति उन्हें छोटी-छोटी बीमारियों के लिए डाक्टरों के पास नहीं भागना पड़ता था। सूर्यकिरण चिकित्सा के उपयोग से घर पर ही इलाज करने की परंपरा पुनः स्थापित की जा सकती है।

डा० नारंग का कहना है कि अगर हमें सन् २००० तक सबके लिए स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने का लक्ष्य प्राप्त करना है, तो वह ऐसी ही किसी आसान और सस्ती चिकित्सा प्रणाली से सम्भव हो सकेगा। आज जबकि आए दिन पत्र-पत्रिकाओं में नकली और जहरीली दवाओं से लोगों के मरने और बीमार होने के समाचार मिलते हैं तब तो इस तरह की प्राकृतिक और शुद्ध चिकित्सा प्रणाली की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। फिर इस तरह की चिकित्सा प्रणाली का प्रचलन बढ़ाकर सरकार बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उस जाल को तोड़ने में भी कामयाब हो सकती जो आज दवा उद्योग को जकड़े हुए हैं।

डा० द्वारकानाथ नारंग का पता :
२५, पी० मद्रास होटल
ब्लाक कनाट सर्कस, नई दिल्ली-१

---

**केवल इक्कीस रुपए दक्षिणा देकर**
**जन-ज्ञान में अपना वैवाहिक**
**विज्ञापन प्रकाशित करवायें।**

---



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# विदेशी धरती से पनपा है खालिस्तान का नारा!

—प्रो० शेरसिंह
(भूतपूर्व केन्द्रीय राज्यमन्त्री)

ब्रिटिस सरकार ने आतंकवादियों के तथाकथित खालिस्तान और उसकी 'सरकार' को मान्यता देने से इनकार भले ही कर दिया हो, परन्तु यह बात किसी से छिपी नहीं कि खालिस्तान के शोशे का जन्म और पोषण ब्रिटेन के लोगों ने ही किया है। खालिस्तान का जिन्न (भूत) तो एक योजना के तहत भारत को निशाना बनाकर ब्रिटेन के कुछ तथाकथित बुद्धजीवियों ने खड़ा करवाया था। यह पैशाचिक पुतला आक्सफोर्ड विश्व-विद्यालय में गढ़ा गया था और पहली बार खालिस्तान की मांग आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के तुलनात्मक धर्मों के प्राध्यापक कपूर सिंह द्वारा उठवाई गई थी। विश्व सिख संगठन (वर्ल्ड सिख आर्गेनाइजेशन) की स्थापना भी लन्दन विश्वविद्यालय के स्नातक नरेन्द्र सिंह कपानी ने की थी। १९७० के बाद तो विदेशों के मानव विज्ञान के अनेक पंडितों ने पंजाब में रुचि ली और वे सभी विद्वान् आज जगजीत सिंह चोहान, गंगासिंह ढिल्लों तथा दीदारसिंह बैंस से जुड़े हुए हैं। आज खालिस्तान की राष्ट्रीय परिषद के सदस्यों में से अनेक विदेशी हैं। उनमें से निम्नलिखित मुख्य हैं—

१. लंदन सामाजिक अनुसंधान संस्थान के निदेशक रिचार्ड होजर २. 'एल्ली लिल्ली' स्थायी निधि के पूर्व अध्यक्ष लैंडर्म वोटिंग, ३. लन्दन विश्वविद्यालय के प्राच्य विद्या अध्ययन केन्द्र के क्राइस्टोफर शैकल ४. ससैक्स विश्वविद्यालय के विकास शिक्षण संस्थान के पीठर एडाकडेल (वित्त सलाहकार), ५. सिख प्रतिष्ठान के परामर्शदाता कैलफोर्निया विश्व-विद्यालय के मार्क ज्यूरंगसयमाइयर, ६. अमरीकन, जिसने सिख धर्म अपनाया—राल्फ सिंह।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## विदेशी साजिश के प्रमाण

अमरीका के एफ० बी० आई० संगठन के द्वारा पूर्ण रूप से प्रशिक्षित लगभग २० आतंकवादियों को पिछले वर्ष भारत में सरका दिया गया था। दिल्ली में ट्रांजिस्टर बमों का घृणित कार्य उन्हीं लोगों द्वारा किया गया माना जा रहा है। बब्बर खालसा, दल खालसा, दशमेश रेजिमेंट, सिख विद्यार्थी संघ आदि के नवयुवकों को प्रशिक्षण दक्षिण अफ्रीका के जोहनान वेण्डरहार्स्ट् द्वारा ब्रिटिश कोलम्बिया के एक शिविर में दिया गया था। इसी शिविर में कनिष्क के अपहरणकर्ताओं का प्रशिक्षण हुआ था। इस्राइल के भयानक संगठन मौसाद का भी इसमें हाथ बताया जाता है। दशमेश रेजिमेंट के लोगों ने फ्रैंक कैम्पर के साथ मिलकर भारत के परमाणु बिजली घरों में तोड़-फोड़ की योजना भी बनाई थी।

आतंकवादियों को बढ़ावा देने, प्रशिक्षित करने, हथियार उपलब्ध कराने तथा अन्य सब प्रकार की सहायता देने का जो काम पाकिस्तान करता रहा है, वह पूरी तरह प्रमाणित हो चुका है। पाकिस्तान में किन स्थानों पर शिविरों में किन के द्वारा आतंकवादियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है, यह जानकारी अब भारत सरकार के पास है। हथियार बंगला देश से भी आते रहे हैं, इसके प्रमाण अब प्राप्त होने लगे हैं। पंजा साहिब में जाने वाले सिख यात्रियों के मन-मस्तिष्क पर साम्प्रदायिकता तथा भारत विरोधी रंग चढ़ाने के लिए अलगाववादी संगठनों द्वारा मंच से प्रचार करवाया जाता है, यह सर्वविदित है। अलगाववादियों द्वारा यह भी दावा किया जा रहा है कि अमेरिका, कैनेडा और इंग्लैंड के सब गुरुद्वारों पर इण्टर नेशनल सिख यूथ फेडरेशन का कब्जा हो चुका है और उन पर खालिस्तानी झण्डे फहरा रहे हैं तथा लन्दन में खालिस्तान का मुख्यालय स्थापित हो चुका है। ईक्वेडोर में उसके मुख्यालय द्वारा प्रमाणित तथा सहायता प्राप्त लोगों के बसाने का दावा भी किया जा रहा है।

## आतंकवादियों की कटती जड़ें

स्पष्ट है कि अमेरिका और उसके अनुचर भारत को अस्थिर करने और सम्भव हो सके तो तोड़ने में लगे हैं। जब नरमपंथी अकालियों ने भिंडर वाला के अनुयायियों के साथ मिलकर तथाकथित धर्मयुद्ध चलाया, तब





Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नरमपंथी भी अलग काम, अलग पर्सनल लॉ तथा संविधान को जलाने पर उतर आए। आम सिख अलगाववाद की लहर में बह-सा गया। स्वर्ण मन्दिर को छावनी में बदलने और खालिस्तान का अड्डा बनाए जाने के बाद जब भारत सरकार को मजबूर होकर 'सैनिक कार्रवाई करनी पड़ी, तब सिख जनता ने सब कुकर्म करने वाले देश-द्रोहियों को तो शहीद मान लिया और राष्ट्र की एकता के लिए उठाए गए अपरिहार्य कदम को सिखों पर आक्रमण कहा। तब ऐसा लगा कि आम सिख उल्टी लहर में बह गया है। उस समय आम सिख की मनोदशा क्या थी, इसका अन्दाजा पंजाब के एक विश्व-विद्यालय के राजनीति शास्त्र के वरिष्ठ अध्यापक के वक्तव्य से लगाया जा सकता है, जिसमें उसने कहा था कि भिंडरवाला तो मर ही नहीं सकता, वह तो अमर है और सिखों की मुक्ति के लिए उपयुक्त समय पर मैदान में उतर आएगा। दूसरी ओर आम भारतवासी की मनोदशा ऐसी हो गई थी कि जब एक दिन हवाई जहाज में पेटी बांधने के संकेत के बाद एक सिख सज्जन अनायास ही अपने स्थान से उठ खड़े हुए तो यात्री घबरा गए और उन्हें लगा कि वह सज्जन विमान के अपहरण (हाईजैकिंग) के लिए उठा है।

पिछले दिनों में स्थिति बहुत बदली है। आज न तो आम सिख आतंकवादियों को सिखों का मुक्तिदाता समझता है और न आम भारतीय सिख को आतंकवादी या (हाईजैकर) समझता है। आज अधिकतर सिख यह मानने लगे हैं कि ये आतंकवादी लूटमार करने वाले लोग, विदेशी शक्तियों के भाड़े के एजेन्ट हैं, और उनसे पैसे, हथियार और प्रशिक्षण प्राप्त करके उनका ही खेल खेल रहे हैं, उनका सिख पंथ और उसकी उन्नति से कोई लेना-देना नहीं है। वे सिखों का नाम लेकर जो कुछ भी कहते और करते हैं, वह भी अपने अभिभावकों के इशारे पर करते हैं ताकि साम्प्रदायिक दंगे भड़क सकें और भारत में बेचैनी और वैमनस्य फैल सके। जनसाधारण में अब सांप्रदायिक तनाव की बजाय सद्भाव बढ़ रहा है और राष्ट्र की एकता के लिए सब एकजुट हो रहे हैं।

## हताशा का दौर

पंथिक कमेटी की तथाकथित खालिस्तान की स्थापना और उसकी सरकार के गठन की घोषणा के पश्चात् स्वर्ण मन्दिर में पुलिस और अर्द्ध सैनिक संगठनों के प्रवेश और राष्ट्रद्रोहियों की गिरफ्तारी का सभी सिख



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संगठनों तथा सभी राजनीतिक दलों द्वारा समर्थन और स्वागत किया गया है। यह इस बात का प्रमाण है कि देश का बच्चा-बच्चा अपने देश की एकता की सुरक्षा के लिए एकजुट है।

सिख विद्यार्थी संघ, दमदमी टकसाल और संयुक्त अकाल दल आपस में लड़ते-लड़ते अकस्मात पंथिक कमेटी, खालिस्तान और उसकी सरकार व राजधानी तक की घोषणा कैसे कर गए, यह अभी पूरी तरह किसी की भी समझ में शायद न आ सका हो। प्रत्यक्ष प्रमाण तो किसी के पास शायद ही हों, अनुमान ही लगाया जा सकता है। पंजाब पुलिस के महानिदेशक रिबेरियो की यह घोषणा कि आतंकवादियों की भी 'हिटलिस्ट' बनेगी और उनका पूरी तरह सफाया किया जाएगा तथा पाकिस्तान की सीमाओं को सील कर देना, आतंकवादियों को बहुत भारी पड़ा। अकाली नेताओं और मन्त्रियों तक से तस्करों और आतंकवादियों के गठजोड़ का भंडाफोड़ होने पर रिबेरियो का दो टूक फैसला सहन करने का आतंकवादियों का हौंसला हिल गया। वे घबरा गए और बौखला गए। किश्तों में सबका सफाया होने की संभावना ने उनके मनोबल को हिला दिया। इसीलिए शायद उन्होंने एक बार पूरी शक्ति लगाकर कुछ कर गुजरने की सोची होगी। उधर लीबिया के मामले को लेकर संयुक्त राष्ट्रसंघ में अमरीका के प्रतिनिधि श्री वाल्टर ने भारत को धमकी दी कि यदि भारत अपने आतंकवादियों की समस्या सुलझाने में अमरीका की मदद चाहे तो वह लीबिया के मामले में अमरीका का साथ दे। भारत तो उसकी शर्त मान ही नहीं सकता, इसलिए अमरीका ने हरी झन्डी ही नहीं, कुछ साधन देने का भी वायदा किया हो तो आश्चर्य नहीं। अमरीका के अनुचर तो उसके हुक्म के इन्तजार में खड़े ही रहते हैं। इसलिए पाकिस्तान भी सक्रिय हो गया।

भारत ने इस घोषणा को केवल शोशा नहीं समझा और इसे गंभीरता से लेकर जो देशद्रोही हाथ लग सके उन्हें पकड़ लिया। जिस चीज का कहीं अस्तित्व नहीं उसकी मान्यता का क्या अर्थ रह जाता है? ब्रिटेन ने निरर्थक समझकर ही खालिस्तान को मान्यता नहीं दी है और अन्य राष्ट्र भी ऐसा ही करेंगे, इसमें कोई सन्देह नहीं।

इस सारे मामले में रहस्यमय बात एक ही रह जाती है कि पंथिक कमेटी के पांचों सदस्य कैसे और किसकी मदद से खिसक गए? इसमें जरूर पुलिस





Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और कुछ अकाली नेताओं का हाथ है। यह सबकी जुबान पर है। भारत की एकता और अखंडता पर इतना बड़ा वार होने के बाद ऐसे लोगों का पता लगाना और उनके साथ न्यायोचित व्यवहार करना बहुत आवश्यक हो गया है।

## हल क्या है?

आतंकवादियों को सब कुछ (पैसा, हथियार, प्रशिक्षण आदि) अमरीका, इंग्लैंड, पाकिस्तान आदि से मिल ही रहा है और वह मिलता ही रहेगा, जब तक भारत अन्तरराष्ट्रीय मंच पर अमरीका साम्राज्यवादी तथा धौंसपट्टी की नीतियों का समर्थन न करे। भारत यह कभी नहीं करेगा। इसलिए अमरीका, पाकिस्तान आदि भारत को अस्थिर करने तथा विभाजित करने का खेल खेलते रहेंगे। यह खेल काफी हद तक नाकाम किया जा सकता है यदि आतंकवादियों को पंजाब की ग्रामीण जनता से पूरी तरह काट दिया जाए और पंजाब की पुलिस में उनके समर्थक न रहें। कुछ अकाली नेताओं तथा मन्त्रिमण्डल के सदस्यों ने अपना त्यागपत्र देकर देशद्रोही के घृणित मामले को मजहबी मुलम्मा पहनाने की कोशिश की है। वे लोग बात तो आज भी देश की एकता की कर रहे हैं परन्तु साथ दे रहे हैं देशद्रोहियों का। यह अनुमान लगाना कठिन नहीं कि पंथिक कमेटी के सदस्यों और अन्य आतंकवादियों को सिखाने का काम इन लोगों की प्रेरणा और सहायता से ही हुआ होगा। बरनाला और उनके साथी आतंकवादी गतिविधियों के दबाव में भारत सरकार से अपनी अनुचित मांगें मनवा लेना चाहते हैं। एक तरफ तो बरनाला साहब कहते हैं कि विदेशी शक्तियां भारत को अस्थिर करने के लिए भाड़े के लोगों से काम करवा रही हैं और कोई सिख उनके साथ नहीं है, दूसरी तरफ यह भी कहने से नहीं चूकते कि ये सब काम अकालियों की मांगें न मानने के कारण हो रहे हैं। जब तक वे आतंकवाद को अपनी मांगों से जोड़ते रहेंगे, तब तक आतंकवादियों के प्रति उनका रवैया मधुर बना रहेगा और आतंकवाद चलता रहेगा। □

---

**भारत उनका जो भारत के। विदेशी षड्यंत्रकारियों को देश से निकाला जाए।**

---



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# भारत पाक समझौते के न दिखायी देने वाले खतरे

—सदाजीवत लाल

"दक्षिण पाकिस्तान में हिन्दू मन्दिर पर हमला।"

"भारतीय जवानों ने सीमा के भारतीय भाग पर जबरन कब्जा करने वाले पाकिस्तानी हमलावरों को खदेड़ा।"

"पाकिस्तान के विदेश-मंत्री ने सीनेट को बताया कि कश्मीर प्रश्न और सिद्धान्तों के मामलों में भारत के साथ संबंधों के समान्यीकरण के बारे पाकिस्तान कोई समझौता नहीं करेगा।"

"पाकिस्तान सिख आतंकवादियों को प्रशिक्षण दे रहा है।"

"पाकिस्तान भारत के अन्दरूनी मामलों में दखलन्दाजी न करे।" भारत की पाकिस्तान को चेतावनी।

आजकल ऐसी सुर्खियां समाचारपत्रों में आम हो गई हैं, इतनी आम हो गयी है कि अब लोगों ने उनकी ओर ध्यान देना भी बंद कर दिया है। लेकिन, वे सुर्खियां जिन घटनाओं को उजागार करती हैं, वे भारत-पाक सम्बन्धों के सामान्यकरण में गंभीर बाधाएं पेश कर रही हैं।

पाकिस्तान की हठधर्मी ने इस विषय में कितना खतरनाक रूप धारण कर लिया है, इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है विदेश मंत्री बलिराम भगत और प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी दोनों ने अपनी-अपनी पाकिस्तान की यात्राएं स्थगित कर दी हैं। ऐसे पड़ौसी देश से कौन मैत्री-वार्ता करना चाहेगा, जो अपने देश में आतंकवादियों को तोड़-फोड करने और छिप कर हत्या करने का प्रशिक्षण देने के अलावा, उन्हें आर्थिक तथा अस्त्र-शस्त्र सम्बन्धी सहायता भी देता हो। भारत सरकार के गुप्तचर विभाग को प्राप्त सूचनाओं के अनुसार, पाक सेना के एक उच्चाधिकारी ने एक ऐसी योजना तैयार की है, जिसका उद्देश्य पंजाब में अराजकता फैलाकर बाद में सारे राज्य को पाक सेना के आक्रमण द्वारा पाकिस्तान के अधीन करने का है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वित्तमंत्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह की हाल की पाकिस्तान-यात्रा बाद लगता था, दोनों देश पारस्परिक सम्बन्धों के सामान्यीकरण के हैं, लेकिन इसके बाद घटी घटनाओं ने पाकिस्तान के असली इरादे बेनकाब कर दिया है और अब भारत के इस समझौते के न दिखायी वाले खतरे दिखायी देने लगे हैं।

## रूस में हिन्दुत्व की बढ़ती हुई लोकप्रियता

आम तौर पर यह समझा जाता है कि रूस में स्वतंत्रतापूर्वक और सोचने की मनाही है। ऐसा भी माना जाता है कि रूसी लोग सरकार द्वारा दिये गये समाचारों और मतों पर ही विश्वास करते हैं अपनी मर्जी से कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं और इस कारण चिन्तन काफी हद तक सीमित और संकुचित है।

लेकिन, यदि रूस में हिन्दुत्व की निरन्तर बढ़ती हुई लोकप्रियता बारीकी से अध्ययन किया जाए तो यह अपेक्षाकृत अनजान तथ्य सामने कर आता है कि औसत रूसी नागरिक न केवल प्राचीन भारतीय संस्कृति विभिन्न पक्षों से सुपरिचित हैं, वरन प्राचीन भारतीय साहित्य की श्रेष्ठ कृतियों का उनके रूसी अनुवादों के माध्यम से रसास्वादन भी रहते हैं।

प्राचीन भारतीय साहित्य के श्रेष्ठतम कृतियों के रूसी अनुवादों प्रकाशन का क्रम अठारहवीं सदी के अंत में आरम्भ हुआ था। इस सबसे महत्वपूर्ण योगदान प्रोफेसर आय. टी. मिनायाव का रहा, संस्कृत की सर्वोत्तम कृतियों का एक परिचायत्मक ग्रंथ रूसी भाषा में इस महत्वपूर्ण ग्रन्थों में उन्होंने वेदों, रामायण, महाभारत, पंचतंत्र हितो संस्कृत के कथा-साहित्य तथा नाटकों का सार और उनकी समीक्षा की थी।

आज के रूस में रामायण और महाभारत दोनों ही अत्यन्त लो हैं। दोनों का मंचन भी प्रायः होता रहता है। दोनों के रूसी अनुवा चाव से लाखों रूसियों द्वारा पढ़े जाते हैं। इन दोनों काव्यों पर आ नाटकों के रूसी कलाकार कई बार भारत आ चुके हैं, और यहां स्वयं उन्हीं के शब्दों में "हमने अनुभव किया कि हम उन श्रीराम


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

र पांडवों की लीला भूमि के कितने निकट हैं, जिन्हें हम रंगमंच पर ार करने का प्रयास करते रहते हैं।

और अब दो रूसी वेदज्ञों की कृपा से रूसियों को वेदों के कुछ चुने हुए ों की दिव्यता और मधुरता की अनुभूति करने का सौभाग्य भी प्राप्त है। तिखोनिरोव तथा तात्यान एलिजारेमकोवा द्वारा संकलित तथा दित वैदिक ऋचाओं के इस सकलन का नाम है—'दा उशलीशात मेन्या नलिया आई नेबो' (ओ पृथ्वी तथा आकाश ! मुझे सुनो।) इस ग्रन्थ में न, इन्द्र, सोम, सूर्य, वरुण, ममता, विष्णु तथा विश्वदेवों की स्तुति में गयी ऋचाओं के अनुवाद संकलित हैं। □

# रंग और व्यंग

एक महाशय संस्कृत, हिन्दी या व्रजभाषा के अलावा किसी जबान का शब्द भी नहीं बोलते थे। कड़ा नियम था उनका। एक बार किसी से चीत के दौरान बन्दूक का प्रसंग आ गया। आपने बन्दूक चलाने का न यूं किया—

"लौह-नलिका में श्याम चूर्ण प्रवेश करिकै अग्नि दीनी तो भड़ाम शब्द ।

पहला—"हमारी बीमा कम्पनी लेन-देन का काम बड़ी द्रुत गति से ती है। आज कोई आदमी मरे तो उसके बीमे की रकम अगले दिन सुबह उसकी पत्नी को दे दी जाती है।"

दूसरा—"बस इतना ही ! हमारे यहां काम इससे भी तेज रफ्तार से ता है। हमारे दफ्तर की चौथी मंजिल से अगर कोई बीमाधारी गिर तो दूसरी मंजिल से गुजरते वक्त ही, जहां हमारा पेमेण्ट डिपार्टमेण्ट है, चैक थमा दिया जाता है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# अश्लील लेखन और अश्लील चित्र

—बिहारील

पाकिस्तान की ६ कट्टर संस्थाओं ने पाकिस्तानी समाचार महिलाओं के चित्र बिलकुल प्रकाशित न करने की जो मांग उस पर हम भले ही हंस कर रह जायें, लेकिन इसमें कोई संदेह हम भारतीयों के लिए अपने तथाकथित लोकप्रिय तथा घरेलू प्रकाशित महिलाओं के कामोत्तेजक चित्रों के प्रकाशन पर रोक ला आवाज बुलन्द करने का समय आ गया है। किसी फिलम में कोई सं अश्लील दृश्य हो तो लोग जमीन, आसमान सर पर उठा लेते हैं, सें के सदस्यों को भ्रष्टाचारी और न जाने क्या-क्या ठहराते हैं, लेकि अपने को मध्य और सुसंस्कृत कहने वाले यही लोग समाचारपत्रों और में वैसी ही अश्लील और सैक्सी दृश्य देखकर भी चुप बैठे रहते हैं, तो में नहीं आता कि उनकी बुद्धि पर रोया जाये या हंसा जाये।

पिछले वर्ष, दुर्गा-पूजा के अवसर पर, कलकत्ता के एक दैनि एक पाठक का पत्र प्रकाशित हुआ था, जिसमें उसने एक पंडाल माता को एक 'बिकनी' में देखा था। ऐसे अनेक पोस्टर खुले आम पर देखे जा सकते हैं, जिनमे देवी-देवताओं को और नारी को बड़े ही और उत्तेजक रूप में पेश किया जाता है, मगर उनके खिलाफ श कोई आवाज उठाता हो।

'नेशनल काउन्सिल ऑफ एप्लाइड एकोनोमिक रिसर्च' नामक बधाई की पात्र है कि उसने अश्लील साहित्य और कामुक चित्रों में पर प्रतिबंध लगाने के बारे में आवाज उठायी है। मगर, हम यह भ हैं कि अश्लीलता के बारे में अभी तक हमारे देश में जो कानून बा इतने लचर, निष्प्रभावी और पेचीदा हैं कि उनकी पकड़ में शायद व्यक्ति आ पाया हो। पहली जरूरत तो यह है कि अश्लीलता के एक स्पष्ट और कारगर कानून बने, जो इतना अचूक और प्रभावी कला के नाम पर लोगों की यौन-भावना को उभारने की कोशिश क कोई भी व्यक्ति उसकी पहुंच से बाहर न जा सके। फिर जरूर ईमानदार और सेवा-भावी अधिकारियों की, जो उस पर बेखौफ सकें।


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# महाकवि भारवि का कौन कृतज्ञ नहीं है ?

□ अलका जोशी

संस्कृत के प्रसिद्ध महाकाव्य "किरातार्जुनियम्" के यशस्वी प्रणेता श्री भारवि प्रारम्भ में अत्यन्त दरिद्र थे। उनकी पत्नी बराबर ताने कसा करती—"बाज आई ऐसे कवित्व और पांडित्य से ! घर में खाने को दाना नहीं, अंग ढकने को पर्याप्त वस्त्र नहीं, छप्पर से पानी टपक रहा है और आप हैं कि काव्य अलापे जा रहे हैं ! इससे तो अच्छा यही होता कि आप कविता न रचकर राजा के यहाँ कोई नौकरी कर लेते। सुनती हूं कि अपने महाराज बड़े उदार हैं, पंडितों और ब्राह्मणों को भरपूर सम्मान और सम्पत्ति दिया करते हैं। वहीं जाकर भाग्य आजमाओ न ! निरन्तर अभाव की तीव्र ज्वाला अब तो सहन-सीमा के परे हो गई है।"

भारवि चुपचाप पत्नी के मुख की ओर देखते रहे—तेल के अभाव में बिखरे हुए अलक-बाल, राहुग्रस्त चन्द्रमा-सी झुलसी हुई मुख-कांति, सूखे हुए बिम्वफल के छिलके-से निष्प्राण अधर, मरणासन्न हरिणी-सी निस्पन्द आंखें तथा पैबन्दों से भरे रहने पर भी शतधा जीर्ण साड़ी ! सहसा कवि की भाव प्रवण आंखें सजल हो गयीं। उन्होंने आकाश की ओर देखते हुए कातर कंठ से कहा—"जाऊंगा, आज ही महाराज के दरबार में जाऊंगा। दरिद्र के लिए आत्माभिमान कहां ?"

इतना कहकर कवि ने फटे हुए अंगोछे का मौलिवस्त्र (पाग) बनाया, अधोवस्त्र (धोती) का आधा हिस्सा फाड़कर उत्तरीय बनाया तथा विवाह-



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
कालमें स्वसुर द्वारा प्रदत्त ... (नीली रेखा) के
खण्ड में अपनी प्राणोपम काव्य सम्पदा-तालपत्रों को समेटकर घर से
पड़े। पत्नी सजल नेत्र हो देखती रही। एक बार उसने सोचा कि
कवि को रोक ले और कहे—"साथ ही रहकर भूखों मर लेंगे, तुम इस
दीन-वेश में मत जाओ।" किन्तु अवश पांव आगे बढ़ नहीं पाए।

दोपहर का सूर्य अपनी समस्त प्रचंडता के साथ आकाश में त
था। कवि के पांव लड़खड़ा रहे थे, सारा शरीर स्वेद से लथपथ था,
एक पग भी चलना दूभर हो रहा था। सामने एक सरोवर देख, वहीं
में विश्राम करने लगे। सरोवर में कमल खिले हुए थे—कवि हः
क्षण के लिए उन विकसित पुष्पों को देख आत्मविभोर हो गया, सा
अवसाद भूल गया। कवि ने सोचा—"इस समय के ये प्रफुल्ल कमल
सारी रात सम्पुटित रहते हैं, चन्द्रमा भी अमृतदायिनी किरणों से
होकर अपनी आन तो नहीं तोड़ते—और बारह घन्टों की कठिन तप
के बाद ये फिर फूलते हैं, फिर सम्पुटित होते हैं। इनके छोटे-से जी
में भी दुःख-सुख का अवर्तन अपना क्रम नहीं तोड़ता और न ही ये
विधान के सामने अपनी पराजय स्वीकार करते हैं। फिर मैं मनु
इतनी जल्दी क्यों ऊब रहा हूं?

जब एक बार संकल्प ले चुका हूँ कि बिना बुलाए राजदरबार
जाऊंगा, तो आज यह मैं क्या करने चला हूं। नहीं, बिना विचारे
कार्य कर रहा हूँ, यह अशोभन है।"

उन्हें अपने महाकाव्य (किरातार्जुनियम्) के उस दृढ़ संकल्पी
की याद आई, जिसने द्रोपदी के हजार तानों के बाद भी अपना
नहीं छोड़ा, संकल्प विमुख हो गुप्तवास के पूर्व कौरवों से लड़ाई की
नहीं सोची। तत्क्षण उन्होंने एक कमलपत्र पर नुकीले पत्थर के टुक
श्लोक लिखा—

> सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्
> वृणुते ही विमृष्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदाः॥

—कोई काम सहसा नहीं करना चाहिए। अविवेक ही तो
विपत्तियों का कारण है। सोच-विचार कर कार्य करने वाले के पा
स्वयं चली आती हैं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खड़े होकर उन्होंने देखा तो स्वयं महाराज आखेट के वेश में घोड़े पर चले आ रहे हैं। कवि वहां से तुरन्त हट गए।

महाराज भी थके-मांदे सरोवर के तीर पर विश्राम करने उतरे। वहां पर उन्होंने कमलपत्र पर लिखे उस श्लोक को पढ़ा— बहुत अच्छा लगा। उन्होंने कमलपत्र को उठा लिया और अपने साथ लेते गए। वहां जाकर उन्होंने श्लोक को सोने के अक्षरों में खुदवाकर शयनकक्ष में टांग दिया।

कुछ दिनों के बाद महाराज फिर आखेट में गए। प्रायः वे छह-सात दिनों में आखेट से वापस आया करते थे, पर इस बार वर्षाकाल आरम्भ होने से जल्दी ही लौट आए। रात्रि का समय था, अतः वे सीधे अन्तःपुर के अपने शयनकक्ष में पहुंचे। वहाँ उन्हें यह देखकर बहुत क्रोध आया कि महारानी के पास ही एक युवक सोया हुआ है। उन्होंने सोचा कि झट से इन दोनों को तलवार के एक ही वार में समाप्त कर दूं। और यह सोचकर उन्होंने जैसे ही तलवार म्यान से बाहर खींची कि वह दीवार पर किसी वस्तु से छू गई। ऊपर देखा, तो वही श्लोक था, जो बड़े-बड़े स्वर्णाक्षरों में टंगा हुआ था। क्षणभर जड़वत् अपलक वे उस श्लोक को पढ़ते रहे। अचानक चेहरे की आक्रोश रेखाएं शिथिल पड़ गयीं और तलवार हाथ से छूटकर नीचे गिर पड़ी। बड़े धैर्य के साथ उन्होंने महारानी तथा उस युवक को जगाया। युवक ने जागते ही महाराज का चरण स्पर्श किया। महारानी ने बताया —"यही है अपना राजकुमार, जिसे शैशव में ही एक दासी चुराकर ले गई थी। इतने वर्षों के बाद आज फिर हमारे अनुचरों ने इसे ढूंढ़ निकाला है।"

महाराज ने दूसरे ही दिन उस श्लोक के रचियता की खोज के लिए राज्यभर में दूत भेजे। इस श्लोक की वजह से ही वे अपने एकमात्र उत्तराधिकारी की हत्या करते-करते बचे थे।

दो-तीन दिनों के बाद एक दूत ने बताया—"महाराज! उन कवि का पता तो चला, पर वे यहां आने को तैयार नहीं हैं।

महाराज स्वयं तीन लाख स्वर्ण मुद्राएं लेकर भारवि के भग्न कुटीर पर उपस्थित हुए और सम्मान के साथ उन्हें "महाकवि" की उपाधि से विभूषित किया। □



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बांटिए

| | |
|---|---|
| १. चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की | ६० |
| २. भारत के मुसलमानों का क्या करें ? —वेदभिक्षु: | ६० |
| ३. हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु: | ६० |
| ४. मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर | ५ |
| ५. हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर | ६० |
| ६. पोस्टर—दो प्रकार के | १)२० |
| ७. इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी | ६० |
| ८. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी | ६० |
| ९. हिन्दू जागो ! देश बचाओ ! | ६० |
| १०. इस्लाम—एक परिचय | ६० |
| ११. Bible in the Balance | १ |
| १२. A Challenge to the Christian Faith | ३० |
| १३. पोप की सेना का भारत पर हमला —वेदभिक्षु: | ६० |
| १४. पादरियों को चुनौती | ६० |
| १५. बाइबिल को चुनौती—ओम्प्रकाश त्यागी | ६० |
| १६. क्या ईसा खुदा का बेटा था ! | ६० |
| १७. …और पादरी भाग गया | ६० |
| १८. Christianity Unmasked | १ |
| १९. The Clarion Call | ६० |
| २०. जन-ज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक | ६ |
| २१. हमने इस्लाम क्यों छोड़ा? | ६० |
| २२. क्या भारत का एक और विभाजन होगा ? | ६० |
| २३. तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ? | ६० |
| २४. हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा | ६० |

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

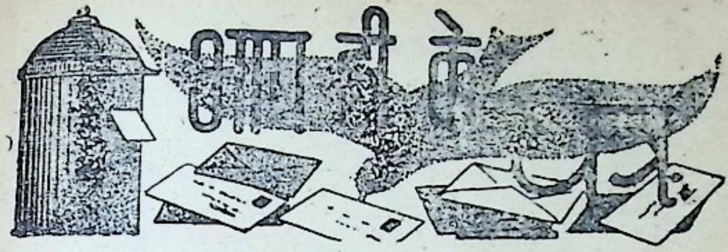

प्रिय बहिन

राकेश रानी,

सादर नमस्ते

आपके द्वारा प्रकाशित 'जन-ज्ञान' मासिक भाद्रपद सं० २०३६ का अंक बहुत ही नाजुक हालत में अभी हाथ लगा है जिसको पढ़कर बड़ी खुशी हुई कि अभी भी हिंदुस्तान का नाम रखने वाली वीरांगना अपने हिंदू भाइयों को जो गहरी नींद में सो रहे हैं उनको जगाकर हिंदू कौम एवं हिन्दुस्तान का नाम कायम रखने के लिए पुकार लगा रही हैं।

आपके साथ हमारे और हमारे हिन्दू भाइयों के हजारों हाथ आपके साथ हैं।

हो सके तो माह मई १९८६ का अंक वी० पी० द्वारा भेज देना, मैं यहां वी० पी० को छुड़ा लूंगा और साथ ही मैं हिंदू प्रचार के सम्बन्ध में क्या सहयोग दे सकता हूं। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि इस ओर ध्यान दिया जाएगा। शेष शुभ।

पता :-

भगतसिंह ठाकुर
ग्राम० पो०—मुड़िया
जिला—दमोह
(म० प्र०)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai


आप हिन्दुत्व की प्राणस्वरूपा है !

आपके गुण, कर्म और योग्यता से हम आपको वैदिक धर्म, संस्कृति, साहित्य की प्रबल रक्षिका, हिन्दुत्व की प्राणस्वरूपा, भारत मां की रक्षा में सजग प्रहरी के रूप में देखते हैं।

आप पर ३६ मुकदमे चल रहे हैं। सोना कसौटी पर कसा जाता है तब उसमें और निखार आ जाता है।

आप प्रबल उत्साह से भारत-हितैषी प्रत्येक कार्य को पूर्ववत् करती रहें। हम वेद-प्रेमी आपके साथ हैं। आप भारत के सपूतों को अनवरत जगाती रहें। भारत की राजनीति स्वार्थपरता से हटकर वेदाज्ञा से जोड़ेंगी। यह कार्य किसी भी राजनीतिक दल से नहीं होगा। अब राम-कृष्ण के भक्त भी जाग चुके हैं। इन्हें भारत के धर्म गुरु एक होकर अपने हाथ में संभाल लें। वेद विधान प्रदान करें। वेद-प्रेमी धर्मगुरुओं की एकता के अभाव में इस कार्य में बिलम्ब होगा। राजनीतिक दलों के नेता धन के गुलाम हो चुके हैं। ऐसे राजनेताओं का लगाव भारतीय संस्कृति की उन्नति से नहीं, पाश्चात्य सभ्यता से है। यदि ऐसा न होता तो भारत मेंअश्लील पुस्तकों का प्रकाशन एवं चित्रों का प्रदर्शन न होता।

वैदिक धर्म, संस्कृति और सभ्यता की रक्षा वेद-भक्त आर्य सन्तानों को करनी है। राजनेता जैसा भी करे, परन्तु धर्माचार्यों की प्रेरणा से रामभक्त भारत मां की रक्षा वेदाज्ञानुसार करने के लिए मचल चुके हैं। सरकार भी अब समझने लगी है कि जहरीले सर्पों को दूध पिलाने से जहर ही मिलता है। फिर भी भारत सरकार विषम परिस्थिति में है।

धर्म के नाम पर विदेश से आने वाला धन भारत के लिए विष का काम करता है। भारत सरकार अब समझने व सतर्क होने का प्रयास करने लगी है। मित्र ही शत्रुता में लगा हुआ है। फिर भी हम भारतवासी अधिक गुमराह नहीं होंगे। जगाने पर जाग चुके हैं। आपने 'जन-ज्ञान' मासिक पत्रिका में आज तक जो कुछ लिखा हे सरकार खुले दिल से पढ़े और सोचे तो सरकार को निष्पक्ष रूप से कहना पड़ेगा कि आपने भारत की अखण्डता एवं वैदिक धर्म, सस्कृति जिसके बल पर भारत जगत् गुरु था, पूर्ण रूप से रक्षा की है।

—राममनोरथ, बलरामपुर (गोंडा)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदरणीय,

सम्पादक महोदय (जनज्ञान मासिक)

सादर नमस्ते,

समाचार यह है कि आर्य युवक दल हरियाणा एवं आर्या युवती दल हरियाणा की महत्त्वपूर्ण बैठक २२-४-८६ को डी० ए० वी० महिला कालेज करनाल में सम्पन्न हुई। जिसमें हरियाणा के विभिन्न स्थानों से लगभग ६५ की संख्या में प्रतिनिधि उपस्थित हुए। सर्वसम्मति से आर्य युवक दल हरियाणा का प्रथम महासम्मेलन ३-४-५ अक्तूबर १९८६ को पानीपत में निश्चित किया गया है।

भवदीय :

प्रो० वेद सुमन वेदालंकार

कार्यकर्ता अध्यक्ष

---

हमें न किसी से द्वेष है और न विरोध—हमारी शत्रु तो वह जहरीली विचारधारा है, जो मजहब के नाम पर नादिर शाह और औरंगजेब को जन्म देती है।

—महात्मा वेदभिक्षु

मजहबी पागलपन ने दुनिया में कितना खून बहाया है, यह किसी भी इतिहास के पाठक से छिपा नहीं है। विशेष रूप से जो हमारे विचारों को न माने उसकी हत्या कर दी जाए, यह विचारधारा यदि फैलेगी तो मनुष्य समाप्त हो जाएगा और पशुता छा जाएगी।

—महात्मा वेदभिक्षुः

---



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## प्रसिद्ध नेता ओमप्रकाश त्यागी का आकस्मिक निधन

नई दिल्ली, २० मई—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महा सचिव एवं भूतपूर्व सांसद श्री ओमप्रकाश त्यागी का ७२ वर्ष की आयु में १० मई को प्रातः आयुर्विज्ञान संस्थान में हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया।

श्री त्यागी जी के नेतृत्व में विदेशों में आर्य महासम्मेलनों के कई शानदार आयोजन हुए। उनका निधन आर्य समाज और राष्ट्र के लिए एक अपूरणीय क्षति है। ११ मई को निगम बोध घाट पर उनके अन्तिम संस्कार के समय बड़ी संख्या में आर्य नेता और राजधानी के वरिष्ठ जन उपस्थित थे।

## श्री विद्याप्रकाश सेठी को पुत्र-वधु शोक

नई दिल्ली, २० मई। विगत १५ अप्रैल को यहां प्रसिद्ध समाज सेवी एवं कुशल विचारक श्री सेठी जी की पुत्र-वधु श्रीमती सरोज सेठी का आकस्मिक निधन हो गया। श्री सेठी जी और उनके परिवार ने इस महान दुर्घटना को दैवीय विधान समझकर धैर्य से सहन किया है। २७ अप्रैल को दिवंगत आत्मा की क्षति के लिए शांति यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित शोकाकुल जनसमूह ने दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की।

श्री सेठी ने शांति यज्ञ के पश्चात अनेक धार्मिक संस्थाओं के लिए ११०० रुपये का सात्विक दान भी दिया।

## प्रसिद्ध आर्य नेता स्व० पुरुषोत्तमदास आर्य का आकस्मिक निधन

मथुरा, ३० अप्रैल। आचार्य प्रेमभिक्षु, सम्पादक 'तपो भूमि' मथुरा के पूज्य पिताजी स्व० पुरुषोत्तम दास आर्य (व्यवस्थापक श्री विरजानन्द वैदिक साधना केन्द्र, मथुरा) की श्रद्धांजलि सभा में बोलते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष लाला रामगोपाल साल वालों ने कहा कि श्री आर्य ने अपने अनन्य वैदिक गुणों से समाज की महान सेवा की थी।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध आर्य नेता पं० शिवकुमार शास्त्री एवं श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने भी श्रद्धाँजलि अर्पित की। आचार्य प्रेमभिक्षुजी ने पूज्य पिताजी की पुण्य स्मृति में विभिन्न संस्थाओं को इस अवसर पर १००१ रु० दान देने की घोषणा की। अनेक संस्थाओं और राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं के साथ ही उन्होंने 'जन-ज्ञान' को भी दान राशि भेंट की।

## आंध्र प्रदेश शुद्धि सभा के कोषाध्यक्ष का आकस्मिक निधन

हैदराबाद, १६ मई। आंध्र प्रदेश शुद्धि सभा के कोषाध्यक्ष श्री पूणम चन्द्र अग्रवाल के १ मई को आकस्मिक निधन पर यहां शुद्धि सभा के कार्याध्यक्ष श्री वी० के० नरसिंह की अध्यक्षता में एक शोक प्रस्ताव पारित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

ज्ञातव्य है कि पूणमचन्द्र जी जीवनपर्यन्त हिंदू समाज सेवा में कार्यरत रहे। आप एक लोकप्रिय सामाजिक कार्यकर्ता थे। इस अवसर पर आयोजित शोकसभा में हैदराबाद के अनेक गणमान्य सज्जन उपस्थित थे।

## आर्य समाज नागदा के चुनाव

प्रधान—श्री सेवाराम आर्य
उप-प्रधान—श्री गोविन्द मोहता
एवं
श्री अशोक मेहता
मन्त्री—श्री नरेन्द्र बेबड़ा
उप-मन्त्री—श्री गोपाल गुन्जाल
कोषाध्यक्ष—श्री जोधसिंह राठोड़
पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामेश्वर तंवर
सभा पुरोहित—श्री लक्ष्मीनारायण कड़लुआ

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi 

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# आयुर्वेद के विकास की आवश्यकता !

□ रामावतार

बी. आई. एम. एस. (बैचलर आफ इण्डियन मेडिसन एण्ड सर्जरी) की उपाधि द्वारा सम्मानित स्नातक डा० नैकटाई, कोट, पतलून पहनकर और मेज-कुर्सी पर बैठकर अंग्रेजी में दवा लिखते हैं। नाड़ी परीक्षण के स्थान पर थर्मामीटर का प्रयोग करते हैं, यद्यपि नाड़ी द्वारा विज्ञ वैद्य कठिन रोगों का पता आसानी से लगा लेते हैं। वे वैद्य कहलाना पसन्द नहीं करते। प्रशासन जितना व्यय ऐलोपैथी पर करता है, यदि उससे आधा भी आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली पर करे जो पूर्ण शास्त्र है तथा भारत की प्राचीन और श्रेष्ठ प्रणाली है तो वह भी परम ख्याति तथा मान्यता प्राप्त कर सकता है।

आज से ६०-६५ वर्ष पूर्व टिटनैस, कैंसर आदि का नाम सुनने में नहीं आता था, पर ऐलोपैथी की उन्नति के साथ ये रोग बहुत बढ़ गए हैं तथा नए-नए कठिन असाध्य रोग उत्पन्न हो रहे हैं। साधारण अस्पतालों में ही नहीं अपितु कानपुर, लखनऊ और नई दिल्ली के प्रसिद्ध डा० राममनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, आयुर्विज्ञान संस्थान तक में टिटनैस से (ग्लूकोज चढ़ाने तथा इंजेक्शन लगाने के पश्चात) अनेकों रोगियों की मृत्यु हो जाती है। अक्सर आपरेशन के पश्चात् कितने रोगियों की मृत्यु यंत्र या गाज अथवा नसों के गलत सीने के कारण भी होती है। इसके विपरीत कई असाध्य रोगों का उपचार आयुर्वेद की साधारण दवाओं से हो जाता है।

जल जाने तथा फफोले पड़ जाने पर तीव्र वेदना होती है, पर साधारण चूने का पानी, गोले के तेल में मिलाकर (जब सफेद-एकरस हो जाए) लगाने से जलन और पीड़ा दूर होकर ३-४ दिन में पूर्ण लाभ हो जाता है। लू लगने पर ग्रीष्मऋतु में छोटे बच्चों को आम भूबल (गरम राख) में पकाकर तथा गूदा पानी में मिलाकर नमक व जीरे का छौंक लगाकर देने से तीव्र लू का प्रकोप भी शान्त हो जाता है अन्यथा यह लू घातक हो सकती है। रक्त,


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मधुमेह के लिए टेजपात के पत्ते तथा हृदय रोग के लिए ग्वार के पट्ठे (घृत कुमारी) अति लाभकारी है। कैंसर के लिए सदाबहार बहुत लाभदायक है। चोट तथा घायल होने पर रक्त प्रवाह होने लगता है, यदि दूध में फटकरी या हल्दी मिलाकर पिलाया जाए तो टिटनैस का प्रश्न ही नहीं रहता। गुम चोट लगने पर शरीर सूज जाता है, पर हल्दी-चूना मिला और गरम करके लगाने पर दर्द दूर होकर सूजन चली जाती है। हल्दी के अनेकों लाभ हैं। हल्दी और चूना मिलाकर रोली बनती है, जिसका प्रत्येक धार्मिक अवसर पर इसी कारण प्रयोग होता है।

हैजे तथा मोतियाबिन्द के लिए प्याज का अर्क अच्छा है। मेरी पत्नी को कई वर्ष भयंकर खांसी रही। बड़े-बड़े डाक्टरों का इलाज व्यर्थ सिद्ध हुआ पर एक वैद्य द्वारा तुलसी की पत्तियों तथा कुछ गोलियों द्वारा एक सप्ताह में ही पूर्ण लाभ हुआ। लकवा तथा अधरंग का उपचार शहद के साथ महारसायनादि काढ़ा व महा योगराज गुग्गुल की गोलियों से सफलता पूर्वक हो सकता है। इसी प्रकार रक्त-चाप, मधुमेह, कैंसर आदि के लिए कुछ पौधे तथा जड़ीबूटियां अत्यन्त लाभकारी होने के समाचार भी प्रकाशित हुए हैं।

चरक अपने समय के महान् शल्य चिकित्सक थे। अश्विनी कुमारों ने अंधे वृद्ध च्यवन ऋषि को अपनी औषधियों द्वारा नेत्र-ज्योति तथा पूर्ण यौवन प्रदान किया था, भगवान् धन्वन्तरि ने तक्षक नाग से डसे वृक्ष को वढ़ई सहित जो वृक्ष पर चढ़ा था और निर्जीव हो गया था, अभिषिक्त जल से नव-जीवन प्रदान किया था। महाराजा दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ द्वारा चार पुत्र रत्न प्राप्त किए थे।

भारतीय वैद्यों ने पूर्वी देशों में भी अपनी कीर्ति-यश का प्रसार सैकड़ों वर्ष पूर्व किया था। कायाकल्प, आम्र-हरड़कल्प द्वारा शरीर सब रोगों से मुक्त होकर दीर्घ जीवन प्राप्त हो सकता है। कस्तूरी, स्वर्ण, रजत भस्म, मोती, चन्द्रोदय, बृहत् वात चिंतामणि रस आदि आयुर्वेद की प्रसिद्ध औषधियां हैं जो प्रायः मृतकों तक को कुछ समय तक जीवन प्रदान करने में समर्थ हैं।

विषाणु-जीवाणु का ज्ञान पाश्चात्य देशों को गत शताब्दी में ही हुआ था पर प्राचीन काल में भी भारत की साधारण गृहिणी भी इनसे परिचित



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

थीं। दूध से दही, सिरका बनाना, अन्न सड़ाकर मद्य, मल-विष्टा से खाद बनाना, नीम द्वारा रोगों में लाभ, यह सब जीवाणु ज्ञान है। वर्षाकाल में अक्सर चोट पक जाती है तो तेल-नमक का फाहा जल में उबालकर प्रयोग (गरम छौंक कर) किया जाता है।

यदि वास्तव में ऐलोपैथी चिकित्सा प्रणाली इतनी प्रभावशाली तथा गुणकारी होती है तो जर्मनी, ब्रिटेन, अमेरिका आदि करोड़ों-अरबों रुपयों की आयुर्वेदिक औषधियां प्रतिवर्ष अपने देशों में क्यों आयात करते? अतएव ऐलोपैथी के स्थान पर अथवा साथ-साथ आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली के विकास तथा अनुसन्धान की अत्यन्त आवश्यकता है। ★


जन-ज्ञान [मासिक]

के

आजीवन सदस्य बनकर

आगे बढ़ने में सहयोग दीजिए।

अपने मित्रों-परिचितों को भी

अजीवन सदस्य बनाइए।

आज ही ५०१ रुपया भेजिए।

—पंडिता राकेशरानी




Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू समाज की रक्षा

□ आनन्द शंकर पंडया

हिन्दू समाज की रक्षा व जागृति के लिए प्रचार को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इससे हमारे सब सत्याग्रहों को बल मिलेगा।

राम जन्म-भूमि मुक्ति के बाद अब हमें सत्याग्रह करना है कृष्ण जन्म भूमि व काशी विश्वनाथ मन्दिर की मुक्ति के लिए, धर्म परिवर्तन पर रोक लगाने के लिए, हिन्दू धर्म को राष्ट्र धर्म बनाने के लिए तथा गो-रक्षा के लिए। इन्हीं सत्याग्रहों से हिन्दू समाज में एकता आएगी और उसे अपनी पूर्ण आजादी मिलेगी जो अभी अधूरी है। हमें अपने ये अधिकार सरकार से मांगने हैं।

आज प्रचार का युग है जिसमें प्रचार के द्वारा खराब दवा भी बिक जाती है तथा प्रचार के अभाव में अच्छी दवा को भी कोई नहीं पूछता। हिन्दू धर्म व हिन्दू समाज के साथ आज यही हो रहा है। प्रचार के अभाव में हिन्दू समाज सर्वत्र मार खा रहा है। हिन्दू समाज प्रचार में विश्वास नहीं रखता, क्योंकि उसमें यह भावना है कि जो सत्य है उसे प्रचार की आवश्यकता नहीं है तथा हिन्दू धर्म की रक्षा ईश्वर करेगा। जबकि अन्य धर्म चूंकि धर्मपरिवर्तन को मानते हैं अतः धर्म प्रचार उनके धर्म का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। आज जो हो रहा है उससे मालूम पड़ता है कि हिन्दू समाज अपना बहुमूल्य सोना नहीं बेच पा रहा है जबकि अन्य धर्मावलंबी अपना पीतल सोने के भाव बेचकर हिन्दुओं को धोखा दे रहे हैं। हिंदू भ्रमित हैं वे अपना शत्रु व मित्र नहीं पहचानते।

धर्म-निरपेक्षता के झूठे स्वरूप के कारण हिन्दू नेता, जनता तथा बुद्धिजीवियों में हिंदू समाज व धर्म की चर्चा करने के प्रति एक हिचक उत्पन्न



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हो गई है। यह बात मुझे 'इण्डियन एक्सप्रेस' के एडीटर ने कही। हिचक को हजारों पत्र लिखकर व अन्य प्रचारों द्वारा ही तोड़ा जा है। हिंदू समाज के सब कष्ट सेक्युलरिज्म के कारण ही उत्पन्न हुए अतः प्रचार द्वारा इन सबका भन्डाभोड़ करना आवश्यक है।

भारत की आजादी की लड़ाई के समय हिंदुओं को जो खतरा था उससे दस गुना अधिक है पर हम लोग हिन्दू जनता को यह बात सम में सफल नहीं हुए हैं क्योंकि हमने प्रचार कार्य को प्राथमिकता नहीं दी यदि हिंदू समाज जाग्रत हो जाएगा तो फिर आम जनता ही प्रति करेगी। आम जनता ही मीटिंग करेगी तथा फण्ड एकत्र करके हमें देगी।

भारत की २ प्रतिशत जनता जिसके हाथ में धन, सत्ता व शक्ति यदि हिन्दू संस्कृति का महत्व समझकर हिन्दू समाज के कार्य में सहयोग है तो कार्य अत्यन्त सरल हो जाएगा। इस दो प्रतिशत जनता को सम प्रचार द्वारा ही हो सकता है। उसे सेवा कार्यों की आवश्यकता नहीं सेवाकार्य गरीब जनता के लिए है।

## प्रचार का उद्देश्य

सर्वप्रथम हमें यह समझना है कि हमारे प्रचार का क्या उद्देश्य चाहिए।

१. हिन्दू समाज को अपने धर्म की महानता समझाकर हिन्दुओं आत्म-सम्मान व आत्म-विश्वास उत्पन्न करना व उनका बिखराव रो हनुमान जी अपनी शक्ति भूल गए थे, उसी तरह हिन्दू समाज भी भूल है। उसे अपनी शक्ति का स्मरण करवाना ताकि वे अपने धार्मि सांस्कृतिक अधिकार सरकार से मांगे।

२. सच्चे धर्म के अज्ञान में जो कुरीतियां, छुआछूत, दहेज प्रथा हिन्दू समाज में घुस गई हैं, उन्हें दूर करना।

३. नई हिन्दू पीढ़ी जो पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव में आकर दुर्गुणों का शिकार हो रही हैं उसे चरित्रवान बनाकर राष्ट्रवादी बनाना



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४. हिन्दू संस्थाओं को सम्प्रदायवादी कहकर हिंदू खबरों को समाचार-पत्रों में छपने से रोका जाता है तथा विधर्मियों को प्रधानता दी जाती है। इस षड्यन्त्र का भंडाफोर करना।

५. अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण द्वारा हिन्दुओं के प्रति जो अन्याय हो रहे हैं उन्हें उजागर करके हिन्दुओं को जाग्रत करना ताकि हिन्दू संस्थाओं के सत्याग्रह कार्यों में समस्त हिन्दू समाज शामिल हो। इस तरह हिन्दुओं को उनके नैतिक, धार्मिक व राजनैतिक अधिकार दिलवाना।

६. राष्ट्रघाती शक्तियों को नष्ट करना तथा हिन्दू वोट बैंक बनाकर हिन्दू भावना वाली राजनीतिक पार्टियों को हिन्दू समाज का पूरा समर्थन मिले तथा हिंदू कार्यकर्ताओं को सर्वत्र आदर व सहयोग मिले। ऐसा वातावरण उत्पन्न करना।

७. हिंदू धर्म का विश्व में प्रचार करके विश्व का जनमत हिन्दुओं के पक्ष में उत्पन्न करना ताकि विदेशी लेखक व विद्वान हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए लिखें व अपनी आवाज उठाएं। भूतकाल में ऐनीबेसेंट व शोपनहार जैसे अनेक विदेशी विद्वानों ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए कार्य किया था उससे हिन्दू धर्म की बहुत रक्षा हुई थी।

८. धन संग्रह व मेम्बर बनाना भी प्रचार कार्य द्वारा ही हो सकता है। इस तरह हमारे प्रचार का उद्देश्य बहुत व्यापक होना चाहिए।

## प्रचार के साधन

प्रचार के कई साधन हैं जैसे पत्र लेखन, संपादक के नाम पत्र, विज्ञापन, पेम्फलेट, पुस्तकें, सचित्र फोल्डर, भजन, कवि सम्मेलन, फिल्म, रेडियो स्कूलों व सड़कों पर बोर्ड लगाना, भाषण, मुंह से प्रचार इत्यादि। इन सभी का उपयोग हमें करना चाहिए।

### पत्र लेखन

सबसे सरल व प्रभावशाली कार्य पत्र-लेखन का है। समाचार पत्रों में हिन्दू धर्म की कोई खबर नहीं आती है जबकि ईसाई व



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसलमानों की सब खबरों को प्रधानता दी जाती है। पोप को सब समाचार पत्रों ने तथा टी. वी. व रेडियो ने प्रमुखता दी। पर हिंदू धर्माचार्यों के भाषण व फोटो समाचार-पत्र में नहीं छापते। रामनवमी पर नासिक में यात्रा पर रोक लगाई गई। बम्बई में श्रीराम की रथ-यात्रा निकली थी पर उसका कोई भी समाचार इत्यादि इण्डियन एक्सप्रेस व टाइम्स आफ इण्डिया में नहीं आया। उसके विरोध में मैंने उन्हें पत्र लिखे तथा अपने मित्रों से भी लिखवाए। उन्हें लिखना चाहिए कि वे देश की रक्षा के लिए हिन्दू धर्म की रक्षा करें। फिल्म के निर्माताओं को लिखना चाहिए कि वे अपनी फिल्मों में हिंदू धर्म का अपमान न करें। इस तरह के अन्याय के विरोध में समाचार पत्रों, मन्त्रियों, प्रधानमंत्री को पत्र जाना चाहिए। समाचार-पत्रों में छपी हिन्दू खबरें भी इन्हें भेजें। शुरू में आपके पत्रों के उत्तर नहीं आएंगे पर उससे निराश नहीं होना चाहिए। इसके बारे में मैं अपना अनुभव बतलाता हूं। मैं हिन्दू साहित्य देश के नेताओं, उद्योगपतियों व संपादकों को भेजता रहता हूं। शुरू में तो उनके कोई उत्तर नहीं आए पर बाद में पचासों लोगों के उत्तर आए। जैसे, भारत के उप-राष्ट्रपति, न्यायमंत्री, इस्पातमंत्री, गुजरात तथा महाराष्ट्र के गवर्नर रामकृष्ण बजाज, वीरेन्द्र शाह, प्राणलाल भोगीलाल एवं इण्डियन एक्सप्रेस चंडीगढ़ के संपादक राहुल सिंह जी इत्यादि।

पत्र लेखन का कार्य सबसे सस्ता है तथा इसे बीमार, वृद्ध व अत्यन्त व्यस्त व्यक्ति भी कर सकता है। यदि एक साथ एक लाख पत्र जाते हैं तो बहुत प्रभाव होगा। इस तरह का दल तैयार करना होगा यह वास्तविक कार्य है जिसकी शुरुआत स्वयं परिषद व संघ के कार्यकर्ताओं को करनी चाहिए दूसरों को उपदेश देने के पहले खुद ही कार्य करना चाहिए। उड़ी सम्मेलन पर दक्षिण के अखबारों में बहुत समाचार छपा। पर वो दिल्ली के मिनिस्टरों को कैसे मालूम हो, अतः उनकी १५० कापियां मैंने सब मंत्रियों को भिजवाई ताकि उन पर दबाव पड़े। यह कार्य नियमित रूप से हे आफिस से होना चाहिए।

## सम्पादक के नाम पत्र

आज के युग में जबकि समय के अभाव में लोग बड़ी पुस्तकें व बड़े ले नहीं पढ़ पाते हैं तब हमें सम्पादक के नाम पत्रों में हिंदू समस्याओं



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निरन्तर लिखना चाहिए। इससे धीरे-धीरे हिन्दुओं में जागृति होगी। इसके लिए कुछ पत्रकार भी रखने चाहिए। जिन लेखकों के पत्र समाचार पत्रों में छपत हों उन्हें हमें लिखना चाहिए कि वे हिन्दू धर्म के पक्ष में भी पत्र लिखें। जो लोग पक्के हिंदू हैं उनके लिए प्रचार की आवश्यकता नहीं है पर हमें प्रचार द्वारा उन पाश्चात्य विचारधारा वाले लोगों का परिवर्तन करना है जो हिंदू विरोधी हैं अतः उनकी विचारधारा समझकर ही तर्क पेश करना चाहिए। हिन्दू धर्म के विरोधी हमेशा यह प्रचार करते रहते हैं कि हिन्दुत्ववादी लोग छुआछूत के समर्थक व गांधीजी के कट्टर विरोधी हैं। अतः वे लोग सम्प्रदायवादी हैं इन बातों का तर्क सहित खंडन होना चाहिए।

मैं अनुभव करता हूं कि कभी-कभी परिषद के कुछ लोग मेरी विचार-धारा से सहमत नहीं रहते अतः मैं यहां अपना बैक ग्राउंड बतला देना चाहता हूं ताकि भविष्य में गलतफहमी न हो। मैं पहले कांग्रेस में था। क्योंकि मेरे माता-पिता ने आजादी के आंदोलन में भाग लिया था। फिर मैं विनोबा जी के सर्वोदय आंदोलन में रहा। जयप्रकाश जी के 'सम्पूर्ण क्रांति' आंदोलन में मैंने कार्य किया तथा फंड एकत्र किया। उसके बाद भाजपा में आया तथा अन्य कार्य के साथ उनके लिए फंड एकत्र किया। फिर मुझे महसूस हुआ कि जब हिंदू समाज में सच्चा हिंदुत्व आएगा तभी भारत का कल्याण होगा अतः मैं विश्व हिन्दू परिषद में शामिल हो गया। पहले मैं राजनीतिक तथा अर्थशास्त्र पर लेख लिखता था तथा नेताओं के इण्टरव्यू लेता था जो इन्डियन एक्सप्रेस, टाइम्स आफ इन्डिया अमृत बाजार पत्रिका, मुंबई समाचार आदि में छपते रहते थे। पर वह सब लिखना बन्द करके अब तीन वर्ष से सिर्फ हिंदू धर्म पर ही लिखता हूं। मेरा लेखन अधिकतर उन लोगों के लिए होता है जो धर्म-निरपेक्षता की विचारधारा के कारण हिंदू समाज का अनादर व अवहेलना कर रहे हैं। अतः कभी मेरे विचारों से मतभेद हो तो कृपया मेरी इस भूमिका का ध्यान रखें।

पुस्तक

हिन्दू धर्म की रक्षा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक लेखन वाले को तीन वर्ष में पांच हजार रु. प्रतिवर्ष, सर्वश्रेष्ठ लेख पर एक हजार तथा कविता पर एक हजार रुपए का पुरस्कार दिया जाना चाहिए। पुस्तकों को बेचने पर ४० 



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रतिशत कमीशन देना चाहिए। इसके लिए देश में हजारों व्यक्ति तैयार किए जाने चाहिए जो अपने खाली समय में साहित्य बेचकर कुछ धन कमा सकें। वे लोग अन्य कार्य भी कर सकेंगे। पुस्तकें छपते ही कार्यकर्ताओं को बेचने के लिए दे दी जानी चाहिए। जहां भी किसी कारण से जनता की भीड़ इकट्ठी हो वहां साहित्य बेचने व पेम्फलेट बांटने चाहिए। होटलों में हिन्दू धर्म पर पुस्तक रखनी चाहिए। हिन्दू धर्म की पुस्तकें बेचने की दुकानें खोलना चाहिए।

हिन्दू धर्म व समाज के विभिन्न पहलुओं पर प्रभावशाली पेम्फलेट तैयार करके छपवाना तथा जहां भी जनता एकत्र हो वहां उन्हें बंटवाना चाहिए। कोई अच्छा लेख हो तो उसका जेरोक्स करके सबको बंटवाना चाहिए। अन्य भाषाओं में उसका अनुवाद करवाना चाहिए। कुम्भ मेला तथा अन्य मेलों व उत्सवों में पेम्फलेट बांटना चाहिए। चेतावनी पेम्फलेट भाजपा के नेताओं को बहुत पसन्द आई है तथा ११ तारीख की दिल्ली की मीटिंग के के लिए उन्होंने दस हजार प्रतियां मंगाई हैं।

यह सबसे प्रभावशाली अस्त्र है इसी से बात घर-घर में फैल जाती है। हिन्दू धर्म पर चर्चा फैशन में आ जानी चाहिए। हिंदू खबर किसी भी रूप में अखबार में छपे तो हमारे कार्यकर्ताओं को चाहिए कि सबको कहें कि ऐसा लेख या सम्पादक के नाम पत्र या विज्ञापन हिन्दू धर्म पर छपा है आप अवश्य पढ़िए। दुर्भाग्यवश हिन्दू लोग फिल्म, क्रिकेट, टी. वी., राजनीति, व्यापार इत्यादि के बारे में बहुत बातें करते हैं पर जो सबसे आवश्यक बात है उसके बारे में उनके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकलता है क्योंकि हिन्दू धर्म व हिन्दू समाज की समस्याओं पर बोलना सांप्रदायिक समझा जाता है। परिषद् के कार्यकर्ता भी ये बात नहीं करते हैं कि अखबार में हिन्दू धर्म पर अच्छा लेख आया है उसे अवश्य पढ़ें।

## मुंह से प्रचार

रविवार को घर-घर जाकर लोगों से प्रतिज्ञा-पत्र पर दस्तखत कराइये कि हम 'हिन्दू धर्म की रक्षा करेंगे', 'हिन्दू समाज की रक्षा करेंगे', 'गरीब व हरिजन हिन्दुओं की रक्षा करेंगे'। अपने पड़ोसी, मित्र, रिश्तेदार व आफिस वालों को सच्चे हिन्दू बनाएं। हिन्दुओं को ही सच्चे हिन्दू बनाने की



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जरूरत है। आज हिन्दू एक हिन्दू नहीं है बल्कि शून्य है। उसका दिन प्रति दिन नैतिक पतन हो रहा है क्योंकि उसे अपनी संस्कृति का ज्ञान नहीं है।

### विज्ञापन

हिंदू समाज, हिंदू धर्म का विचार फैलाने का सबसे प्रभावोत्पादक साधन विज्ञापन है क्योंकि उसका संदेश एक दिन में सारे भारत में फैल जाता है। जब वातावरण उसके अनुकूल हो तब विज्ञापन देने से उसका असर अधिक होता है। पोप आने के अवसर पर मैंने दो विज्ञापन इण्डियन एक्सप्रेस व टाइम्स आफ इण्डिया से निकलवाए थे वो शायद आप लोगों ने पढ़े होंगे। उसका प्रभाव अच्छा हुआ तथा उसके जवाब में सैकड़ों पत्र आए। धन संग्रह तथा मेम्बर बनाने का कार्य भी विज्ञापन द्वारा हो सकता है। विज्ञापन का खर्च जनता के कुछ लोग मिलकर उठा सकते हैं जिनका नाम विज्ञापन के नीचे दिया जा सकता है।

विज्ञापन की जेरोक्स कापियां, मंत्रियों, सांसदों, उद्योगपतियों इत्यादि को भेजना चाहिए तथा उनका अनुवाद करके अन्य भाषाओं में छपवाना चाहिए। जो नेता हिन्दू समाज के विरोध में बोलें उन्हें वे जेरोक्स कापियां अवश्य भेजना चाहिए उससे भविष्य में उनका बोलना बंद हो जाता है। यह मेरा कई बार का अनुभव है।

जब तक हिंदू जाग्रत नहीं होंगे तब तक उनके लोकतांत्रिक अधिकार कुचले ही जाएंगे। कहावत है कि मां भी उसी बच्चे को दूध पिलाती है जो चिल्लाता है। हिन्दुओं पर अन्याय व अत्याचार होते हैं तब भी वे नहीं चिल्लाते। उनकी इस सहनशीलता को भारत सरकार, विरोधी पक्ष व अल्पसंख्यकों ने पहचान लिया है अतः वे सब हिन्दुओं पर मनमानी करते रहते हैं उनका विरोध विज्ञापन द्वारा सरलता से हो सकता है।

### भाषण

नुक्कड़ मीटिंग में हिन्दू धर्म की महानता बतलाकर हिंदू समाज पर आए हुए खतरे को समझाना चाहिए। उसके लिए बेटरी से चलने वाले हाथ के माइक लेकर ४-५ व्यक्ति रेलवे स्टेशनों तथा चौराहों पर भाषण करें। मैंने



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू प्रचार के कार्य के लिए 'हिन्दू उत्कर्ष मंच' बनाया है। उसके कार्य दादर, चर्चगेट तथा भीड़ वाली जगह पर भाषण करते हैं जिसे सुनने के लि हजारों लोग एकत्र हो जाते हैं। अभी नासिक भी गए थे २६ अप्रैल को वहां उन्हें बहुत सफलता मिली तथा जनता में बहुत उत्साह उत्पन्न हुआ 'हिन्दू उत्कर्ष मंच' हर शान्तिपूर्ण ढंग से हिन्दू प्रचार करेगा। इस त की मीटिंग में प्रसिद्ध व्यक्तियों के भाषण टेप करवाकर भी बजाए सकते हैं।

विश्व हिन्दू परिषद को चाहिए कि वो हिन्दू धर्म पर सेमिनार जिसमें प्रसिद्ध विद्वानों को बुलाकर हिन्दू धर्म व समाज पर भाषण करा जाएं तथा बजाए पूजापाठ व त्यौहारों के हिन्दू धर्म का वास्तविक ज दिया जाए तभी हिन्दु समाज की वर्तमान कुरीतियां दूर होंगी तब वह शक्तिशाली बनेगा।

## धर्माचार्य

भारत में हजारों धर्माचार्य हैं जिनकी शक्ति ईसाई व मुसलमान, पा तथा मुल्लाओं से कहीं अधिक है पर वे अपनी शक्ति हिन्दू धर्म की र करने के बजाए अपने सम्प्रदाय व मठ के प्रचार में लगाते हैं इससे हि समाज विघटित हो रहा है। जिस तरह आदि शंकराचार्य ने सारे भारत घूम-घूमकर हिन्दू धर्म का प्रचार किया उसी तरह सब धर्माचार्यों करना चाहिए। अतः धर्माचार्यों से प्रार्थना करना चाहिए कि आज समय के वे हिन्दू समाज की रक्षा को प्राथमिकता दें। जब विश्व के स धर्माचार्य अपने समाज की रक्षा व भलाई के लिए दिन-रात कार्य करते तो हिन्दू धर्माचार्य क्यों नहीं कर सकते। उन्हें अपने मन्दिरों में स विचार, स्कूल, अस्पताल, हरिजन उद्धार इत्यादि की व्यवस्था क चाहिए।

विश्व हिन्दू परिषद् हरिजन बस्तियों में भजन के टेप बजाएं, धर्माच के सरल भाषण के टेप बजाएं, बच्चों को प्रसाद बांटें, बच्चों को पढ़ हरिजनों की मुसीबतों में उचित सलाह दें, उनकी दवा व शिक्षा के प्रबन्ध करें, उन्हें 'ऊँ' के लाकेट पहनाएं व 'ऊं' के लेबल उनके घरों लगाएं इत्यादि बातों से हमारे हरिजन भाइयों को मालूम पड़ेगा कि उ साथ भी कोई है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## बोर्ड

रेलवे स्टेशन, चौरास्ते तथा स्कूल, कालेजों में बोर्ड लगाएं जिन पर हिन्दू धर्म के वाक्य तथा हिन्दू नारे लिखना चाहिए। वेद वाक्य संगमरमर पर लिखवाकर मन्दिरों की दीवारों पर लगवाना चाहिए। दीवारों पर पोस्टर चिपकाना व नारे लिखवाना चाहिए। जो व्यापारी अपनी वस्तुओं का समाचार पत्रों में विज्ञापन देते हैं अथवा बड़े बड़े बोर्ड लगाते हैं उनको पत्र लिखकर कहना चाहिए कि वे अपने विज्ञापन ज वेद व गीता के वाक्य भी लिखवा दें। दिवाली ग्रीटिंग्स में हिन्दू नारे तथा वेद व गीता के वाक्य लिखावाएं।

## फिल्म तथा वीडियो

सिनेमा में बिश्व हिन्दू परिषद के सेवाकार्य के 'स्लाइड' दिखलाएं, वेद वाक्य तथा 'हिन्दू धर्म सर्वश्रेष्ठ मानव धर्म है। हिन्दू धर्म के द्वारा ही भारत तथा विश्त में शांति स्थापित हो सकती है।' इत्यादि नारे स्लाइड में लिखवाए इससे हिंदुओं में हिंदू धर्म का पब्लिक में नाम लेने की जो झिझक है वो मिट जाएगी। आज समाचार-पत्र हिंद्र समाज की खबरें छापना सांप्रदायिक या बुरा समझते हैं वो झिझक भी निकल जागगी। यदि देश के २ प्रतिशत लोग भी अपनी धर्मनिरपेक्षता की बीमारी छोड़कर हिंदू समाज के लिए बोलने लगेंगे तो बहुत-सी समस्याएं हल हो जाएंगी। उचित फिल्मों द्वारा हिंदू धर्म का प्रचार हो सकता है। इसके बारे में मैंने 'सन्तोषी मां' के चित्र निर्माता से बात की थी उन्होंने कहा कि हम इसमें पूरा सहयोग देंगे। हम लोग हिंसा, सेक्स इत्यादि के चित्र बिलकुल नहीं बनाते। हम ऐसा चित्र बनाना चाहते हैं जो देश के युवकों का चरित्र-निर्माण करें।

वीडियो द्वारा देश के धार्मिक स्थलों—बदरीनाथ, केदारनाथ तथा अन्य तीर्थ स्थानों का सुन्दर दर्शन हिन्दू जनता के सामने उपस्थित किया जा सकता है। यह कार्य व्यावसायिक दृष्टिकोण से भी किया जा सकता है। इन्हें टी. वी. पर दिखलाने का प्रयत्न भी करना चाहिए।

विविध भारती रेडियो के भारत में २५ करोड़ श्रोता हैं। ईसाई लोग अपने धर्म का प्रचार नित्य रेडियो से करते हैं। विदेश में बसने वाले हिन्दू कम से कम हफ्ते में एक दिन तो सीलोन रेडिययो से हिन्दू धर्म का प्रचार



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर ही सकते हैं। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो ईसाई धर्म के मुकाबले हिन्दू धर्म धीरे-धीरे क्षीण होता जाएगा। आज के युग में प्रचार के इतने अधिक साधन हैं कि यदि हिन्दू समाज अपने धर्म का प्रचार करे तो बहुत ही शीघ्र उसकी हालत सुधर सकती है।

## प्रचार के अन्य साधन

घर आफिस तथा गाड़ियों पर 'ॐ' के लेबल लगाना 'ॐ' के लाकेट पहनना, त्यौहारों पर घरों पर भगवा झन्डा लगाकर हिन्दू समाज की एकता प्रकट करके हिन्दुओं में आत्मविश्वास पैदा करना। सर्वत्र एक साथ झंडे देखकर राजनीतिक नेता भयभीत हो जाएंगे तथा हिन्दुओं के अहित का काम करना बन्द कर देंगे। इस तरह हिंदुओं में जाग्रति होगी और हिंदुओं के वोट बैंक बनेंगे। सरकार देखती है कि हिन्दू लोग इकट्ठे नहीं होते। अतः उनकी बात पर कोई ध्यान नहीं देती। इसलिए हिंदुओं को चाहिए कि वे विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित सभाओं में लाखों की संख्या में उपस्थित होकर सरकार के सामने अपनी शक्ति व एकता प्रदर्शन करें। एक प्रसिद्ध विद्वान का कहना है—'लोकतंत्र में जैसी जनता होती है वैसी ही सरकार बनती है।' इससे जब हिन्दू अपने धर्म के प्रति लापरवाह है तो उनके द्वारा निर्मित सरकार भी वैसी ही होगी। जिस दिन हिंदू जनता अपने अधिकारों की रक्षा चाहेगी उस दिन सरकार भी वैसा ही करेगी। अतः इसमें दोष हिंदुओं का है। रामराज्य में न्याय के आधार पर कानून बनते थे पर लोकतंत्र में बहुमत की मांग के आधार पर कानून बनते हैं, चाहे वे भले व अन्यायपूर्ण हों। यह बात समझाने की आवश्यकता है।

होटलों में हिन्दू धर्म पर पुस्तकें रखना, जो लोग किसी भी संस्था को दान करें वे हिन्दुत्व निष्ठ संस्था के नाम से करें। युवा संगठन बनाना जो स्कूल कालेजों में जाकर हिंदू धर्म की महानता बताए तथा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास व आत्मसम्मान उत्पन्न करें।

प्रेस सम्पादकों तथा रिपोर्टरों से मिलना, उन्हें दिवाली पर भेंट देना तथा उनसे सम्बन्ध स्थापित करना ताकि वे हिंदू संस्थाओं की खबरें छापें। इस तरह प्रचार कार्य चलेगा तो हिन्दू हित साधक को अपनी योजनाओं के लिए आर्थिक सहयोग भी मिलेगा।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



हिन्दुओं को उनके ही देश में आजादी आधी मिली है बाकी आधी आजादी उन्हें सत्याग्रह द्वारा प्राप्त हो सकती है। अन्य कोई मार्ग नहीं है। यह बात राम जन्म भूमि मुक्ति से सिद्ध हो चुकी है।

सत्याग्रह का विषय :—स्कूलों में हिन्दू धर्म की शिक्षा पाट्यक्रम में रखने के लिये, धर्म परिवर्तन रोकने के लिए, काश्मीर में हिन्दु मन्दिर तोड दिए उसका विरोध प्रकट करने के लिए, अपने धार्मिक स्थानों को विधर्मियों से वापस लेने के लिए, हिंदुओं के नैतिक, धार्मिक व लोकतांत्रिक अधिकार सुरक्षित रखने के लिए, निरतर सत्याग्रह किए जाने चाहिए।

सत्याग्रह में जुलूस, नारे लगाना, उन्हें दीवालों पर लिखना, भूख हड़ताल, नुक्कड़ मीटिंग, बड़ी सभाएं करवाना इत्यादि है। विजयादशमी को हिंदू धर्म की विजय का दिवस मनाना जैसे इस्लाम अपना विजय दिवस मनाता है। हिन्दू जनता की शक्ति छोटे-छोटे कार्यों से बढ़ेगी बजाय बड़े कामों के। गांधीजी ने आजादी के संग्राम में चर्खा चलाना, प्रार्थना करना, खादी पहनना, नमक आंदोलन इत्यादि छोटी-छोटी बातों के सोए हुए हिन्दू समाज को जाग्रत करके एक किया। यद्यपि गांधी जी ने कुछ भूलें कीं पर जनता को जाग्रत करने का उनका मार्ग अचूक था। हमें अपने क्षेत्र के एम० पी० से मिलना चाहिए और उनके सामने हिन्दुओं के प्रति होने वाले अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना चाहिये। आज के युग में सरकार से रामराज्य का न्याय पाने की आशा करना मूर्खता है उसे लोकतन्त्र के मार्ग पर चलकर सरकार पर जबाव के कोई कार्य नहीं होता। यही लोकतन्त्र का दोष है। चुनाव के समय नेताओ के भाषणों में यह प्रश्न उठाना चाहिए कि हिन्दू समाज के साथ अन्याय क्यों हो रहा है?

धन-संग्रह—प्रचार कार्य के लिए धन की आवश्यकता भी होगी। उसके लिए कुछ कार्यकर्ताओं को नियुक्त करना होगा। हमेशा फंड एकत्र करने का कार्य करने पर उन कार्यकर्ताओं में इस कार्य के लिए विशेष अनुभव हो जाएगा। उद्योगपतियों से निरंतर मिलना, सोविनियर में विज्ञापन लेना, कूपन बेचना, मेम्बर बनाना। यह सुबह से शाम तक पीछे पड़े रहने का कार्य है। एक व्यक्ति के यहां १० बार जाने से ही कुछ मिलता है। इसमें अलग-अलग रसीदें छपवाना चाहिए। जैसे—'हिन्दू धर्म रक्षा फंड',



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'हरिजन फंड', 'भारत माता फंड', 'धर्म परिवर्तन रोको फंड'। ये रसीदें १० से लेकर १०० रु० तक होनी चाहिए। इस तरह व्यवहारिक दृष्टिकोण रखने से फंड भी एकत्र हो जायेगा तथा हिन्दू समाज की रक्षा होगी व देश शक्तिशाली बनेगा।

कार्यकर्ता

अन्त में कहना है कि प्रचार आंदोलन का सबसे महत्वपूर्ण अंग कार्यकर्ता है। उसके कार्य की उचित प्रशंसा होनी चाहिए तभी उत्साह का वातावरण रहता है और वो आंदोलन चारों ओर फैलता है। कुछ समर्पित कार्यकर्ता प्रशंसा बिना भी कार्य करते हैं पर सब ऐसे नहीं मिलते। इसके अलावा जीवन के अन्त में ऐसे समर्पित व्यक्तियों के मन में भी कभी-कभी असन्तोष हो जाता है।

ईसाई व मुसलमानों की तरह हमें कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देकर उनका एहसान मानना चाहिए तथा कार्यकर्ताओं की कार्य करने की शक्ति कैसे बढ़े वो सुविधाएं उनके लिए जुटानी चाहिए। इस तरह प्रचार, सत्याग्रह फन्ड व कार्यकर्ता इन चारों का मेल होने पर हिन्दू आंदोलन निश्चय ही सफल होगा तथा देश शक्तिशाली बनेगा।

# हिंदू जागेगा
# देश का
# संकट भागेगा

जन-ज्ञान (मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# पकवानों का आनन्द लीजिए!

□ सपना सरकार

पकवानों का आनन्द लीजिए। बनाएं, खाएं तथा मेहमानों को खिलाएं। मेहमान बाग-बाग होंगे। प्रशंसा पाकर आपका हृदय भी खिल उठेगा।

## सन्तरे की खीर

सामग्री : मीठे सन्तरों का रस ३०० ग्राम, सूजी ४० ग्राम, चीनी २०० ग्राम, घी १५० ग्राम, तेजपत्ता, बादाम, किशमिश, इलायची अन्दाज से, दूध ७५० ग्राम, गुलाबजल छिड़कने के लिए।

तैयारी : किशमिश को साफ करके पानी में फूलने दें। बादाम की गिरी को भूनकर रख लें। दूध में तेजपत्ता डालकर उबाल कर रख लें।

विधि : एक स्टील के बरतन में सन्तरे का रस डालें। चीनी डालकर आग पर चढ़ा दें संतरे का रस जब फदकने लगे तब उतार कर रख लें और दूसरे बरतन में घी डालकर सूजी को भूनें। जब सूजी सुर्ख (लाल) हो जाए तब उसमें संतरे का रस थोड़ा-थोड़ा डालकर कलछुल से चलाती रहें। सारा रस इसी प्रकार डाल दें। जब बरतन में मिश्रण फदकने लगे तब दूध भी थोड़ा-थोड़ा डालते हुए कलछुल से चलाती रहें। इसी प्रकार सारा दूध डाल दें। अब बरतन को ऊपर से ढक कर दूध को हल्की आग पर पकने दें। गाढ़ा हो जाने पर उतार लें। ऊपर से किशमिश, बादाम की गिरी छिड़क कर ठंडा कर लें। गुलाबजल छिड़क कर पड़ोसें। यह खीर स्वादिष्ट तथा पौष्टिक होती है। बच्चे, बड़े सभी इसे चाव से खाएंगे।

## मालपूआ

सामग्री : भैंस का दूध ढाई किलो, अरारोट ४० ग्राम, चीनी ८५० ग्राम, गरी पाउडर ५० ग्राम, घी आवश्यकतानुसार।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विधि : दूध तथा अरारोट में चीनी डालकर अच्छी तरह एक-रस कर लें। इस घोल को एक बरतन में लेकर आग पर चढ़ा दें। घोल जब गाढ़ा हो जाए तब उतार लें। तवे पर घी का लेप लगाकर गर्म होने दें। अब गाढ़े घोल की थोड़ी-सी मात्रा तवे पर डाल कर तवे को तिरछा करके घोल को गोलाकार फैला दें। सिक जाने पर पलट कर सेंक लें। इसी प्रकार सारे घोल का मालपूआ बना लें। परोसते समय गरी पाउडर बुरक दें। मालपूआ तैयार है। खिलाएं तथा प्रशंसा पाएं।

## केला बड़ा

सामग्री : चावल का आटा एक किलो, चीनी एक किलो, पके केले तीन दर्जन, नारियल दो, कद्दूकस किया हुआ, घी तलने के लिए एक किलो।

विधि : पके केलों का छिलका उतार कर अच्छी तरह मसल कर एक बड़े बरतन में रखें। उसमें चावल का आटा, नारियल तथा चीनी मिलाकर एकरस करें। अब इस मिश्रण से गोलाकार बड़े, हाथ के सहारे, बना लें तथा तल लें। यह मिठाई ४-५ दिनों तक खराब नहीं होती है, यह बनाने में भी आसान है और खाने में मजेदार है।

## मिक्स्ड वेजीटेबल पकौड़े

सामग्री : बेसन आवश्यकतानुसार (४-५ कप), सब्जियां—आलू, प्याज, बैंगन, पालक, गोभी, प्याजकली इत्यादि।

तैयारी : पकौड़ा-मसाला बना कर रख लें। यह मसाला घर पर इस तरह बनाया जा सकता है :—

काली मिर्च, कश्मीरी मिर्च, अमचूर, नमक—प्रत्येक ४ चम्मच। काला नमक २ चम्मच, नींबू का सत आधा चम्मच। इन मसालों को कूट-पीस कर कपड़-छन कर सूखी शीशी में रख लें। यह रहा पकौड़ा-मसाला बनाने का फार्मूला।

अन्य सामग्री : हरी धनिया-पत्ती, हरी मिर्च की कतरनें, जीरा (पीसा हुआ)।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विधि : सब्जियों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें। हरी धनिया-पत्ती, हरी मिर्च के टुकड़े, पीसा हुआ आवश्यकतानुसार लेकर सब्जियों के टुकड़ों में मिला दें। बेसन का घोल बना लें। घोल न ज्यादा पतला हो और न ज्यादा गाढ़ा। सब्जियों के टुकड़ों पर बेसन लपेट कर तेल या घी में तल लें। ऊपर पकौड़ा-मसाला बुरक दें। गर्म-गर्म मिक्स्ड पकौड़े चटनी या सॉस के साथ खाने में बड़े जायकेदार होते हैं।

---


## जिसके घर में वेद नहीं, वह हिन्दू का घर नहीं !

# चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

### शीघ्रातिशीघ्र अपने घरों में लाइये !

कागज, छपाई, बनवाई और जिल्द आदि के रेट बढ़ने से अब वेदभाष्य ३०० रु. में नहीं दे सकेंगे। २० जून तक जिनके आदेश धन-सहित प्राप्त होंगे, उन्हें ३०० रु० में ही दिए जाएंगे। लागत मूल्य ५०० रु० है। रिआयती मूल्य का निश्चय २० जून के बाद होगा। अपने तथा अपने सम्बन्धित मित्रों के घरों में २० जून से पूर्व ही बड़ी संख्या में परमात्मा की अमरवाणी (चारों वेदों का हिन्दी भाष्य) पहुचाएं।

**प्रबन्धक :**

**दयानन्द संस्थान**

वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः, सेवाश्रम, पोस्ट अलीपुर, दिल्ली-३६


---



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

१. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य — मूल्य ५००)
२. सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड) — ६०)
३. वेद ज्योति — २०)
४. वेदांजलि : ३६५ मन्त्रों की व्याख्या — ३०)
५. सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या— पं० चमूपति) — २०)
६. ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में : क्षितीश वेदालंकार — २५)
७. संस्कारविधि [सजिल्द] : — १५)
८. सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र) — ३०)
९. अग्निहोत्र दर्पण (डा० रामनाथ वेदालंकार) — २०)
१०. सत्यार्थ-प्रकाश (१०-१५ इंच) स्थूलाक्षर — १५१)
,, ,, ,, (आर्ट पेपर पर) — २५१)
११. ज्योति स्तम्भ : — १५)
१२. वैदिक सम्पत्ति — १०१)
१३. योगासन : — २)
१४. योग और ब्रह्मचर्य : — ३)
१५. Concept of God — ५०)
१६. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश : — २५)
१७. LIGHT OF TRUTH — ५०)
१८. प्रकृति और सर्ग : आचार्य उदयवीर शास्त्री — ८)
१९. अथर्ववेद परिचय : — ६)

सूचीपत्र मुफ्त मंगाएं।

**दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर**

महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली-११००३६



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# उपनिषदों की कथाएं

—महात्मा नारायण स्वामी

आस्तिकता की उत्कृष्टता, ईश्वर का स्वरूप, उसकी व्यापकता अर्थात् वह हमारे अन्दर तथा सारे ब्रह्माण्ड में किस रूप में व्याप्त है, मनुष्य तथा ईश्वरीय नियमों की विभिन्नता, ईश्वर प्राप्ति के साधन, जीव का स्वरूप, शरीर की वस्तुस्थिति, शरीर के लिए स्नान का महत्व, मनुष्य की अपनी तथा इन्द्रियों की सीमा से आगे जाने पर ही पाप तथा व्याधियां हैं, आदि बातें सरल ढंग से बताई गई हैं।

बहनो और भाइयो !

जैसा कल बताया जा चुका है, नचिकेता ने यम से प्रश्न किया था कि मरने के बाद कुछ बाकी रहता है या नहीं? यम ने उत्तर दिया था कि मरने के बाद आत्मा रहती है। वह आत्मा नित्य है। कल यह भी बताया गया था कि किस प्रकार मनुष्य ऊंची और नीची योनियों को प्राप्त करता व कर सकता है। कुछ बातें ईश्वर के सम्बन्ध में भी बतलाई गई थीं।

जब कर्म-फल भोगने वाला जीवात्मा ईश्वर के समीप हो जाता है और वह ईश्वर को जान लेता है तो सब लोग उससे प्रेम करने लग जाते हैं और वह सब प्राणियों से प्रेम करने लग जाता है।

## अमेरिका की स्वतन्त्रता का युद्ध

अमेरिका के स्वतन्त्रता-युद्ध के उदाहरण से मालूम होता है कि किस प्रकार ईश्वर-विश्वासी लोगों से मनुष्य प्रेम किया करते हैं। युद्ध हो रहा



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

था, एक पक्का ईश्वरीय-विश्वासी भक्त रोगियों की सेवा शुश्रूषा किया करता था। जब वह किसी रोगी सिपाही के पास जाता तो उसको देखकर ही रोगी का आधा रोग दूर हो जाया करता था। इसका कारण लोगों का उसके प्रति अगाध प्रेम ही था। सचमुच ही आस्तिक से कोई घृणा नहीं करता है।

## वेद की शिक्षा

यजुर्वेद में कहा गया है कि विद्वान लोग ईश्वर को हृदयाकाश में देखते हैं। तुम यदि परमात्मा को जानना चाहते हो तो आत्मा से उसे जानो।

आगे कहा गया है :

'जो ज्ञानकांडी हैं—ज्ञानी हैं, कर्मकांडी हैं, या दोनों में से कोई भी है, ऐसे पुरुष ही ईश्वर को जाना करते हैं।'

## ईश्वर का स्वरूप

अरणियों में जिस प्रकार आग छिपी रहती है, जिस प्रकार माता अपने गर्भ की रक्षा करती है, उसी प्रकार ईश्वर को हृदय में स्थित समझ और उसे अपना प्रेम-पात्र बना कर ज्ञानकांडी और कर्मकांडी दोनों को प्रतिदिन उसकी स्तुति करनी चाहिए।

यज्ञ की आग अरणियों को घिसकर ही प्राचीन काल में पैदा की जाती थी, क्योंकि अग्नि अरणियों में छिपी हालत में थी। अग्नि तब काम करती है, जब वह व्यक्त हो जाती है। यह बात दियासलाई के सम्बन्ध में है। जगत् के पदार्थों में ईश्वर भी ऐसे ही व्याप्त है, परन्तु हम उसे नहीं देख सकते हैं। यदि हमारे देखने योग्य आंखें हों तो हम उसे देख सकते हैं, अन्यथा नहीं।

उपनिषद् में बताया गया है कि सूर्य्यादि का उदय, अस्त होना ईश्वर की सत्ता के कारण है। इसी प्रकार अन्य सब देव, पृथ्वी चन्द्रादि ईश्वर के आश्रय से ठहरे हुए हैं। कोई भी देव उसके नियम का उल्लंघन नहीं कर सकता। वे नियम अटल हैं, अनुल्लंघनीय हैं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## मनुष्य और ईश्वर के नियम

मनुष्य के नियम तोड़े जा सकते हैं, परन्तु ईश्वर के नहीं। ईश्वर की कुछ शिक्षाएं उपदेश के तौर पर हैं और कुछ नियम के रूप में हैं। ईश्वर के उपदेशों का हम उल्लंघन कर सकते हैं, क्योंकि हम कर्म करने में स्वतन्त्र हैं। हम स्वतन्त्रता से उनका पालन और उल्लंघन कर सकते हैं परन्तु उसके नियमों के सम्बन्ध में यह बात नहीं है। उसको कोई नहीं तोड़ सकता। उदाहरण के लिए गेहूं के बोने पर चना कदापि नहीं हो सकता।

## ईश्वर की व्यापकता

आगे बतलाया है कि "जो ईश्वर यहां है वही परलोक में है। जो वहां है वही यहां है। जो ईश्वर में भिन्नत्व मानते हैं वे मृत्यु से मृत्यु को प्राप्त करते हैं।" इस शिक्षा के प्रकाश में भिन्न-भिन्न सम्प्रदायवादियों को भिन्न-भिन्न ईश्वर नहीं मानने चाहिए, क्योंकि वेद और उपनिषद् में इसका निषेध किया गया है। उन्होंने ईश्वर एक ही बतलाया है।

## ईश्वर-प्राप्ति का उपाय

"यदि तुम ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हो तो बाहर की ओर न चल कर भीतर की ओर चलो। जब मनुष्य भीतर की ओर चलता है तभी उसे ईश्वर की प्राप्ति होती है। अंगूठे के बराबर मात्रा वाले हृदयाकाश में स्थित जीव के मध्य ईश्वर का निवास है अर्थात् वही स्थान है जहाँ ब्रह्म का साक्षात्कार हुआ करता है। उस ब्रह्म-ज्ञान को पाकर मनुष्य हमेशा प्रसन्न रहता है। वही पुरुष (ईश्वर) ऐसी ज्योति है जो विकार रहित है। संसार की ज्योतियों में यह बात नहीं पाई जाती है। वे सब ज्योतियां त्रुटिपूर्ण हैं। अग्नि भी विकारमय है। ईश्वर सबका मालिक है। सदैव एक-रस रहने वाला है। जो आज है वही कल है।"

## शिक्षा

तात्पर्य यह कि ईश्वर-प्राप्ति के साधन मनुष्य के भीतर ही हैं। जब हम अन्तर्मुखी वृत्ति से उसका साक्षात्कार कर लेते हैं तब हम संसार के प्रेम के पात्र बन जाते हैं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारा शरीर एक नगर है। उसके ग्यारह दरवाजे हैं और यह आत्मा का घर है। सिर, आंख, कान, नासिका का छिद्र, मुंह, नाभि, मल-मूत्र स्थान—ये ग्यारह द्वार हैं। कोई उसे पांच द्वार वाला कहते हैं, कोई नौ द्वार वाला, कोई ग्यारह द्वार वाला और कोई असंख्य द्वार वाला कहते हैं। शरीर के असंख्य छिद्रों के आधार पर ही ऐसा कहते हैं। उदाहरण के लिए हमारे समस्त शरीर के बालों की जड़ में छिद्र हैं, जिन्हें रोमकूप कहते हैं।

## स्नान का महत्व

स्वास्थ्य-रक्षा के लिए स्नान करना अत्यन्त आवश्यक है। किसी साम्प्रदायिक भावना से इसका कोई सम्बन्ध नहीं, इसका सम्बन्ध वैज्ञानिक तत्वों से है। हमारे शरीर की फैक्ट्री संसार की अन्य फैक्टरियों के सदृश नहीं है। यह निरन्तर चलती रहती है। इसमें बहुत मैला और कूड़ा पैदा हो जाता है। इस शरीर रूपी फैक्टरी की रचना बड़ी अद्भुत है। ईश्वर ने हमारे शरीर को छिद्रमय बनाया है। वह मैल सूक्ष्म से सूक्ष्म जगहों में दिखाई पड़ता है। खुर्दबीन से देखने पर बाल की जड़ में भी मैल मिलेगा। मैल की सफाई के लिए स्नान आवश्यक है। भोजन करने के समय या उसके बाद हाथ धोने इत्यादि का यही अभिप्राय है। यदि स्नान न किया जाए तो वे असंख्य छिद्र बन्द हो जाएंगे। मैल बनना जारी रहेगा और निकलना बन्द हो जाएगा। जिस हिस्से में भी मैल का निकलना बन्द होगा, वहीं रोग पैदा हो जाएगा। इसलिए प्रतिदिन स्नान करना चाहिए और ठीक रीति से करना चाहिए। इसीलिए लूई कोनी ने उपर्युक्त मैल को फॉरेन मैटर कहा है।

## नगर कैसा है?

यह नगर चेतना-सहित है, और नगर का मालिक आत्मा है जो स्वभाव से शुद्ध है। वह नगर के भीतर रहता है और नगर के कार्य में लाने से दुःखी नहीं होता और जब वह छोड़ देता है तब वह समस्त दुःखों से छूट कर मुक्त हो जाता है। तात्पर्य यह है कि शरीर जिस उद्देश्य से बना है उसी के लिए प्रयुक्त होने से मनुष्य दुःखी नहीं होता। कभी भी शरीर का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाप कहां है ?

जहां सीमा का अन्त होता है वहीं पाप होता है। इसका अभिप्राय यह है कि मनुष्य जब सीमा के भीतर रहता है तब सुखी है ; जब सीमा का उल्लंघन करता है तब दुखी रहता है।

## एक और उदाहरण

आंख का काम देखना है। हमें बतलाया गया है कि सबको मित्र की दृष्टि से देखो, पर-स्त्री को कुदृष्टि से न देखो। आंख का सदुपयोग इस और इसी प्रकार की शिक्षाओं के चरितार्थ करने में होता है। इसी प्रकार अन्य इन्द्रियों के सम्बन्ध में समझना चाहिए।

## अर्जुन का आदर्श

अर्जुन तप कर रहे हैं। इन्द्र उनकी तपस्या से भयभीत हो जाता है। उनके तपोभंग के लिए इन्द्र अर्जुन के पास एक सुन्दरी अप्सरा भेजता है। वह तप भंग करने में और अर्जुन को अपने हावभाव इत्यादि से विचलित करने में असमर्थ जानकर निराश हो जाती है। वह अर्जुन से कहती है—"अर्जुन ! क्या तुम मुझे नहीं देख रहे ?" अर्जुन कहते हैं—"देवि ! मैं तुम्हें देख रहा हूँ। तुम मुझे कुन्ती के रूप में दीख पड़ती हो।" जब इस प्रकार के भाव मनुष्य में आ जाते हैं तभी वह 'मातृवत् परदारेषु' की उज्ज्वल कहावत को चरितार्थ करता है।

इसी प्रकार व्याधि और रोग इत्यादि इन्द्रियों के दुरुपयोग के परिणाम होते हैं। आवागमन में रहकर जीव अपने कृत कर्मानुसार भिन्न-भिन्न योनियों में जाया करता है। जीव जहां जाकर रहा करता है उनमें में कुछ नाम इस प्रकार हैं :—प्राण, अपान, वसु, अन्तरिक्षस्थल, कुटी, आकाश, पृथ्वी ; जीव को नियम से उत्पन्न होने वाला, पर्वतों में उत्पन्न होने वाला, मर्यादाशील और हंस इत्यादि कहा गया है। यहां जीव को हंस दो दृष्टियों से कहा गया है।

१. जीव भी हंस की तरह एक जगह से दूसरी जगह जाया करता है। हंस जिस प्रकार दुग्धमिश्रित जल से दुग्ध पृथक् कर दिया करता है उसी



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकार जीव भी प्रकृति रूपी जल से ब्रह्म रूपी दुग्ध को पृथक् करके हंस ही नहीं अपितु परमहंस कहलाया करता है।

२. जीव प्राण और अपान से काम लेता हुआ शरीर के मध्य में रहता है। सम्पूर्ण इन्द्रियां उसकी आज्ञाओं का पालन करती हैं।

३. जीव के शरीर छोड़ देने के बाद वह शरीर निकम्मा रह जाता है।

४. शरीर में जीव आश्रित प्राण और अपान रहते हैं और शरीर में जीव के रहने से ही उनका तथा अन्य इन्द्रियों का जीवन रहता है। प्राण ऊपर खींचने को कहते हैं, अपान नीचे फेंकने को कहते हैं। उपदेश यह है कि प्राणायाम अवश्य करना चाहिए। आज के उन्नत व्यायामों के साथ यदि प्राणायाम क्रिया जाए तो मनुष्य सुखी रह सकता है।

### प्राणायाम

प्राणायाम से फेफड़े ठीक काम करते हैं। रक्त शुद्ध रहता है और कोई रक्त-विकार नहीं होता है। खारिश, कुष्ठादि रोग नहीं होते हैं।

### हार्टफेल

हार्टफेल का कारण कमजोर हृदय होता है। डर पाप से पैदा होता है। संसार का यह अटल नियम है। पश्चिमी सभ्यता बतलाती है कि पाप करना बुरा नहीं, अपितु पाप ऐसे करो जो प्रकट न हों। कितने दुःख की बात है।

### एक उदाहरण

गवर्नमेंट आफ इण्डिया के होम मेम्बर, जो पीछे से यू. पी. के गवर्नर हो गए थे, हार्टफेल से मरे। कहा जाता है कि वे अविवाहित थे। नैनीताल में उनकी मृत्यु पर शोक सभा हुई। उनके साथी एक बंगाली मिनिस्टर थे। उन्होंने बोलते हुए कहा—'उन्हें कोई याद रखे या न रखे परन्तु शिमले की मिसें हमेशा याद रखेंगी'। इस कथन का भाव अपने में स्वयं स्पष्ट है। प्राणायाम से और निष्पाप वृत्ति से हृदय पुष्ट होता है। ऐसा करने से हार्टफेल कभी नहीं होता।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## शव

आत्मा के शरीर से निकल जाने और कुछ बाकी न रह जाने का अभिप्राय यह है कि वह शरीर नहीं वरन् शव हो जाता है, और तब यह रुखसत करने योग्य हो जाता है।

## पिता-पुत्रादि का सम्बन्ध

पिता-पुत्रादि का भाव न आत्मा में है और न शरीर में। आत्मा और शरीर के मिले हुए संघात को हम पिता, पुत्र इत्यादि कहते हैं। ये सम्बन्ध तब तक रहते हैं जब तक यह संघात रहता है। यही इन सम्बन्धों की वास्तविकता है। जब मनुष्य इस वास्तविकता को समझ लेता है तब उसे मृत्यु विह्वल नहीं कर सकती। मनुष्य न प्राण से जिन्दा है और न अपान से। जिन्दा रहता है किसी दूसरी चीज से। उसी चीज के ये दोनों आश्रित हैं। आत्मा के शरीर के साथ रहने को "जीवन" और शरीर से वियोग को "मृत्यु" कहते हैं।

## ईश्वर

जो सोते मनुष्य के भीतर जागा करता है, जो शरीर के भीतर काम किया करता है, उसे ही ब्रह्म, शुक्र इत्यादि कहते हैं।

## ब्रह्माण्ड में ईश्वर किस प्रकार रहता है?

आत्मा के मौजूद रहने मात्र से जैसे शरीर का काम चला करता है उसी प्रकार ईश्वर के ब्रह्माण्ड में रहने मात्र से ही संसार का काम चला करता है और सैकड़ों प्रकार की रचनाएं होती रहती हैं। ईश्वर जगत् की, मनुष्य की उत्पत्ति का निमित्त कारण है। वह महान् है। जितने लोक हैं सब उसके आश्रित हैं। जिस प्रकार अग्नि एक भून है और जिस वस्तु के भीतर होती है उसी तरह नजर आने लगती है—जिस तरह ईश्वर जगत् में अपनी व्यापकता से जिस-जिस वस्तु के तुल्य रूप वाला होता है परन्तु उस वस्तु से वह सदैव पृथक् रहता है जैसे कमल जल से। न ईश्वर उसमें लिप्त होता है, न वह वस्तु ईश्वर में लिप्त हो सकती है। उस लिप्त होने की बात को स्पष्ट करने के लिए एक उपमा दी गई है। आंखों में देखने की योग्यता सूर्य से आती है, इसलिए कहा गया है कि समस्त लोक का चक्षु होते हुए भी जिस प्रकार सूर्य आंखों के वाह्य विकार से पृथक् रहता है



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीव

उसी प्रकार जगत् बिना ईश्वर संसार की बुरी वस्तु में व्याप्त होते हुए भी उसके समस्त विकारों से अलग रहता है।

उपदेश

ईश्वर को सदा ऐसा समझना चाहिए कि वह सब जगह मौजूद है। अगर हम ऐसा समझ लें तो पाप करने के लिए कोई जगह नहीं मिलेगी और हम पापों से बच जाएंगे। नास्तिकता से ही पाप होते हैं। जो लोग ईश्वर से मुख मोड़ते हैं वे पाप से रिश्ता जोड़ते हैं। पुनः मनुष्य इन उपायों द्वारा तभी फायदा उठा सकता है जब वह ईश्वर की ओर चलता है। □

---


# यज्ञशाला के लिए

ईंटें, संगमरमर, लोहा, सीमेंट भेजिए

## १००१ रु० देने वालों का नाम पत्थर पर अंकित होगा

५००१) या अधिक देने पर जन-ज्ञान में चित्र भी प्रकाशित होगा

## १०-२० हज़ार रु. खर्च कर अपने किसी प्रिय जन की स्मृति में कमरा बनवाएं

□□

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान,

२२८६, आर्य समाज रोड, करौल बाग, नई दिल्ली-५


---



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# अमी रस पिलाओ कृपा करके मुझको,
# रहूं सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता।

—आचार्य सुभाषचन्द शास्त्री

कदा मृडीकं सुमना अभिख्यम्।

ऋ० ७।८६।२॥

हे प्रभो ! किस दिन मैं निर्मल एवं पवित्र मन वाला होकर सच्चिदानन्दमय आपका दर्शन कर सकूंगा और कब मैं सर्वदेवगण वरणीय मंगलमय रूप वरुणदेव में अन्तर्भूत तदात्मभूत हो सकूंगा। हे इन्द्र ! तेरी कृपा से मेरी दर्शनाभिलाषा पूर्ण हो।

कितने सौभाग्यशाली हैं वे लोग जिनकी अन्तरात्मा की प्यास ही प्रभुदर्शन बन गई है। साधारण सांसारिक जीवन को छोड़कर एक साधक के जीवन में प्रवेश करने की आकांक्षा है। संसार को नहीं; सत्यस्वरूप को पाने की प्यास है।

अहा ! धन्य हैं वे जन, जो सत्य के लिए प्यासे हो गये हैं। करोड़ों लोग धरती पर पैदा होते हैं, परन्तु इनमें से बहुत कम लोग हैं, जो सत्य के प्यासे होते हैं। सत्य की प्राप्ति उनके प्राणों की प्यास बन जाती है। जैसे महात्मा बुद्ध, महर्षि दयानन्द, गुरु नानक, स्वामी श्रद्धानन्द, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द आदि महापुरुषों की बन गई थी। सत्य मिल जाये, तब तो परम सौभाग्य है ही, परन्तु सत्य को पाने की प्यास भी अगर किसी में पैदा होती है, तो वह भी कोई कम सौभाग्य की बात नहीं। अगर सत्य न भी मिले तो कोई हर्ज नहीं, लेकिन सत्य की प्यास ही न पैदा हो तो बहुत बड़ी हानि है। सत्य के लिए प्रयास किया, मेहनत की, आकांक्षा की, संकल्प किया और हमसे जो कुछ हो सका, वह किया। सत्य नहीं उपलब्ध हुआ तो कोई बात नहीं। लेकिन सत्य को पाने की प्यास को हम अपने में पैदा न कर सके, तो हमारा जीवन हेयता से भर जायेगा, और हम किसी काम के नहीं रहेंगे।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्य को पा लेने से भी अपने भीतर यथार्थ प्यास को पैदा करना अधिक महत्त्वपूर्ण है। परन्तु प्यास उस विराट् को, आनन्द निधान को पाने की होनी चाहिए, न कि क्षुद्र को, जड़ को पाने की। क्षुद्र को प्राप्त करने पर भी जीवन शान्ति और आनन्द से खाली ही रहेगा, परन्तु विराट् परमात्मा को पाने में असफल होने पर भी पाने की प्यास से ही व्यक्ति का जीवन आशा से, उत्साह से, शान्ति से भर जायेगा।

जिस क्षण हम महान् सत्य की प्राप्ति हेतु कामना करने लगते हैं, उसी क्षण हमारे भीतर कोई श्रेष्ठ बीज अंकुरित होने लगता है। याद रखिये परमात्मा या सत्य हमें बाहर नहीं मिलेगा। उसके बीज हमारे भीतर विद्यमान हैं। परन्तु वे तभी विकसित होंगे जब हम प्यास की तपिश और प्यास की गर्मी पैदा कर सकेंगे।

अतएव वेद में कहा है —

शुद्धाः पूताः भवत यज्ञियासः।

शुद्ध पवित्र विचार एवं कर्म करने वाले बनो। हमारे भीतर जितनी श्रेष्ठ अभिलाषा होगी, भीतर के बीज उतने ही स्पन्दित होने लगते हैं, और उनमें अंकुर निकलने की क्षमता पैदा होती है। यह कब होता है ? जब आपके भीतर परम सत्य को, विराट् को पाने का संकल्प पैदा हो जाता है। परम सत्य की आकांक्षा जागृत होते ही भीतर कुछ उत्सुकता, महत्वपूर्ण आन्दोलन शुरू हो जाता है। इस आन्दोलन की रक्षा करनी है। बीज अंकुरित हो जाये, इतना ही पर्याप्त नहीं। उसका संवर्धन करना होगा।

जमीन पर बहुत-से बीज उगने लगते हैं, लेकिन उनमें से बहुत कम वृक्ष बन पाते हैं। सबमें करोड़ों बीज पैदा करने की क्षमता थी, सभी वृक्ष बन सकते थे। एक छोटे से बीज में इतनी शक्ति है कि पूरा जंगल पैदा कर सके, सारी जमीन पर वृक्ष ही वृक्ष हो जायें। लेकिन संरक्षण के अभाव में इतनी विराट् शक्ति का वह बीज यों ही नष्ट हो जाता है।

उस छोटे-से बीज में इतनी विराट् शक्ति हो सकती है, तो क्या वैसी शक्ति मनुष्य में नहीं है ? इससे अधिक शक्ति मनुष्य के भीतर छिपी हुई है। एक अत्यन्त क्षुद्र पत्थर के अणुओं का विस्फोट कर दिया जाये तो बहुत बड़ी ऊर्जा पैदा होती है। बहुत बड़ी शक्ति का जन्म होता है। मनुष्य की चेतना का अणु विकसित हो सके, उसका विस्फोट हो सके, तो उससे उत्पन्न ऊर्जा से सच्चिदानन्द प्रभु का प्रत्यक्ष कर दिव्यानन्द की अनुभूति आप



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

नहीं कर पायेंगे ? फिर आपका जीवन आनन्द से, शान्ति से परिप्लावित नहीं होगा ? अवश्य होगा।

परन्तु यह सब कुतूहल से नहीं होगा। कुतूहल से साधना में प्रवेश नहीं हो सकता। अकेली जिज्ञासा से नहीं, मुमुक्षा—एक गहरी प्यास की जरूरत है। कैसी होती है गहरी प्यास ?

कल्पना कीजिए अगर आप वर्षों के दिनों में मरुस्थल में पानी की खोज में हैं, कभी पानी नहीं मिला; और प्यास इतनी तीव्र हो गई कि मौत का कारण बन रही है। अगर उसी वक्त आकर कोई कहे कि हम पानी देते हैं लेकिन जान के मूल्य पर अर्थात पानी देकर जान लेंगे। आप इस शर्त पर भी राजी हो जायेंगे। आप सोचेंगे, मरना तो है ही, प्यासे रह कर मरने से पानी पीकर मर जाना बेहतर है।

इतनी प्यास अगर सत्य को पाने की आपके भीतर होती है, तो उस तीव्र प्यास के दबाव से, उस आकांक्षा से इतना अधिक दबाव होगा कि जीवन का सत्य स्रोत भी फूटने लगेगा, और वह विकसित होने लगेगा।

अब हम आत्मनिरीक्षण करके देखें कि क्या सचमुच ऐसी प्यास गहरी प्यास, प्रभु को पाने की, परम सत्य को उपलब्ध करने की, हममें है ? अगर नहीं, तो कुछ भी नहीं हो सकेगा ? करेंगे तो बनावटी, दिखावे के लिए, उस करने में कुछ सार नहीं होगा। निष्प्राण चेष्टा से कुछ भी फलित नहीं होता। फिर साधना जिम्मेदार नहीं, आप ही स्वयं इसके उत्तरदायी होंगे। क्योंकि प्रभु पूर्ण है, उसकी सृष्टि पूर्ण है, सृष्टि के नियम पूर्ण हैं, इसलिए निरन्तर पूर्ण प्रयास से ही पूरी प्यास पैदा होगी। अगर ऐसी प्यास आप में है, तो सत्य की उपलब्धि के लिए रास्ता खुल जाएगा।

महात्मा बुद्ध एक गांव में पहुंचे। एक आदमी ने आकर उनसे कहा—आप रोजाना कहते हैं कि हर व्यक्ति मोक्ष पा सकता है, तो फिर हर व्यक्ति मोक्ष क्यों नहीं पा लेता ?' महात्मा बुद्ध ने कहा—"मेरे मित्र ! पहले एक काम करो। शाम को गांव में जाकर सभी से यह पूछ कर आना कि वे क्या पाना चाहते हैं। एक सूची बनाओ। हरेक के नाम के आगे लिखो कि वह क्या पाना चाहता है।

वह आदमी गांव में हरेक से पूछने लगा। थोड़े-से लोग थे उस गांव में; सबने जवाब दिया। वह शाम को सूची बनाकर ले आया बुद्ध के पास। बुद्ध ने पूछा—"कितने लोग हैं जो मोक्ष को पाना चाहते ?" वह बहुत

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैरान था, क्योंकि किसी ने भी "मोक्ष पाना चाहता हूं।" नहीं लिखवाया था। बुद्ध ने कहा—"हर आदमी मोक्ष पा सकता है, परन्तु पाना चाहता है या नहीं ? यह मैं नहीं कह सकता। मोक्ष पाने की क्षमता और पाने की आकांक्षा दोनों अलग-अलग चीजें हैं।'

यदि आप सचमुच परम सत्य को पाना चाहते हैं तो इस धरती की कोई ताकत आपको रोकने में समर्थ नहीं। अगर नहीं पाना चाहते, तो दुनियां की कोई शक्ति आपको मोक्ष नहीं दिला सकती। सत्य को प्राप्त करने का और जीवन को महान् बनाने का सबसेप्रथम सूत्र है गहरी प्यास—सच्ची लगन। यही साधना के क्षेत्र में प्रवेश करने का मार्ग प्रशस्त करती है।

प्रभो ! हम सब में ऐसी प्यास पैदा करो, ऐसी लगन दो जो बालक मूल शंकर को लगा दी थी, जिससे उन्होंने सच्चे शिव को पा लिया और निहाल हो गये। □

---


# जन-ज्ञान [मासिक] में विज्ञापन दीजिए

—यह आपको एक लाख पाठकों
से मिलवायेगा।

—आपके उत्पादन-संस्थान का उनसे परिचय
करवायेगा।

—जन-ज्ञान केवल एक पत्रिका नहीं, एक
आन्दोलन है।

—एक यज्ञ है यह आप इसमें आहुति भी देंगे--
जब आप जन-ज्ञान में विज्ञापन देंगे।


---



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# मानसिक क्षमताएं कैसे बढ़ाएं?

मन के वे पहले गुण जिन्हें प्रशिक्षित करना है 'अवलोकन' के वर्ग में गिने जा सकते हैं। हम कुछ चीजों की ओर ध्यान देते हैं और कुछ की ओर उपेक्षा कर जाते हैं। और जिन चीजों की ओर ध्यान देते भी हैं उनका अवलोकन कम ही करते हैं। हम पूरे मनोयोग के बिना सरसरी नजर डालकर सामान्य बोध ही प्राप्त करते हैं। ज्यादा नजदीक से देखने पर आस-पास की चीजों से अलग उसके स्थान, रूप, स्वभाव का पता चलता है। अवलोकन की क्षमता को पूरी तरह एकाग्र किया जाए तो हमें तीनों मुख्य इन्द्रियों द्वारा प्राप्त किया जा सकने वाला पूरा ज्ञान मिल सकता है और अगर हम छूकर या चखकर देखें तो हमें उस वस्तु के बारे में, उसके स्वभाव और उसके गुणों के बारे में पांचों ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त हो सकने वाली पूरी जानकारी मिल जाती है। जो लोग छठी ज्ञानेन्द्रिय का भी उपयोग कर सकते हैं, जैसे कवि, चित्रकार, योगी, वे ऐसा बहुत कुछ इकट्ठा कर सकते हैं जो साधारण देखने वाले की आंख से छिपा रहता है। वैज्ञानिक अपनी खोज द्वारा ऐसे ब्यौरों का पता लगा लेता है जो अधिक सूक्ष्म अवलोकन से ही जाने जा सकते हैं। ये अवलोकन की क्षमता के ही अंश हैं, यद्यपि स्पष्ट है कि इसका आधार है, मनोयोग जो केवल गहरा भी हो सकता है और गहरे के साथ सूक्ष्म भी। यदि हमारे अन्दर सात्विक ग्रहणशीलता की आदत और एकाग्रतापूर्ण मनोयोग हो तो हम एक सरसरी नजर में भी बहुत कुछ जान सकते हैं। अध्यापक को पहली चीज यही करनी चाहिए कि विद्यार्थी में ध्यान को एकाग्र करने की आदत डालें।

हम एक फूल का उदाहरण ले सकते हैं—उस पर यूं ही एक सरसरी नजर डालकर उसकी गंध, उसके रूप-रंग के बारे में एक चलता-सा विचार बना लेने की जगह विद्यार्थी को फूल को जानने के लिए प्रोत्साहित किया जाए—वह अपने मन में उसके रंग की ठीक छटा, विशेष चमक, गंध की ठीक-ठीक तीव्रता, उसके रूप की रेखा और आकृति की ठीक छाप ले। स्पर्श, फूल की बनावट और विशेषताओं के बारे में पूरी तरह जान ले। उसके



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाद फूल के भाग अलग-अलग करके उनकी बनावट की उसी सावधानी के साथ परीक्षा की जाए। यह सब एक बोझिल काम की तरह नहीं, बल्कि मनोरंजन की चीज की तरह किया जाए। इसके लिए विद्यार्थी के अनुकूल इस प्रकार के प्रश्न तैयार किए जाएं जो एक के बाद एक चीज के अवलोकन और अन्वेषण की ओर आकर्षित करें, यहां तक कि वह पूरी चीज पर, बिना जाने ही अधिकार पा ले।

स्मरण-शक्ति और मूल्यांकन के गुणों की इसके बाद जरूरत होगी और इन्हें भी उसी तरह बिना जाने बढ़ावा देना चाहिए। विद्यार्थी को कोई पाठ याद कराने के लिए बार-बार नहीं करवाना चाहिए। यह स्मृति प्रशिक्षण का यांत्रिक, बोझिल और नासमझी का तरीका है। अब पहले जैसा ही, पर उससे भिन्न फूल बच्चे के हाथ में दिया जाना चाहिए और उसे उसका अवलोकन उसी सावधानी के साथ करने की प्रेरणा देनी चाहिए जिसमें मुख्य उद्देश्य यह हो कि वह उन दोनों की सादृश्य और भिन्नताओं पर ध्यान दे। इस प्रकार के अभ्यास को रोज-रोज दोहराया जाए तो स्वाभावतः स्मृति प्रशिक्षित हो जाएगी। इतना ही नहीं, तुलना और वैषम्य के अव-लोकन करने वाले मानसिक केन्द्रों का भी विकास होगा। सीखने वाला आदत से ही चीजों की समानता और असमानता देखने लगेगा। इस क्षमता और अभ्यास के पूर्ण विकास को प्रोत्साहन देने के लिए अध्यापक को पूरा प्रयास करना चाहिए। इसी समय मन को वंश और जाति के नियमों का परिचय मिलने लगेगा। विकसनशील बाल-मन का ठीक प्रकार अनुसरण और पथ-प्रदर्शन करके वैज्ञनिक अभ्यास, वैज्ञानिक वृत्ति और वैज्ञानिक जानकारी के मूलभूत तथ्यों को थोड़े ही समय में बालक के स्थायी उपकरण बनाया जा सकता है। फूलों, पत्तों, पौधों, पेड़ों का अवलोकन और तुलना करने से मन के ऊपर नामों और शुष्क सूचनाओं के भार के बिना ही वनस्पति-शास्त्र के ज्ञान की आधारशिला रख दी जाएगी। अस्वाभाविक आदतों से बिगड़े बिना, प्रकृति से आए हुए ताजा-स्वस्थ मानव-मन को इस प्रकार की रटाई से घृणा होती है। इसी प्रकार तारों के अवलोकन से ज्योतिष, मिट्टी-पत्थर आदि से भूगर्भ, कीड़े-मकोड़ों और जानवरों के अव-लोकन से कृमि-शास्त्र और प्राणी-शास्त्र की नींव रखी जा सकती है। इसके कुछ बाद औपचारिक शिक्षण या मन पर किताबी ज्ञान या सूत्रों का भार डाले बिना केवल परीक्षणों के द्वारा रसायन-शास्त्र का आरम्भ हो सकता है। ऐसा कोई वैज्ञानिक विषय नहीं है जिस पर पूर्ण और स्वाभाविक



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधिकार पाने की तैयारी बचपन में इस तरह भिन्न प्रकार की चीजों के और वर्गों के अवलोकन, तुलना, स्मरण और मूल्यांकन के द्वारा इन्द्रियों के प्रशिक्षण से न की जा सके। यह आसानी से किया जा सकता है और विद्यार्थी के मन में रुचि और तल्लीनता पैदा हो सकती है। एक बार रुचि पैदा हो जाए तो हम यह विश्वास कर सकते हैं कि बालक अपने खाली समय में पूरे उत्साह के साथ उसे आगे बढ़ाएगा। इससे बड़े होकर हर चीज कक्षा में ही करने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

स्वभावतः अन्य क्षमताओं के साथ मूल्यांकन और निर्णय की क्षमता भी प्रशिक्षित होती जाएगी। पग-पग पर बालक को यह निर्णय करना होगा कि रंग, ध्वनि, गंध आदि का कौन-सा भाव, मात्रा, मूल्य ठीक है और कौन-सा गलत है। प्रायः निर्णय और प्रभेद बहुत ही सूक्ष्म और नाजुक होते हैं। शुरू में बहुत सी भूलें होतीहैं, पर सीखने वाले को यह बताना होगा कि अपने निर्णय पर विश्वास करे पर उसके फल के साथ चिपटा न रहे। तुम देखोगे कि शीघ्र ही निर्णय की क्षमता की गई मांगों का उत्तर देने लगेगी, अपने आपको भूल-भ्रांति से शुद्ध करके बारीकी के साथ ठीक-ठीक निर्णय करने लगेगी। सबसे अच्छा तरीका यह है कि बालक को यह आदत करवाई जाए कि वह अपने निर्णयों की तुलना औरों के निर्णयों से करे। जब वह भूल करे तो पहले उसे यह बतलाया जाए कि वह कहां तक ठीक था और वह भूल क्यों हुई: बाद में उसे ये चीजें अपनेआप देखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। वह जब-जब ठीक निकले तब-तब इस बात की ओर ध्यान खींचा जाए ताकि उसके अन्दर विश्वास जागे।

तुलना करने और समानता-विषमता देखने से सादृश्य देखने का केन्द्र भी जागेगा और विद्यार्थी सादृश्य देखकर साम्य का अनुमान करना सीखेगा। लेकिन इस क्षमता को प्रोत्साहन देने के साथ उसे इसकी सीमाओं और भूलों का भी परिचय करा देना चाहिए। इस प्रकार वह शुद्ध सादृश्य देखने के लिए अभ्यस्त हो जाएगा जो ज्ञान-प्राप्ति के लिए अनिवार्य है।

सीधे तर्क को छोड़कर एक और क्षमता है जिसे हम छोड़ आए हैं—और वह है कल्पना। वह बहुत आवश्यक और अनिवार्य यन्त्र है। इसे तीन कार्यों में बांटा जा सकता है:—१. मानसिक बिम्ब बनाना, २. विचारों और बिंबों के नये संयोजन, ३. वस्तुओं में आत्मा का सौन्दर्य, लालित्य,



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महानता, गुप्त संकेत, भाव और समस्त संसार मे फैले हुए आध्यात्मिक जीवन का रसास्वादन। यह उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उन इन्द्रियों का प्रशिक्षण जो बाहरी चीजों को देखतीं और उनकी तुलना करती हैं। लेकिन इसके लिए ज्यादा विस्तृत और विशद विवेचन की जरूरत है।

मानसिक क्षमताओं का उपयोग पहले वस्तुओं पर होना चाहिए और बाद में शब्दों और विचारों पर। भाषा के साथ हमारा व्यवहार बहुत ज्यादा औपचारिक होता है। शब्दों के लिए सूक्ष्म संवेदन का अभाव बुद्धि को तीक्ष्ण कर देता है और उसकी क्रिया की सूक्ष्मता और उसके सत्य को सीमित कर देता है। पहले मन को शब्द का, उसके रूप, उसकी ध्वनि और उसके भाव का भली-भांति अध्ययन करना चाहिए, फिर उस रूप की वैसी ही अन्य रूपों के साथ सादृश्य और विभेद की दृष्टि से तुलना करनी चाहिए। इससे व्याकरण की समझ की नींव रखी जाएगी, फिर समान शब्दों की सूक्षम अर्थ छांटके भेद देखने होंगे, भिन्न-भिन्न प्रकार के वाक्यों का गठन और उनके लय को देखना होगा। इससे साहित्यक क्षमता और वाक्य-रचना का आधार बनेगा। और यह सब अनौपचारिक रूप से, नियम पढ़ाए और रटाए बिना, बालक के अन्दर उत्सुकता जगाकर करना होगा। सच्चे ज्ञान की नींव अर्थ पर खड़ी होती है। जब वह अर्थ पर पूरा विश्वास पा लेता है तब वह अपनी जानकारी को औपचारिक रूप देता है।

(अग्निशिखर से साभार)

---

## चुटकुले

एक आदमी गधे को लिये जा रहा था, तो सामने से आते हुए एक फौज सिपाही ने कहा—"अपने भाई को क्यों बांध रखा है ?"

उत्तर मिला—"भाई साहब, इसलिए कि कहीं यह भी फौज में भर्ती न हो जाये।"

× × ×

एक व्यापारी का लड़का बड़ी तीक्ष्ण बुद्धि का था। परीक्षा में १०० में से ९५ नम्बर प्राप्त किए तो खुशी-खुशी घर आकर पिताजी को बताने लगा—"पिताजी मैंने सौ में से ९५ नम्बर प्राप्त किए हैं।"

पिता ने बड़े ही क्रोधित होकर कहा—"अरे नालायक, हम तो सौ का सवा सौ करते हैं और तू मूल में से भी पांच गंवा आया।"

---



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# पुत्र से बढ़कर पुत्री का महत्त्व

—डा० प्रज्ञादेवी आचार्या

सन्तान के निर्माण में माता की भूमिका यद्यपि सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है तथापि पुत्री का निर्माण लोक एवं परलोक दोनों के लिए सुखावह है। उत्तम शिक्षण, गृहविज्ञान, हस्तकला कौशल के साथ-साथ सुयोग्य माता अपनी प्यारी पुत्री के बढ़ते हुए वयः क्रम के अनुसार बहुत चतुरता से उसका मनोवैज्ञानिक अध्ययन करती हुई जिन दृढ़, किन्तु मृदुल व्यावहारिकताओं को अपनी सूक्ष्म बुद्धि से उपस्थित करती है, माता माता की वही सूक्ष्म दृष्टि पुत्री को उत्पथ पर जाने से रोकने के लिए उसका रक्षा कवच बन जाती है।

माता के पुत्री के प्रति किये गये इस मनोवैज्ञानिक अध्ययन का प्रभाव पुत्री के वर्तमानकालिक दिशानिर्देश तक ही सीमित नहीं रहता अपितु इससे भावी सुयोग्य माता का पथ निर्मित हो जाता है। विवाह के अनन्तर पराये घर में जाने पर ऐसी सुदक्ष बेटी विकट से विकट समस्याओं के उपस्थित हो जाने पर अपनी धैर्यवती मेधाविनी माता को आदर्श प्रतिमान मानकर हंसते-हंसते उन समस्या का समाधान निकाल लेती है। वस्तुतः बेटी ने सतवन्ती सीता को तो देखा नहीं होता जिससे उस अप्रत्यक्ष का अनुकरण कर सके; वह तो अपनी पूर्ण कामा मां की आकृति में ही सीता, दमयन्ती आदि आदर्श-चरित्र नारियों के प्रतिबिम्ब को देखती है। वही उसका प्रतिमान होता है। वह जैसे ही कुछ बड़ी होने लगती है, वैसे ही माता के जीवन में आये ऊहापोहों को समझने लगती है और उसके हृदय में माता के अपार धैर्य, सहनशीलतादि गुण अमिट प्रभाव डालने लगते हैं। बस यही, माता के द्वारा पुत्री को दिया हुआ रसायन बनता है, जिसका उपयोग वह अपने भावी जीवन में शिवा, सुमना, सुवर्चा, अरेपसा (निष्पाप) पत्नी बनकर एवं आकाश भी जिसके सामने नम जाये ऐसी साहसी माता बनकर करती है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यौवनावस्था को प्राप्त होते ही प्रायः प्रत्येक पुत्री की यही मानसिकता होती है कि वह भी माता के बनाये इस सुखी संसार का दूसरा ढांचा तैयार करेगी, सबको इसी प्रकार अपने त्याग भाव से सुखी और सन्तुष्ट रखते हुए परिवार में समादृत होगी। इस प्रकार पुत्री का भावी पथ माता द्वारा ही बनता है।

## परार्थ निर्माण

प्रायः प्रत्येक माता-पिता कन्या को पढ़ा लिखाकर, गुण विभूषिता बनाकर "अर्थो हि कन्या परकीय एव" की उक्ति के अनुसार यज्ञ-मण्डप में बैठकर अग्नि को साक्षी मानकर उनका दान (कन्या दान—कन्या प्रतिग्रहण) उत्तम सृष्टि क्रम चलाने के लिए करते हैं। यह अपने आप में वस्तुतः ऐसा ही महनीय त्याग है जैसे एक आचार्य 'तं रात्रीस्तिस्र उदरे बिभर्त्ति' के अनुसार ज्ञान, कर्म, उपासना रूपी तीनों विद्याओं को ब्रह्मचारी में धारण कराने के लिए मानो अपने गर्भ में लेता है, अपने सन्निकट लाता है। तदनन्तर उसे त्रयीविद्या से विभूषित कर उसका समावर्त्तन संस्कार कर राष्ट्र के लिए उस ब्रह्मचारी दे देता है। निर्माण करना और फिर उस उत्तम वस्तु का परार्थ त्याग करना—अर्थात् निर्माण परार्थ है स्वार्थ के लिए नहीं। जितनी उत्तम वस्तु का त्याग करेंगे उतना ही फल गहन सुखदायी होगा। अतः पूर्ण मनोयोग से वर्षों समय लगाकर 'देय वस्तु का' निर्माण सुयोग्य माता एव आचार्य करते हैं।

वे दान क्या करते हैं मानो पुत्री या ब्रह्मचारी के रूप में अपना सम्पूर्ण मनोरथ ही दूसरे परिवार या राष्ट्र को सौंपते हैं। पराये घर से पुत्री की प्रशंसा आये तो इहलोक धन्य हो गया तथा कर्त्तव्य कर्म पूर्ण करने से परलोक भी बन गया। यही कन्या के निर्माण का फल है। चूंकि सृष्टि की प्रक्रिया के निर्माण की आधार शिला नारी ही है अतः कन्या में संस्कारों के बीजारोपण का कार्य अत्यन्त सावधानी के साथ माता द्वारा होना चाहिये। इस दृष्टि से पुत्री का होना पुत्र से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है, यह निर्विवाद है।

## संस्कारों की पूंजी

माता को पुत्री के निर्माण में अपनी जिस मानसिकता का अध्यारोपण उस पर करना पड़ता है वह एक विलक्षण वस्तु है। शुभ संस्कारों से युक्त



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ादि गुणों से परिपूर्ण ऐसी बेटी जिस समय अपना नया संसार बनाने के आगे कदम रखती है, उस समय वह अपने आप में पूर्ण सन्तुष्ट एवं स्वस्त होती है। दुर्जेय एवं जटिल परिस्थितियों में भी "मैं अपने सद्गुण-ी हथियार से सर्वत्र सफलता प्राप्त कर लूंगी, शान्ति से मैं सबका मन त लूंगी"—यह विश्वास उसे सदैव अविचल बनाये रखता है। मां के रा प्राप्त संस्कारों की इस पूंजी को जो पुत्री प्राप्त कर लेती है उसे ावट का दोहरा जीवन जीने की आवश्यकता नहीं होती। वह तो विजय रव एवं उल्लास को लिये हुए गृहस्थाश्रम में प्रवेश करती है, जैसे कोई क अध्यापक द्वारा दिये गये 'होम वर्क' को अभिभावक की सहायता से ी प्रकार सम्पादित कर लेने पर विजय गौरव से अपनी कक्षा में प्रवेश ता है। कक्षा के अन्य बालकों की अपेक्षा वह अपने आपको अच्छा झता है, सन्तुष्ट और प्रसन्न पाता है। इस प्रकार के आत्मविश्वास से ं को भर देना ही माता का मुख्य कार्य है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते य वधू को यही आशीर्वाद समागत देवगण देते हुए कहते हैं—

> हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा।
> ऊर्ध्वमिमध्वरं दिवि देवेषु होत्रा यच्छ॥
>
> (यजु० ६।२५)

अर्थात् हे वधू ! हम तुझे हार्दिक एवं मानसिक सुख के लिए आशीर्वाद हैं कि तू दिव्य गुण सम्पन्न पुत्री एवं प्रतापी पुत्र को प्राप्त कर तथा इस स्थ रूपी यज्ञ को अपनी सद्भावनाओं से सुखप्रद बना।

यह एक तथ्य है कि आज कन्या शिक्षा के प्रति माता की असावधानी कारण ही विवाहित पुत्रियों को टीपटापमय, बाह्यशृंगार-पटार वाला रा जीवन जीने के लिए बाध्य होना पड़ता है। गृह सम्राज्ञी का परिवार प्रत्येक कड़ी को प्रसन्न रखना अनिवार्य दायित्व है। विचार एवं भाव-कतायें भिन्न-भिन्न हैं। कुछ का पालन करना है, किन्हीं को कुछ देना ऐसी जिम्मेदारियों का निर्वाह यथोचित रीति से वही वधू कर सकती है ने मां की घुट्टी में उदारता, दया एवं समदृष्टि का पाठ पढ़ा हो।

परिवार केवल न्याय से नहीं चलते, 'दया' से चलते हैं। न्याय तो वार में प्रत्येक भाई या बहिन को समान वितरण की शिक्षा देता है। तु दया कहती है कि "परिवार के कमजोर घटक को अधिक सहयोग " समदृष्टि का निर्वाह बहुत सावधानी से करते हुए परिवार के निर्बल



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घटक के प्रति यह सहयोग किसी को भी उच्च भूमि पर खड़ा कर देता है। माता से प्राप्त शिक्षा के कारण इन्हीं सद्गुणों का विकास, अविचल विश्वास किसी भी पुत्री में होता है। छोटी-छोटी बातें बचपन से ही माता उपदेश एवं निर्देश द्वारा बच्चों को देने लगती है जो उसके जीवन स्रोत को सिंचित करने लगती हैं। 'इस प्रकार भोजन चबा-चबाकर, थाली पोंछकर खाओ बिखेरो नहीं, ऐसे चलो, बात करते समय व्यर्थ नाक-भौं न सिकोड़ो, सोते समय पैर धोकर सोओ, भोजन करके तुरन्त मत सोओ, ईश्वर का ध्यान करके सोओ, प्रातः नमस्ते करो"—ये छोटी-छोटी बातें कहते-कहते जब स्वभाव का अंग बन जाती हैं तब इन्हें पूरा किये बिना दिनचर्या अपूर्ण लगने लगती है।

इस प्रकार माता वह धुरी है जिसके इर्द-गिर्द पुत्री का जीवन पल्लवित एवं विकसित होता है। माता की सुशिक्षा की उपमा अनुपम है क्योंकि माता मानव को "नास्ति मातृसमो गुरुः" के अनुसार श्रेष्ठ एवं प्रथम गुरु है। गृहस्थाश्रम में आकर कष्टों को सहन करने की अपार क्षमता माता सीता ने अपनी माता "योगिनी" की गोद में ही प्राप्त की थी और तभी गौरव के साथ अनसूया माता के वन में कष्ट सहन करने का उपदेश देने पर कह दिया था कि—"पाणिप्रदानकाले जनन्या मे ऽनुशिष्टम्" अर्थात् गृहस्थ जीवन में साहस के साथ कष्ट सहन करने का यह उपदेश मेरी माता ने विवाह से पूर्व मुझे दे दिया था। अच्छा हुआ आपने पुनः यह उपदेश सुनाकर मुझे उपकृत किया है। इस प्रकार शुभ संस्कारों के रूप में पुत्री के लिए 'मां की देन' अमोघ स्थिर निधि है, अक्षयवट है। प्रत्येक क्षेत्र में सम्मान से जीने के लिए यह उत्तम साधन है। जीवन का मर्म यहीं आकर विकसित होता है तथा कर्म पूर्ण होते है। जिसे यह शिक्षा गर्भ से ही प्राप्त होती है वह मानो इसी जीवन में सुधर जाता है। □

---

# हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा

---



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# लव और कुश

—स्वर्गीय प्रेमचन्द्र शास्त्री

लव और कुश महाराजा श्री रामचन्द्र जी महाराज के पुत्र थे। इनका जन्म महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में हुआ था, इनकी माता सीताजी थीं, जो महाराजा जनक की पुत्री और महाराजा रामचन्द्र जी की भार्या थीं। वह उन दिनों तपोवन में महर्षि बाल्मीकि के आश्रम में ही निवास करती थी और गर्भवती थी।

एक बार महाराजा रामचन्द्र जी की आज्ञा से उनका छोटा भाई लवणासुर के वध के लिये उसी वन में आया और उसने महर्षि के आश्रम में ही विश्राम किया। जिस रात शत्रुघ्न वहां ठहरा था, उसी रात में सीता ने दो पुत्रों को जन्म दिया। सीता के पुत्रों के जन्म का शुभ समाचार ऋषि कुमारों ने आधी रात में ही जाकर वाल्मीकि मुनि को दिया। ऋषि ने तत्काल जातकर्म संस्कार द्वारा विघ्नों तथा रोगों से रक्षा करने के उपाय किये। ऋषि ने जो बालक प्रथम उत्पन्न हुआ था, उसका नाम कुश और छोटे का नाम लव रखा। ये दोनों जुड़वां पुत्र कुश और लव के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुए। आश्रम की वृद्धा स्त्रियाँ दोनों बालकों की रक्षा करने लगीं।

जिस समय जातकर्म संस्कार की विधि की जा रही थी, तब उस विधि में रामचन्द्र और सीता का नाम तथा गोत्र उच्चारण सुन कर आश्रम में ही विद्यमान शत्रुघ्न परम प्रसन्न हुआ और उसने सीता की पर्णकुटी में जाकर कहा—"माता, बड़े भाग्य की बात है।" प्रातः होते ह शत्रुघ्न महर्षि वाल्मीकि से आज्ञा लेकर वहां से प्रस्थान कर गये।

कुश और लव चन्द्रमा की कला के समान शनैः-शनैः बढ़ने लगे। दोनों सुन्दर, विनयशील एवं सुदृढ़ अंगों वाले थे। आश्रम की वृद्धा स्त्रियां दोनों बालकों की रक्षा, लालन-पालन एवं स्नेह-संवर्धन में सीता को पूरा-पूरा सहयोग देती थीं। दोनों बालकों की आंखें हरिण के समान सुन्दर, कन्धे बैल के सदृश विशाल, मस्तक ऊंचा तथा छाती विस्तृत थी। उनकी बाहुएं राजा राम के ही समान घुटनों तक लम्बी थीं। वे दोनों देखने में सुन्दर और चलने में मनोहर प्रतीत होते थे। जो उन्हें देखता वह उन्हें देवपुत्र ही समझता।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाल्मीकि मुनि अति तेजस्वी, साक्षाद्धर्ममूर्ति, सकल धर्मशास्त्रों के वेत्ता तथा सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्रों के विज्ञाता थे। उन्होंने कुश और लव को शनैः-शनैः समस्त वेद-वेदांगों और धर्मशास्त्रों की शिक्षा दे दी, सभी अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग सिखला दिया और उन्हें गान विद्या में भी पारंगत कर दिया।

एक दिन उसी तपोवन में एक सारस और सारसी परस्पर प्रेम क्रीड़ा में मस्त थे। उसी समय एक व्याध उधर आ निकला। उसने प्रेम में आसक्त सारस और सारसी के जोड़े पर अपना बाण छोड़ दिया। उस बाण से उन दोनों में सारस का प्राणान्त हो गया। यह सब महर्षि बाल्मीकि ने देखा तो उन्हें महान् क्लेश हुआ। उनसे यह सहा न गया और उनकी अन्तरात्मा से अनायास ही आर्त्तस्वर में दुःख से भरी यह वाणी निकली—

'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्च मिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

अरे व्याध, तू कभी सुखी न हो, तूने प्रेम में आसक्त सारस और सारसी के जोड़े में से सारस को मार डाला।

ऋषियों ने बाल्मीकि के मुख से जब इस छन्द में निबद्ध, रसवती मधुर वाणी को सुना तो वे आश्चर्य में भर गये और बाल्मीकि मुनि से कहने लगे कि हे महामुनि बाल्मीकी! आपके अन्तःकरण से अति सुन्दर छन्दोबद्ध मधुर वाणी प्रस्फुटित हुई है, आप संसार में सबसे प्रथम कविता करके आदि कवि प्रसिद्ध हो गये हैं। क्यों न आप तीनों लोकों के नाथ मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्रजी का गुण वर्णन इसी वाणी में करें। महर्षि बाल्मीकि ने आश्रम के अन्य ऋषियों की इच्छा को स्वीकार करके रामचन्द्रजी का जीवन चरित्र उसी वाणी में लिखा। इस जीवन चरित्र का नाम उन्होंने रामायण रखा। अपने दोनों शिष्यों कुश और लव को उन्होंने सम्पूर्ण रामायण कण्ठस्थ करवा दी और इसका स्वर के साथ गाना भी उन्हें बता दिया। दोनों बालक बड़ी मधुर वाणी में स्वर और ताल के साथ रामायण को गाने लगे। जो कोई उनका गाना सुनता वही उन पर मुग्ध हो जाता।

एक दिन राजा रामचन्द्रजी ने विचार किया कि हमें अश्वमेध यज्ञ करना चाहिये क्योंकि इस यज्ञ के करने के अनेक फल होते हैं। यह विचार उन्होंने अपने कनिष्ठ भ्राता प्रिय लक्ष्मण से कहा कि हे लक्ष्मण! अश्वमेध



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यज्ञ कराने वाले वशिष्ठ, नामदेव, जाबालि और कश्यप आदि अश्वमेध यज्ञ के अग्रणी श्रेष्ठ ब्राह्मणों को बुला लाओ। उन लोगों की सम्मति लेकर यज्ञ का घोड़ा छोड़ा जायेगा। रामचन्द्र जी की आज्ञा से लक्ष्मण ने बड़ी शीघ्रता के साथ उन आचार्यों को बुला लिया। रामचन्द्रजी ने उठकर उन्हें प्रणाम किया और उन्होंने भी रामचन्द्रजी को आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् सबके बैठ जाने पर रामचन्द्रजी ने उनके सामने अश्वमेध यज्ञ करने का विचार प्रस्तुत किया। उन ब्राह्मणों ने अश्वमेध यज्ञ की प्रशंसा की। ब्राह्मणों द्वारा अश्वमेध यज्ञ की प्रशंसा सुनकर रामचन्द्रजी अति प्रसन्न हुए और उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि प्रिय वत्स! अश्वमेध यज्ञ के लिए विभीषण तथा सुग्रीव आदि को बुला लो। अन्य भी सभी मेरे हितकारी राजाओं को यज्ञ देखने के लिये निमन्त्रण भेज दो। विदेशी ब्राह्मणों को, ऋषि-मुनियों को, देशान्तर के रहने वाले ब्राह्मणों को भी स्त्रियों सहित यज्ञ में सम्मिलित होने के लिये बुलवा लो।

फिर रामजी ने लक्ष्मण से कहा कि गोमती नदी के तट पर नैमिषारण्य में यज्ञभूमि बनाओ। वह बड़ा पुनीत स्थान है। महात्मा और ब्राह्मण वहां हजारों यज्ञ कर चुके हैं इसलिये यज्ञ की विधि वे उत्तम प्रकार से जानते हैं। तदनन्तर रामचन्द्र जी की आज्ञा से यज्ञभूमि में अतिथियों के भोजन तथा दान-दक्षिणा के लिये भरपूर सामग्री जमा करा दी गई।

यज्ञ की सम्पूर्ण सामग्री जुटाकर महाराजा राम ने यज्ञ योग्य श्याम वर्ण का घोड़ा छोड़ा। घोड़े की रक्षा के लिये ऋत्विजों के साथ लक्ष्मण को भेजा। यह यज्ञ का घोड़ा जब एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा रहा था तो सन्त तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लिखा है कि वह वाल्मीकि मुनि के आश्रम पर पहुंचा। वहां कुश और लव को अश्वमेध यज्ञ के घोड़े के आने का समाचार मिला तो वे दोनों भाई आये और उन्होंने उस यज्ञ के घोड़े को पकड़ लिया। लक्ष्मण घोड़े की रक्षा में नियुक्त था। उसकी सेना के साथ कुश और लव का घमासान युद्ध हुआ। लक्ष्मण की सेना हारती देखकर स्वयं राजा रामचन्द्रजी भी वहां आ पहुंचे। उस समय कुश और लव के साथ रामचन्द्रजी का भयंकर युद्ध हुआ। वे दोनों भाई इतने बलवान और अस्त्र-शस्त्र की विद्या में इतने निपुण थे कि रामचन्द्रजी भी उन पर काबू न पा सके। न तो रामचन्द्रजी को यह मालूम था कि ये दोनों बालक कौन हैं और न ही उन बालकों को ज्ञात था कि यह हमारे साथ युद्ध करने



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाला कौन है ! उस युद्ध में राम को निर्बल देखकर महर्षि वाल्मीकि और सीता ने उन्हें युद्ध करने से रोक दिया। वे दोनों बालक बचपन में ही ... है।

लक्ष्मण की रक्षा में जब वह घोड़ा चारों दिशाओं में घूम कर लौट आया! तब महाराजा रामचन्द्रजी का अश्वमेध यज्ञ प्रारम्भ हुआ। यज्ञ की समाप्ति पर रामचन्द्रजी ने ब्राह्मणों और याचकों को यथेच्छ दान किया। जो दीर्घजीवी मुनि उस यज्ञ में सम्मिलित थे उन्होंने कहा कि ऐसा यज्ञ हमने कभी नही देखा। यहां जो सोना चाहता है उसे सोना मिलता है, धन चाहने वाले को धन और रत्न चाहने वाले को रत्न मिलता है। चांदी, सोने, रत्न तथा वस्त्रों का ढेर लगा रहता था और वह दान कर दिया जाता था।

जिस समय यह यज्ञ हो रहा था, उसी समय महर्षि वाल्मीकि अपने शिष्यों के साथ वहां आये। महाराजा रामचन्द्र तथा वहां उपस्थित मुनियों ने महर्षि वाल्मीकि का अनुपम सत्कार किया। महर्षि ने अपने शिष्यों—कुश और लव से कहा कि वत्स! तुम लोग यज्ञभूमि में जाकर प्रसन्नतापूर्वक ऋषियों के पवित्र स्थानों में, गलियों में, राजमार्ग में, राजाओं के डेरों में, रामचन्द्रजी के द्वार पर, यज्ञस्थान में और ऋत्विजों के समक्ष रामायण का गान करो। यदि रामचन्द्रजी तुमको बुलवाकर इस काव्य को सुनना चाहें तो अवश्य गान करना। फलमूल खाकर आश्रम में रहने वालों को धन की आवश्यकता नहीं होती, इसलिये धन का जरा भी लोभ मत करना। यदि रामचन्द्रजी पूछें कि तुम लोग कौन हो ? किसके पुत्र हो ? तो इतना ही कहना कि हम लोग वाल्मीकि के शिष्य हैं। यह वीणा मधुर स्वर वाली है, इससे सुन्दर स्वर निकालना और इसके स्वरों को मिलाकर मधुर वाणी में गान करना। कुश और लव ने ऋषि की आज्ञा स्वीकार की और अपने डेरे पर चले गये।

अगले दिन प्रातःकाल उठकर स्नान अग्निहोत्र आदि नित्यकर्म कर कुश और लव ने रामायण का गान प्रारम्भ कर दिया। वाणी के मधुर स्वर के साथ वह गाया जा रहा था। बालकों का गाना सुनकर रामचन्द्रजी बड़े विस्मित हुऐ। अवकाश के समय रामचन्द्र जी ने एक सभा बुलाई, जिसमें सभी प्रकार के विद्वानों को आमंत्रित किया। जब सभा जुड़ गई तब रामायण को गाने वाले उन दोनों बालकों—कुश और लव—को सभा में



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बुलवाया। सभा में एकत्रित सभी जन-समुदाय ने उन बालकों को बड़े प्रेम से देखा। वे दोनों बालक ऐसे जान पड़ते थे मानो रामचन्द्र जी के बिम्ब से निकले हुए दो प्रतिबिम्ब हैं। यदि वे जटा और वल्कल वस्त्र धारण न किये होते तो रामचन्द्रजी और इनमें कोई अन्तर न होता। कुछ काल के अनन्तर उन दोनों बालकों ने रामायण गाना आरम्भ किया। उन बच्चों का गाना बार-बार सुनकर भी श्रोता तृप्त नहीं हो रहे थे।

उनका गाना सुनकर मध्याह्न के समय रामचन्द्र जी ने भरत से कहा कि इन बालकों को इस गाने के उपलक्ष्य में सुवर्ण मुद्रायें दी जायें। इसके अतिरिक्त ये लोग और जो कुछ चाहें, वह भी दो। यह सुन भरत उन दोनों को स्वर्ण मुद्रायें देने लगे तो उन्होंने लेने से इन्कार कर दिया और कहा—इसे लेकर हम क्या करेंगे? हम लोग तो बन में रहकर कन्द मूल फल से जीवन-निर्वाह करते हैं। हम वन में इसे ले जाकर क्या करेंगे? उनकी इस बात को सुनकर सभा के सभी लोग और रामचन्द्रजी भी बड़े विस्मित हुए। प्रसन्न होकर रामचन्द्रजी ने उनसे पूछा कि—यह काव्य कितनी देर तक गाने पर समाप्त होता है? इसके बनाने वाले मुनि का नाम क्या है? और वे कहां रहते हैं? इस बात को सुन ऋषिकुमारों ने कहा कि—हे राजन्! इस काव्य को बनाने वाले महर्षि वाल्मीकि हैं, वे आपके यज्ञ में आये हुए हैं। उन्होने ही यह सम्पूर्ण चरित्र आपको सुनाने की हमें आज्ञा दी है। महर्षि वाल्मीकि ने इस काव्य में ही आप ही की कीर्ति और जन्म-कर्म का वर्णन किया है। यदि आप सुनना चाहें तो यज्ञ कार्य के अवकाश में आप प्रतिदिन इसे सुना कीजिये। महाराजा रामचन्द्र ने कहा कि हम इसे अवश्य सुनेंगे। इसके बाद वे दोनों कुमार महाराजा से आज्ञा लेकर प्रसन्नतापूर्वक बाल्मीकि मुनि के पास चले गये। तत्पश्चात उस रामायण को रामचन्द्रजी ने बहुत दिनों तक सुना। सुनते-सुनते अन्त में यह बात सबको पता चल गई कि ये दोनों बालक सीता के पुत्र हैं।

ये दोनों होनहार बालक बड़े प्रसिद्ध हुए। रामचन्द्रजी ने इनको कुशावती और अवन्तिपुरी का राजा बनाया। राज-काज में निपुण नीतिज्ञ इन दोनों भाइयों ने अपनी-अपनी प्रजा की धर्मपूर्वम रक्षा और पालना की। यह भी सुनते हैं कि इनके राज्य का विस्तार पंजाब तक हो गया था। पंजाब के प्रसिद्ध नगर कसूर और लाहौर इन्हीं कुश और लव के बसाये हुए हैं। □



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# वेदप्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियां

१. श्रीमती सत्यवती, बरेली २००) २. नाथालल प्रभुदयाल, थाना १५१) ३. आर्यसमाज, बम्बई १५०) ४. इन्द्रपाल सिंह, बांदा १०८) ५. सीताराम सैनी, मुजफ्फर नगर ८१) ६. रमेशचन्द्र शर्मा, नागौर ५५) ७. श्रीमती राजमाता भदावर, आगरा ७०) ८. लक्ष्मीप्रसाद गुप्त, गोहाटी

१०१) दान देने वाले

१. आर० एस० खरे, इन्दौर २. मंगीलाल, जोधपुर

१००) दान देने वाले

१. श्रीमती प्रेम अरोड़ा, कानपुर २. विनोद शूगर मिल्स, गोधरा ३. शादीलाल, जालन्धर ४. शिवाजी पाठक, बलिया ५. प्रताप सिंह, नागौर

५०) देने वाले

१. रामनिवास टुवानी, बम्बई २. रामअवतार गुप्त, बिजनौर ३. सुभाषचन्द, सिलीगुड़ी ४. खेड़ाभाई लक्ष्मीभाई आर्य, मेहसाना

५१) देने वाले

१. धर्मशाला राजपूत, बिजनौर २. शारदा, बम्बई ३. निवाजी ब्रह्मक्षत्रिय, जलगांव

२५) देने वाले

१. लालसिंह त्यागी, मुजफ्फरनगर २. कालकाप्रसाद योगेश्वर, पानीपत

२१) देने वाले

१. रामचन्द्र, जयपुर २. डा० चन्द्रभान, बिजनौर ३. अशोक कुमार, अहमदनगर



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२०) देने वाले

१. राजबहादुर, नैनीताल २. श्रीमती कौशल्या, देहरादून ६. अमरचन्द खण्डेलवाल, मथुरा ४. विश्वनाथ प्रसाद, पाकुड़ ५. त्रिलोकी नाथ, फैजाबाद ६. भेरुसिह ठाकुर, सीहोर

१५) देने वाले

१. सिपाही राजबीर सिंह, भटिन्डा २. नरेश बाली, गोहाटी ३. रवि एजेंसी, हरदोई

११) देने वाले

१. मोतीलाल व रामजी, सीहोर २. राजकुमार, मुजफ्फरनगर ३. रामचन्द्र नारायण, निजामाबाद ४. शिवदत्त, चमपुआ

१०) देने वाले

१. रामनाथ प्रसाद, पूर्वी चम्पारण २. सदाशिव विद्यार्थी, सांगली ३. शान्ति भटनागर, सीतापुर ४. राममनोहर मिश्र, गोण्डा

सभी दानदाताओं का धन्यवाद !

राकेशरानी

अध्यक्ष दयानन्द संस्थान

नई दिल्ली

---

# हिन्दू बनो

१. चोटी रखो।
२. यज्ञपवीत पहनो।
३. मम्मी-डैडी-अंकल-आंटी कहना छोड़ो।
४. घरों पैंट का प्रयोग बन्द करो।
५. अपनी भाषा, वेश-देश-साहित्य-धर्म से अपने बच्चों को परिचित कराओ।

हिंदू जागो ! देश बचाओ !

---



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

१. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम और अधिकार बनाये जाएं।

२. मजहब के आधार पर पुलिस, सेना या किसी भी सरकारी विभाग में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

३. पंजाब, कश्मीर, असम व देश के अन्य भागों में पाकिस्तानी घुसपैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यंत्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

४. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

५. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने का अनुमति न दी जाए और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाए।

६. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाए।

७. कश्मीर सम्बन्धी धारा ३७० तुरन्त हटाई जाए और वहां भारी के नागरिकों के स्थायी तौर पर बसने की व्यवस्था हो।

८. मजहब के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए।

९. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उन्हें वोट का अधिकार न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथ-पत्र भरने का नियम बनाया जाए जिसमें वह लिखे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत के प्रति रहेगी।

१०. गोहत्या का कलंक तुरन्त मिटाया जाए।

११. बिहार व उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का आदेश तुरन्त रद्द किया जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# युगपुरुष स्वामी विवेकानन्द को अर्पित श्रद्धासुमन

## संकलनकर्ता : राधेश्याम मित्तल

स्वामी विवेकानन्द का धर्म राष्ट्रीयता को उत्तेजना देने वाला धर्म था। नई पीढ़ी के लोगों में उन्होंने भारत के प्रति भक्ति जगाई, उसके अतीत के प्रति गौरव एवं उसके भविष्य के प्रति आस्था उत्पन्न की। उनके उद्‌गारों से लोगों में आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान के भाव जगे हैं।

—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

यदि कभी कोइ शौर्य पुरुष था, तो वे विवेकानन्द थे। वे पुरुषों में सिंह थे। हम उनके प्रभाव को अभी भी शक्तिशाली रूप से कार्य करते हुए पाते हैं—पता नहीं कैसे, कहां ऐसे कुछ में जो अभी रूपायित नहीं हुआ है। वह सिंह सदृश, महाबली, अन्तःप्रज्ञ, उत्तोलक प्रभाव भारत की आत्मा में प्रविष्ट हो गया है और हम कह सकते हैं—"देखो! मातृभूमि और उसकी सन्तानों की आत्मा में विवेकानन्द आज भी विद्यमान हैं।"

—महर्षि अरविन्द

पाश्चात्य आधिभौतिक शास्त्रों का प्रवाह अंग्रेजी विद्या के साथ इतने जोरों से आ रहा था कि उसे रोकने के लिए एक असामान्य धैर्य और बुद्धि वाले पुरुष के आविर्भाव की आवश्यकता थी। यह कार्य स्वामी विवेकानन्द ने ही अपने हाथों में लिया।

—लोकमान्य तिलक

स्वामी विवेकानन्द का कितना उदात्त सन्देश है। वह हमारे समग्र मनुष्यत्व को जगाने की पुकार है। उसने हमारे बहुत-से युवकों को कर्म, त्याग और बलिदान के माध्यम से स्वातंत्र्य के विभिन्न पथों पर चलने की प्रेरणा दी।

—रवींद्रनाथ ठाकुर



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसे लोग अत्यन्त इने-गिने हैं, जो अपने मानव बन्धुओं का जीवन के किसी क्षेत्र में नेतृत्व करते हैं और जो इन अग्रसरों का मार्गदर्शन करते हैं, वे तो और भी विरले हैं। ऐसे अति नेताओं का डूबती हुई मानवता को उठाने के लिए पृथ्वी पर आगमन बार-बार नहीं हुआ करता। स्वामी विवेकानन्द ऐसे ही अति महान् आत्माओं में से एक थे।

—स्व० राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद

उन्होंने हमें दुःख में धीरज दिया। हताशा में आशा दो, और दुर्बलता के क्षणों में साहस प्रदान किया।

—स्व० राष्ट्रपति डा० राधा कृष्णन्

जिसने भी उनका (स्वामी विवेकानन्द का) भाषण सुना—चाहे वह अंग्रेज हो, ईसाई हो या मुस्लिम, आर्यसमाजी हो या ब्राह्मसमाजी—सबके लिए वह आंख खोलने वाला सावित हुआ। मिशन कालेज के प्रिंसिपल और अन्य यूरोपीय प्रोफेसर भी बड़े लाभान्वित हुए।

—स्वामी रामतीर्थ

हिंदुत्व एवं भारतवर्ष के लिए यह अच्छा हुआ कि स्वामीजी इस सम्मेलन में जा सके, क्योंकि इस सम्मेलन में हिंदुत्व के पक्ष में ऐसा ऊंचा प्रचार हुआ जैसा न तो पहले कभी हुआ था और न उसके बाद से लेकर आज तक हो पाया है। इस प्रकार हिन्दुत्व को लीलने के लिए अंग्रेजी भाषा, ईसाई धर्म और यूरोपीय बुद्धिवाद के पेट से जो तूफान उठा था, वह स्वामी विकेकानन्द के हिमालय जैसे विशाल वक्ष से टकरा कर लौट गया।

—रास्ट्र कबि स्व० रामधारी सिंह दिनकर

विश्व धर्म महासभा के समक्ष स्वामी जी के अभिभाषण के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि जब उन्होंने अपना भाषण प्रारम्भ किया तो विषय था—हिन्दुओं के धार्मिक विचार, किन्तु जब उन्होंने अन्त किया तब तक हिन्दू धर्म की सृष्टि हो चुकी थी।

—भगिनी विवेदिता



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी विवेकानन्द ब्रिटिश शासन से मुक्ति की आवश्यकता अनुभव करते थे, क्योंकि वे उसे दमनकारी और राष्ट्रीय चेतना की उपलब्धि में बाधक मानते थे। उनके इस राजनैतिक दृष्टिकोण और तीव्र राष्ट्र भावना के ही साथ उनका अपने देश-वासियों के प्रति तिरस्कार का भी भाव था, जो अपने राजनैतिक शासकों का अन्धानुकरण करते हुए अपनी सांस्कृतिक जड़ों को खो बैठे थे।

—कोलंबिया विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डा० ग्रेसन कर्क

स्वामी विवेकानन्द! क्या ही नाम! वे उनमें से थे, जिन्होंने मुझे बहुत ही प्रेरणा दी, शक्तिशाली बनने की प्रेरणा, ईश्वर का सेवक होने की प्रेरणा दी, अपने देश का सेवक होने की प्रेरणा दी, दरिद्रों का सेवक होने की प्रेरणा दी, मानव जाति का सेवक होने की प्रेरणा दी।

—इन्डोनेसिया की भाषा में प्रकाशित 'सुआरा विवेकानन्द' नामक ग्रंथ की भूमिका में इंडोनेसिया के स्व० राष्ट्रपति डा० सुकार्णो

सचमुच यह दावा किया जा सकता है कि विवेकनन्द से पूर्व किसी भी भारतीय ने अमरीकनों और अंग्रेजों को इसके लिए बाध्य नहीं किया था कि उसके साथ समानता के स्तर पर व्यवहार हो--एक गुलाम मित्र के रूप में नहीं—एक कट्टर प्रतिपक्ष के रूप में नहीं—अपितु सच्चे शुभ-चिन्तक और मित्र के रूप में; जो सिखाने और सीखने, सहायता देने और मांगने के लिए समान रूप से तैयार है।

—क्रिस्टोभर ईशर वुड

एक प्रभावशाली व्यक्तित्व, पीले और नारंगी रंग के वस्त्रों में सुशोभित शिकागो के बोझिल परिवेश में भारत के सूर्य की तरह चमकने वाले, सिंह का-सा मस्तक, अन्तर्भेदी आंखें, संवेदनशील ओष्ठद्वय, फुर्तीली और अप्रत्याशित गति—स्वामी विवेकानन्द की पहली छाप मुझ पर इसी प्रकार की पड़ी। लोग उन्हें योद्धा संन्यासी कहते थे और वे कुछ गलत नहीं कहते थे, क्योंकि उनकी पहली छाप संन्यासी की अपेक्षा योद्धा की ही अधिक थी। उनके व्यक्तित्व में अपने देश और अपनी जाति का अभिमान कूट-कूट कर भरा हुआ था। (उनकी वाणी से) मुग्ध विशाल जन-समुदाय उनके शब्दों पर कान लगाए रखता कि कहीं एक भी अक्षर छूट न जाए, एक भी लय चूक न जाए।

—डा० श्रीमती एनी बीसेन्ट



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज सौ वर्ष बाद भी विश्व इतिहास के मापदण्ड पर स्वामी विवेकानन्द के महत्व को आंकना बड़ा ही कठिन है। उनके देहावसान के समय किसी भी पश्चिमी इतिहासकार अथवा अधिकतर भारतीय इतिहासकारों ने उनका जो मूल्यांकन किया होगा, वह वस्तुतः उनके महत्व को छोटा करना ही होगा। इन वर्षों के अन्तराल में तब से जो कई महाकाश एव अप्रत्याशित घटनाएं घट गयीं, वे सूचित करती हैं कि आने वाली सदियों में वे आधुनिक विश्व के एक प्रमुख गठनकारी के रूप में याद किए जाएंगे।

—स्व० डा० ए० एल० बाशम, भूतपूर्व प्राध्यापक
साउथ एशियाटिक हिस्ट्री, लन्दन विश्वविद्यालय

उनका (स्वामी विवेकानन्द का) देश-प्रेम उत्कृष्ट था। वे जिस ढंग से 'मेरा देश' कहते हैं, वह अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। उन दो शब्दों ने यह उजागर कर दिया है कि वे केवल संन्यासी ही नहीं बल्कि अपने देशवासियों के नेता भी हैं।

—एक प्रसिद्ध अमरीकी समाचार-पत्र

दिग्गज आत्मा थे स्वामी विवेकानन्द। सर्वोपरि चरित्र के गठनकर्ता थे, निःस्वार्थ और दृढ़ इच्छाशक्ति सम्पन्न स्त्रीपुरुषों के निर्माणकर्ता थे।

—वाशिंगटन विश्वविद्यालय के गणित विभाग के एसोशिएट
प्रोफेसर डा० जे० एम० जी० वेल

उनके शब्दों में विलक्षण संगीत माधुरी है। यद्यपि ये प्रवचन तीस वर्ष पुरानी पुस्तकों में जहां तहां लिपिबद्ध हैं, तथापि आज इनका स्मरण मुझे विद्युत्-स्पर्श की भांति हर्षित कर जाता है। तब फिर जब ये उस महापुरुष के मुख से उच्चरित हुए होंगे तो इनकी ओजस्विता ने कैसा हर्ष और कैसा लोकोत्तर आनन्द दिया होगा।

—फ्रेंच दार्शनिक व विद्वान् रोमां रोलां

## जिसके घर में वेद नहीं,
## वह हिन्दू का घर नहीं !



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की
१३०वीं वर्षगांठ पर विशेष

# महान सेनापति तात्या टोपे अंग्रेजों ने भी जिसे सराहा

—कुमार योगी

सावरकर के शब्दों—"तात्या टोपे का जीवन, एक महान सेनानायक का जीवन था। उसके साथ परास्त सैनिकों का एक ऐसा दल रहता था, जिसका वस्तुतः उससे कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था। उन सैनिकों का आपसी संबंध भी केवल इतना ही था कि वे समान रूप से अंग्रेजों से घृणा करते थे। इस अर्ध-अनुशासित दल को तात्या भाग-दौड़ के लिए तो प्रेरित करता ही था, इसके अलावा उसे कुछ दुर्जन नगरों पर अधिकार करना होता था, नये गोदाम पाने होते थे, नयी तोपें इकट्ठी करनी होती थीं और इन सबसे ऊपर, लोगों को ऐसे कार्यों में सम्मिलित होने के लिए उभाड़ना होता था, जिनमें साठ मील प्रतिदिन की सतत् दौड़ के सिवाय और कोई भी "आश्वासन" नहीं रहता था।"

तात्या ने अन्तिम पेशवा के घरेलू कर्मचारी के रूप में जीवन प्रारम्भ किया था और राजनीतिक अनुभव अथवा सैनिक शिक्षण का उसमें अभाव था। पर जब कानपुर में विद्रोह उठ खड़ा हुआ और उसके स्वामी नाना साहब अपनी इच्छा के विपरीत उसमें फंस गये, तो उनके साथ बेकाबू विद्रोहियों की बागडोर सम्भालने के लिए उसे बुलाया गया। इस काम में वह कहीं योग्य प्रमाणित हुआ और शीघ्र ही युग के चतुर सेनानायकों में उसकी गणना होने लगी। अपनी इसी सैनिक और कूटनीतिक दक्षता से अंग्रेजी सत्ता के साथ वह लगातार बीस मास तक जूझता रहा।

अंग्रेजों के रोजनामचा—लेखक जान लेंग ने लिखा है—"मुझे आभास तक न हुआ था कि वह (तात्या) इतिहास के इतने पृष्ठ भर देगा और



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेजी सेना को इतना अधिक परेशान करेगा। वास्तव में, वह अकस्मात् ही एक महान् सैनिक और राजनीतिक नेता बन गया था।

तात्या टोपे का पूरा नाम रामचन्द्र पांडुरंग था और वह अहमदनगर में पटोदे जिले के जोला परगने का देशस्थ ब्राह्मण था। उसकी अपनी ही गणना के अनुसार, वह अप्रैल १८५९ में ४५ वर्ष का था। इससे उसका जन्म साल १८१४ में ठहरता है। अब उसका चित्र भी केवल एक ही शेष रह गया है; जो उसके मुकदमे के दिनों में कैप्टन वौथ द्वारा निर्मित पैंसिल की धुंधली रेखा-मात्र है। जान लैंग के विवरण के अनुसार, वह मझोले कद का लगभग ५ फीट ८ इन्च लम्बा, गठीले बदन का व्यक्ति था। देखने में वह सुन्दर तो न था, पर उसकी आंखें बड़ी स्पष्ट और चातुरी से परिपूर्ण थीं।

विद्रोह में, जो अप्रत्यक्षत:—४ जून को आरम्भ हुआ, तात्या तथा उसके स्वामी अनजाने में ही किस प्रकार फंस गये, यह तात्या ने अपनी आत्मकथा में इन शब्दों में लिखा है—

मई, १८५७ में कानपुर के जिलाधीश ने नाना साहब को अपनी सेना और तोपें बिठूर से साथ ले जाने को लिखा। मैं कानपुर में जिलाधीश के मकान पर नाना के साथ गया। हमारे साथ १०० सिपाही, ३०० तोपची और दो तोपें थीं। हम वहां चार दिन रहे। उसने हमसे कहा कि यह बड़े सौभाग्य की बात थी कि हम उसकी सहायता के लिये पहुंच गये थे, क्योंकि सिपाहियों ने आज्ञा का उल्लंघन आरम्भ कर दिया था।

पर दो दिन बाद, अकस्मात् ही तीन टुकड़ियों के साथ, हमें घेर लिया नाना साहब तथा मुझको 'ट्रेजरी' में कैद कर दिया। फलस्वरूप हमारे जो सिपाही थे, वे भी विद्रोहियों में सम्मिलित हो गये। इसके बाद समस्त सेना ने वहां से कूच कर दिया। विद्रोहियों ने नाना साहब, मुझे और हमारे कर्मचारियो को अपने साथ ले लिया और कहा—"दिल्ली चलो।" नाना ने न्कार कर दिया, तो सेना ने अपने साथ कानपुर चलकर लड़ने के लिए कहा। इस बात का भी नाना ने विरोध किया, लेकिन विद्रोहियों ने एक न नी और उन्हें बन्दी के रूप में रखकर कानपुर की ओर बढ़ते चले गये। ां युद्ध प्रारम्भ हो गया।

बाद में क्या हुआ, यह इतिहास प्रसिद्ध बात है। २६ जून को, इलाहाबाद तक सुरक्षित चले जाने का आश्वासन पाकर, घिरे हुए अंग्रेजों



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ने आत्मसमर्पण कर दिया। लेकिन तात्या और उसके स्वामी के लाख प्रयत्न करने पर भी नाव द्वारा भागने का प्रयास करते हुए बहुत से अंग्रेज निर्दयता पूर्वक कत्ल कर दिये गये। अब विद्रोहियों के कृत्यों को, जिनमें नाना को लाचार होकर सम्मिलित होना पड़ा था, ढकना कठिन हो गया और उन्होंने, परिस्थिति का मुकाबला करने का निश्चय कर, स्वयं को पेशवा घोषित कर दिया।

संघर्ष आरम्भ हुआ और इसके दरम्यान १२, १५ और १७ जुलाई को नाना की सेना ने हैवलोक के सैनिकों ने बुरी तरह परास्त किया और अपनी बची हुई सैन्य शक्ति के साथ उन्हें अवध के फतहपुर नामक स्थान में जाकर शरण लेनी पड़ी, फलतः सारा भार तात्या के कधों पर आ पड़ा। अब उसका पहला काम ४२वीं विद्रोही पैदल सेना की सहायता से, जो उस समय शिवराजपुर थी, बिठूर को वापस लेना था। लेकिन प्रयत्न विफल हुआ और तात्या ने तुरन्त ही अपना ध्यान मुरार की ओर केन्द्रित कर दिया, वहां ग्वालियर का प्रसिद्ध सैन्य-दल ठहरा हुआ था। ग्वालियर के सैन्य दल पूर्ण रूप से उभाड़ने में तात्या को पूरी सफलता मिली और अपनी विलक्षण बुद्धि से उसने निमिष मात्र में उनका संगठन एक शक्तिशाली दल के रूप के में कर लिया, जो आगे चलकर "पेशवा की सेना" के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

इसके बाद, काल्पी को अपना आधार बनाकर तात्या ने संघर्ष आरंभ किया और २५ नवम्बर को सम्पूर्ण कानपुर पर उसकी सेना छा गयी। अंग्रेजी सेना के हौसले पस्त पड़ गये और दो ही दिन बाद, २७ नवम्बर को वह कानपुर से बुरी तरह खदेड़ दी गयी। परन्तु ९ दिन बाद ही, ६ दिसम्बर को जनरल कैम्पबैल के अधीन अंग्रेजी सेना ने पुनः आक्रमण कर दिया। इस बार उत्तम शिक्षा और साधनों की विजय हुई और कैम्पबैल को हराने तथा कानपुर पर अपना अधिकार जमाने में असफल होकर तात्या काल्पी लौट गया और वहीं से युद्ध जारी रखने का उसने निर्णय किया।

तात्या की इच्छा थी कि वह जल्दी ही पेशवा के नाम पर मध्य भारत और बुन्देलखण्ड को जीत ले, क्योंकि वहां सुरक्षित हो जाने के बाद महाराष्ट्र में विद्रोह की आग भड़क सकना बहुत आसान था। अतः उसने एक घोषणा द्वारा मध्य भारत के तमाम नेताओं से निवेदन किया—"मेरे स्वामी ने, हिन्दू और मुस्लिम धर्मों की रक्षा का ध्यान रखते हुए, अपने जीवन को



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समस्त सुविधाओं और सुखों की आहुति देकर भारत की जनता की रक्षा के हित में शत्रुओं का विनाश करने का दृढ़ निश्चय किया है। उनके इस दृढ़ निश्चय का अर्थ भारतीय राजाओं और मुखियों के प्रदेशों पर अधिकार कर स्वयं की सत्ता स्थापित करना नहीं, बल्कि उनके छिने भाग को वापस दिलाना है। आप हमारे साथ हृदय से सहयोग करें, जिससे देश में शान्ति स्थापना हो सके और जनता का क्षोभ दूर हो जाये।"

तात्या की घोषणा का यमुना की घाटी के गांव-गांव में स्वागत किया गया और मराठी ब्राह्मणों ने पेशवा के पक्ष में प्रचार शुरू कर दिया। मध्य भारत के मुखियों में से बांदा, कानपुर और शाहगढ़ के मुखिया पेशवा के झंडे के नीचे पहले आये। लेकिन चारखड़ी के राजा ने कपटपूर्ण व्यवहार किया। फलतः तात्या ने युद्ध छेड़ दिया और १७ मार्च को उस नगर पर विद्रोहियों का अधिकार हो गया। लेकिन इस बीच सर ह्यूम रोज की आक्रमणकारी सेना ने विद्रोही राज्यों का विध्वंस कर डाला और झांसी के दुर्ग पर भी, जिसकी वीर रानी ने कुछ दिन पूर्व ही पेशवा के साथ संधि की थी, २२ मार्च को घेरा डाल दिया।

झांसी विद्रोहियों के हाथ से ५ अप्रैल को निकल गयी, परन्तु तात्या ने हार न मानी। उसने दुबारा सैन्य संगठन किया और रहस्यपूर्ण नगरकूंच में अंग्रेजी सेना का भयंकर विरोध किया, लेकिन यहां भी सर ह्यूम की एक चाल पेशवा की सेना को पूरी तरह परास्त करने में सफल हो गयी तदुपरान्त हारी हुई सेना ने निराशाजनक अन्तिम प्रयास काल्पी में किया, लेकिन कई भयंकर मुठभेड़ों के पश्चात् यहां भी उसे हार ही मिली।

काल्पी की हार से विद्रोही निराश हो उठे। वे मध्य भारत में अपना अधिकार खो चुके थे और दोआब प्रदेश में पेशवा के निरन्तर बदलते हुए स्थानों से भी उसका सम्बन्ध टूट गया था। उनके शत्रु हर ओर से बढ़े जा रहे थे। फिर भी तात्या ने साहस का परित्याग न किया और झांसी की रानी की सहायता से अपनी छितरायी हुई सेना को लेकर वह ग्वालियर के ऐतिहासिक किले में जा पहुंचा। वह किला बिना लड़े ही उसके हाथ में आ गया और सिंधिया की सेना ने आक्रमणकारियों के साथ मैत्री सम्बन्ध स्थापित कर लिया। पर दक्षिण को जाने वाली सड़क अभी भी अरक्षित थी और तात्या को आशा थी कि जैसे ही नाना उसे आकर मिलेगा, वह सेना को लेकर महाराष्ट्र के बीच पहुंच जायेगा। परन्तु नाना समय पर न



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पहुंच सके और शत्रु सेना ने पेशवा की सेना के निकलने से पूर्व ही ग्वालियर को घेर लिया। युद्ध में तात्या की बुरी तरह हार हुई। उसकी तमाम तोपें छिन गयीं और अन्त में वह नाना के भतीजे राव साहब के साथ चम्बल पार करके राजस्थान चला गया। लेकिन तात्या ने कभी हार नहीं मानी।

उसे अपूर्व सफलता टोंक में मिली, जहां नवाब की सैनिक टुकड़ियां सामुदायिक रूप में उसके साथ मिल गयीं। टोंक छोड़कर, तात्या बूंदी और मेवाड़ से गुजरा और अनेक उतार चढ़ावों के बाद वह झालावाड़ पहुंचा, जहां राजा की सेना ने उसका हृदय से स्वागत किया। इस प्रकार पुनः शक्ति प्राप्त कर, तात्या ने इन्दौर पर छा जाने की साहसिक योजना बनायी। परन्तु यह योजना जनरल माइकेल द्वारा ठीक समय पर व्यवधान उपस्थित कर दिये जाने से विफल हो गयी; और वह लाचार हो बांसवाड़ा चला गया।

इसके बाद नौ महीनों की अवधि में उसने राजस्थान और मालवा प्रदेशों का दौरा किया और पश्चिमी भारत में आतंक फैलाये रखा। २१ जनवरी १८५९ को सीकर में उसकी अन्तिम हार हुई और वह निराश हो परोन के जंगल में जाकर अपने मित्र नरवर के राजा मानसिंह के साथ रहने लगा। लेकिन मित्र ने भयानक रूप से विश्वासघात किया और ७ अप्रैल १८५९ को उसे कर्नल मीडे को सौंप दिया। इसके बाद उसे सीपरी ले जाया गया। वहां उसका "कोर्ट मार्शल" हुआ और १८ अप्रैल १८५९ को उसे फांसी दे दी गयी।

उसी दिन जनरल माइकेल ने अपने रोजनामचे में लिखा—"भगवान, जनरल टोपे की आत्मा को शान्ति दे। गदर के इतिहास में उसका नाम सर्वोच्च सम्मान के शिखर पर लिखा जायेगा। वह हमारा शत्रु रहा, मगर उसकी कर्मण्यता और नेतृत्व कुशलता हमारे लिए भी प्रेरणा रही।"

□

---

**भारत उनका जो भारत के। विदेशी षड्यंत्रकारियों को देश से निकाला जाए।**

---



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# आर्यसमाज के कैसेट

विवाह, जन्मदिन, आदि शुभअवसरों पर इष्टमित्रों को भेंट देने, संगीतमय आनन्द प्राप्त करने तथा आर्यसमाज व वैदिक सन्देश घर घर पहुंचाने हेतु उच्चकोटि के भजनोपदेशकों द्वारा गाये गये मधुर संगीतमय भजनों तथा संध्या-हवन आदि के उत्कृष्ट कैसेट आज ही मंगाइये !

कैसेट नं० 1 वैदिक सन्ध्या हवन-(स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण सहित) मूल्य 25 रु.
2. भक्ति भजनावली, [illegible] 25 रु.
3. गायत्री महिमा, गायत्री मंत्र की विशद व्याख्या [illegible] 25 रु.
4. महर्षि दयानन्द, [illegible] 25 रु.
5. आर्य भजन माला, [illegible] 25 रु.
6. [illegible] एवं प्राणायाम [illegible] 25 रु.
7. आर्य [illegible] 30 रु.
8. महात्मा आनन्द स्वामी उपदेशामृत, (दो भागों में) 30 रु.
9. वैदिक भजन सिन्धु, [illegible] 30 रु.
10. [illegible] वैदिक भजनावली, [illegible] 30 रु.
11. वैदिक भजन माला, [illegible] 30 रु.
12. [illegible] भजन सिन्धु, [illegible] 30 रु.
13. श्रद्धा, [illegible] 30 रु.
14. आर्य भजनावली, [illegible]
15. वेद गीतांजली, [illegible]
16. भजन सुधा, [illegible]

विशेष छूट-
3 या अधिक कैसेटों का अग्रिम धन आदेश के साथ भेजने पर डाक व पैकिंग व्यय फ्री।
वी.पी. से मंगाने हेतु पन्द्रह रुपये कृपया आदेश के साथ अग्रिम भेजिये।

नोट- 3 से कम कैसेट मंगाने पर डाक तथा पैकिंग व्यय मूल्य से अतिरिक्त होगा।

प्राप्ति स्थान-
आर्य शिशु आश्रम
14 मुलुण्ड कालोनी बम्बई-400082

उपरोक्त कैसेट दयानन्द संस्थान, २२८६, आर्य समाज रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-५ से भी मिल सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दुओं के प्रति अन्याय

## (पोप की भारत यात्रा की प्रतिक्रिया)

—श्री आनन्दशंकर पंड्या

पोप जान पाल द्वितीय का भारत में सरकार व प्रेस की ओर से इतना स्वागत हुआ जितना ईसाई देशों में भी नहीं हुआ था। कारण है भारत की सर्व धर्म समभाव की उदार परम्परा। एक हिन्दू होने के नाते मुझे सब धर्माचार्यों के प्रति आदर है। पोप का स्वागत करने में कोई बुराई नहीं है। बुराई है उस भेदभाव में जिसके कारण हमारे पाश्चात्य विचार वाले नेता समाचार पत्र, रेडियो तथा टी. वी. में अपने हिन्दूधर्म को हीन समझ कर उसको कोई महत्व नहीं देते न उसके बारे में कोई समाचार छपने देते हैं। हिन्दू धर्म के शंकराचार्य जी, स्वामी प्रभुपादजी, स्वामी चिन्मानन्द जी आदि धर्माचार्यों को भारत सरकार ने कभी आदर नहीं दिया जिसके कारण विदेशों में भी हिन्दू धर्माचार्यों को किसी देश की सरकार ने बुलाकर आदर नहीं दिया और न उनके विश्व कल्याणकारी अमृतवत उपदेशों का प्रचार करने का अवसर दिया। यह हो रहा है धर्म निरपेक्षता के सिद्धांत के दुरुपयोग के कारण जिसमें हिन्दू समाज का अनादर करना ही धर्मनिरपेक्षता माना गया है।

आज प्रचार का युग है। जबकि एक खराब दवा प्रचार के द्वारा बिक जाती है पर अच्छी दवा प्रचार के अभाव में पड़ी रह जाती है। हिन्दू धर्म श्रेष्ठ है तथा विश्व शांति में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान दे सका है पर हिन्दू धर्म शुरू से ही राजनीति सत्ता से अलग हो रहा है क्योंकि राजनीतिक सत्ता से सम्पर्क रखने पर धर्म पथ भ्रष्ट होकर राजनीतिक स्वार्थ का साधन बन जाता है। भारत तथा विश्व में इसके अनेकों उदाहरण हैं। अतः हिन्दू धर्म को राजसत्ता से कोई सहयोग नहीं मिल रहा है जबकि अन्य धर्मों को निरन्तर आर्थिक व राजकीय सहायता मिलती है। हिन्दू धर्म को आज अपनी बात विज्ञापन द्वारा कहनी पड़ती है। यह भी एक गुलाम जाति के धर्म की कहानी है। आशा है प्रेस व सरकार आगे से हिन्दू धर्म के प्रति इस तरह का भेदभाव नहीं बरतेंगे।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## मानसिक दासता

यह एक आश्चर्य की बात है कि जबकि पोप को भारत की प्राचीन संस्कृति व गरिमा से अत्यन्त प्रभावित हुए और उन्होंने अपने भाषणों में उसकी प्रशंसा की। तब भारतीय नेता हिन्दू धर्म को साम्प्रदायिक कहकर उसे हमेशा बदनाम करने की कोशिश करते रहे हैं तथा स्वयं को हिन्दू कहने में शर्म का अनुभव करते हैं। यह कायरता व पाखंड की पराकाष्ठा है। तथा ५०० वर्ष की दासता तथा वर्तमान मानसिक पाश्चात्य दासता तथा ब्रेनवाशिंग का प्रभाव है। इन सब बातों के कारण हिन्दुओं की नई पीढ़ी में आत्म सम्मान व आत्म विश्वास की भावना नष्ट हो रही है तथा उनका नैतिक पतन हो रहा है।

आज भारत आजाद है। तब भी हमारे देश के महान व्यक्तियों की विदेशों में कोई भी पूंछ नहीं है क्योंकि सेक्युलर होने के कारण हम स्वयं ही अपने विद्वान धर्माचार्यों का आदर नहीं करते हैं। हिन्दू आज पहले से अधिक मानसिक दासता से पीड़ित है। तथा विदेशी विचारों की नकल करने में अपना गौरव मानते हैं। यहां हमें श्री विवेकानन्द के इस वाक्य का स्मरण रखना चांहिये "जब कोई व्यक्ति स्वय को घृणा करने लगता है तो यह आखिरी आघात है तथा जब कोई व्यक्ति अपने पूर्वजों से घृणा करने लगता है तो उसका अन्त हो चुका है।"

अपनी यात्रा के दौरान पोप ने जो उपदेश भारत की जनता को दिये उन पर भारत तब से पालन करता जा रहा है जब ईसा का जन्म भी नहीं हुआ था। 'सर्व धर्म समभाव' में मानने के कारण हिन्दुओं ने कभी अन्य धर्मावलम्बियों का अपने धर्म में परिवर्तन नहीं किया न उनके पूज्य स्थानों को तोड़ा बल्कि हिन्दू राजाओं ने कई मस्जिद व गिरजाघर बनवा दिये, क्योंकि हिन्दू धर्म सब धर्मों की माता है। यह किसी एक सम्प्रदाय विशेष का धर्म नहीं है। अतः हिन्दू धर्म कभी भी अन्य धर्मों के बीच भेदभाव-घृणा नहीं फैलाता।

हिन्दू धर्म के सर्वोच्च ग्रंथ वेद विश्व के प्राचीन धर्म ग्रंथ हैं जिसमें सिर्फ उस मानव धर्म का ही उपदेश है जिस पर चलकर समस्त मानव जाति सुख शांति प्राप्त कर सकती है। पर हिन्दू धर्म को अपनी 'विश्व बन्धुत्व' व 'सर्व धर्म समभाव' की उदारता के बदलते विश्वासघात, तिरस्कार व गालियां ही मिली हैं। जिसके कारण अब आम हिन्दू में 'सर्व धर्म समभाव' की



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भावना के प्रति विश्वास धीरे-धीरे उठता जा रहा है। इसकी जिम्मेवारी अन्य धर्मावलम्बियों पर ही है।

## जगत गुरु भारत

हिन्दू धर्म मानव कल्याण का विज्ञान है। यदि हम भारत से भ्रष्टाचार, दुराचार, बलात्कार, पुलिस अत्याचार, दहेज अत्याचार, हिंसा, अपराध, नशीली दवाएं इत्यादि बुराइयां निकालना चाहते हैं तो हमें अपने पूर्वजों के महान धर्म ग्रन्थ, वेद, उपनिषद व गीता का ही सहारा लेना होगा। विदेशी धर्माचार्यों के उपदेशों के बजाय लाभ होने के हानि होगी क्योंकि उससे हिन्दू समाज में आत्महीनता उत्पन्न होगी।

यदि पोप विश्व तथा भारत को सुखी देखना चाहते हैं जैसा कि वे दावा करते हैं तो उन्हें अपने अनुयायियों को इंद्रिय, निग्रह, अहिंसा तथा सत्य की शिक्षा देनी चाहिए (जो झूठ और हिंसा द्वारा सारे संसार का शोषण कर रहे हैं) पर सत्य और अहिंसा का उपदेश सिवाय हिन्दू धर्म के और कोई नहीं करता। विदेशी धर्माचार्य तो इसकी चर्चा भी नहीं करते। भोग वासना वाला समाज समस्त संसार को हिंसा द्वारा लूटता है फिर झूठे प्रचार से उस अन्याय को छिपाता है। संसार में सारे दुखों की जड़ वही है।

यह आश्चर्य की बात है कि जगत गुरु भारत को उपदेश देने के लिए पोप को बुलाया गया तथा इस गरीब देश के करोड़ों रुपये उनके स्वागत पर खर्च किये गये जबकि हिन्दू धर्म ने संसार को सिर्फ कोरे उपदेश ही नहीं दिये बल्कि उन पर हजारों वर्षों तक निरन्तर आत्म त्याग करके पालन भी किया है। उदाहरणस्वरूप विश्व शांति की बात तो सभी करते हैं और पोप ने भी अपनी भारत यात्रा में की, पर हिन्दुओं ने अपने जीवन में अहिंसा के सिद्धांतों को पूर्ण रूप से उतारा। भारत की आजादी गांधीजी ने हिन्दू धर्म के मुख्य सिद्धांत अहिंसा द्वारा ही ली। पाकिस्तान बनने के बाद भी हिन्दुओं ने अल्प संख्यकों को भारत में विशेष अधिकार प्रदान किये जो हिन्दुओं को भी प्राप्त नहीं है।

## पाखंड

हिन्दू धर्म इस पाखण्ड में विश्वास नहीं करता है कि पहले तो कमजोर राष्ट्रों पर बम गिराये जायें फिर उन्हें दवायें व डाक्टर भेजे जायें, पहले बम बनाये जायें फिर निरस्त्रीकरण की सभायें की जायें, पहले अपराध व तलाक



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का वातावरण बनाया जाय फिर उन्हें आपस में प्रेम से रहने का उपदेश दिया जाय, पहले अपने माता पिता को निराधार छोड़ दिया जाय फिर उनके लिए वृद्ध आश्रम बनाए जायें इत्यादि । हिन्दू धर्म जो भी उपदेश देता है उस पर सच्चाई से चलता है और उसने अपने समाज का स्वभाव हजारों वर्षों से वैसा ही बना दिया है । हिन्दू धर्म बजाय बुराइयों का ऊपरी इलाज करने के उन बुराइयों की जड़ काटने में ही विश्वास करता है यही कारण है कि भारत वर्ष में हजारों वर्षों तक सुख शांति रही, जिसे विदेशी आक्रमणकारियों ने नष्ट कर दिया ।

हिन्दू धर्म हिंसा तथा आतंकवाद का तो साक्षात दुश्मन है । आज विश्व को अपनी सुरक्षा के लिए हिन्दू धर्म की आवश्यकता है । अतः हिन्दू धर्म के सत्य व अहिंसा को विश्व का धर्म बनाना चाहिए बजाय कोई तर्कहीन घिसे पिटे धर्म को हिन्दू समाज पर लादने के और यह बात अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि हिन्दू धर्म का दुश्मन सम्पूर्ण मानव जाति का दुश्मन है ।

यह विश्व का दुर्भाग्य है कि आज ऐसे सच्चे धर्म के बजाय उन धर्मों का अधिक प्रचार हो रहा है जो पहले संसार में दुख के बीज बोते हैं, फिर उस दुख को दूर करने के लिए सेवा की योजनायें बनाते हैं । इस तरह के धर्मों में उनके कार्यकर्ताओं की भावना यद्यपि सेवा की रहती है पर उनके मुख्य संचालकों का उद्देश्य राजनीतिक शक्ति प्राप्त करके अपना स्वार्थ सिद्ध करना रहता है ।

इसलिए हिन्दू जनता यदि गरीबी के कारण अपना धर्म परिवर्तन करना चाहती है तो सरकार का कर्तव्य है कि वो गरीब हिन्दुओं के धर्म व विश्वास की उसी तरह रक्षा करे जिस तरह वो उनके जान व माल की रक्षा करना अपना कर्तव्य समझती हैं । स्कूल व कालेजों में हिन्दू बच्चों को हिन्दू धर्म की शिक्षा दिलाना हिन्दू जनता का लोकतांत्रिक, जन्मसिद्ध अधिकार है हिन्दुओं को सरकार से माँगना चाहिए । लोकतंत्र में मांगे बिना कुछ नहीं मिलता है । जो बच्चा चिल्लाता है, माँ उसे ही दूध पिलाती है । यही बात लोकतंत्र में सरकार की है ।

हिन्दुओं के लोकतांत्रिक व धार्मिक अधिकार धीरे-धीरे नष्ट हो रहे हैं क्योंकि हिन्दू बहुत सहनशील है तथा वे यह झूठी आशा करते हैं कि लोकतंत्र में रामराज्य की तरह न्याय होगा । आज भारत में धर्म निरपेक्षता की आड़ में हिन्दू समाज की राजनीतिक स्वार्थ के लिए नष्ट किया जा रहा है ।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह कार्य उन हिन्दुओं द्वारा हो रहा है जो पाश्चात्य विचारधारा के गुलाम हैं।

## धर्म परिवर्तन व विश्व शांति

पोप ने हिन्दू विचारधारा से प्रभावित होकर अपनी भारत यात्रा में कहा है कि "सब धर्मों को एक-दूसरे के साथ शांति व प्रेम से रहना चाहिए तथा एक दूसरे से सहयोग करना चाहिए। (इण्डियन एक्सप्रेस ६-२-८६) यदि वास्तव में पोप इस सिद्धांत को मानते हैं और सिर्फ प्रचार की दृष्टि से ऐसा नहीं कह रहे हैं तो फिर ईमानदारी से उन्हें अपना धर्म परिवर्तन का कार्यक्रम छोड़ देना चाहिए। भारत के छोटा नागपुर, उड़ीसा, बस्तर इत्यादि के आदिवासियों को खाना, कपड़ा, दवा देकर उनका हजारों वर्षों का धर्म नष्ट नहीं करना चाहिए। अमेरिका तथा यूरोप में रहे कृष्ण के अनुयायियों पर झूठे मुकदमे चलाकर उन्हें खतम करने की योजना नहीं बनानी चाहिए सर्व धर्म समभाव व धार्मिक परिवर्तन एक दूसरे के पूर्ण विरोधी हैं। धर्म परिवर्तन अन्य धर्मों की निन्दा करके तथा उनके प्रति घृणा फैलाकर ही किया जाता है। इससे मानव जातियों में आपस में दुश्मनी उत्पन्न होती है तथा विश्व में अशांति उत्पन्न होती है। आज के युग की हिंसा सैकड़ों वर्षों की धार्मिक सहिष्णुता तथा धर्म के नाम पर अत्याचार का परिणाम है। जो मानव जाति पर समय-समय किये गये हैं। इसीलिए हिन्दू धर्म की दृष्टि में धर्म परिवर्तन एक नीच कर्म है। धर्म परिवर्तन से पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय जीवन का आपसी प्रेम नष्ट हो जाता है। जिस प्रेम का बनावटी प्रचार कुछ धर्मावलम्बी हमेशा करते रहते हैं। वास्तव में धर्म परिवर्तन का उद्देश्य राजनीतिक है।

अमेरिका के राष्ट्रपति आइजन होवर, विदेश मंत्री डलेश तथा बिशप ग्राहम ने अमरीका जनता में यह झूठी घोषणा की थी कि यदि वे विश्व में कम्युनिजम के प्रचार को रोकना चाहते हैं तो विश्व की १०० करोड़ जनता को ईसाई बनाने के लिये धन दें। परिणामस्वरूप पाश्चात्य देशों के लोग पिछड़े देशों में धर्म परिवर्तन के लिए धन भेज रहे हैं। इस आशा में कि यदि भारत के हिन्दू लोग ईसाई बन गये तो कम्युनिष्ट देशों से युद्ध होने पर भारत के ईसाई उनके इशारों पर रूस व चीन से युद्ध करके अमेरिकी लोगों की रक्षा करेंगे। इसलिए ईसाई पादरी कहते हैं कि धर्म परिवर्तन कोई अपराध नहीं। यह एक दैवी कार्य। पूर्व पोप ने अपनी भारत यात्रा के कुछ दिन पहले



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नवम्बर १९६४ को अपने प्रथम पत्रक में कहा था—संसार में केवल एक ही सच्चा धर्म है "ईसाई धर्म"। इसका अर्थ यह कि हिन्दू धर्म सहित अन्य धर्म झूठे हैं। वर्तमान पोप ने कहा कि "ईसाइयों को अपने देश के लिए कार्य करना चाहिए" तो फिर नगालैण्ड व मिजोरम में राष्ट्र विरोधी कार्य क्यों हो रहा है तथा भारत से अलग होकर इसे स्वतंत्र देश बनाने की माँग क्यों कर रहे हैं। कहना कुछ और करना कुछ, हिन्दू धर्म ऐसा पाखंड नहीं सिखाता है।

आज विश्व में एक दूसरे तरह का साम्राज्यवाद चला है वह है धार्मिक गुलाम बनाने का। भारत ने अपने इतिहास में यह कभी नहीं किया है। इसने चीन, जापान, कम्बोडिया व वर्मा को महान बौद्ध धर्म दिया पर उन्हें अपना धार्मिक गुलाम नहीं बनाया। उनके व्यक्तियों व शहरों के नाम भारतोय नहीं दिये जबकि अन्य धर्मों ने धर्म परिवर्तन के बाद सर्वप्रथम यही कार्य किया है। इतिहास इसका साक्षी है। गीता के अनुसार, सब देशों का अपना धर्म ही वहां के विकास के लिये आवश्यक है। इस तरह अरब देशों के लिए आवश्यक है। इस तरह अरव देशों के लिए इस्लाम, जेरुसलम के लिए ईसाई धर्म तथा भारत के लिए हिन्दू धर्म ही कल्याणकारी है। गीता में कहा है "पर धर्मोभयावहं" अन्य का धर्म कल्याणकारी नहीं क्योंकि प्रत्येक देश का धर्म वहां की जलवायु, भूगोल, इतिहास व जाति की आवश्यकता के अनुसार विकसित हुआ है। ऐसी स्थिति में एक धर्म दूसरे देश पर जबरदस्ती अपना धर्म थोपने को क्यों इतना आतुर रहता है? ये धर्म गरीबों के उपकार को बात करते हैं पर वे अपना सेवा कार्य वही करते हैं, जहां उन्हें धर्म परिवर्तन करने की संभावना दिखाती है। इसलिए गांधी जी ने कहा था कि "सत्य की जड़ों को नष्ट करने वाला सबसे जहरीला कार्य है धर्म परिवर्तन का कार्य।"

## छूआछूत

विदेशी धर्मों के हाथ में छूआछूत एक अस्त्र है जिसके द्वारा वे ५० वर्ष से हिन्दू धर्म व समाज को लांछित करते रहते हैं। ऐसा करने में उनका उद्देश्य अपने धर्म परिवर्तन के कार्य को न्याययुक्त ठहराना होता है। पर वास्तव में छूआछूत हिन्दू धर्म का अंग है ही नहीं। मेरे द्वारा टेप किये गये दो इंटरव्यू में द्वारका पीठ के शंकराचार्य तथा कांचीपीठ के शंकराचार्य ने हरिजनों पर किये गये अत्याचारों की भर्त्सना की तथा कहा कि "हिन्दू धर्म में छूआछूत और ऊंच-नीच की भावना को कोई स्थान नहीं है। हिन्दू



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म के ५० प्रतिशत ग्रन्थ जिनमें रामायण, महाभारत भी है वाल्मीकि व वेदव्यास द्वारा लिखे गये हैं जो कि शूद्र थे।"

हिन्दू अत्यन्त उदारता के कारण इतिहास में अपनी आजादी व राजनीतिक शक्ति खो बैठा। छुआछूत के मूल में सामंतशाही तथा ५०० वर्ष की विदेशी दासता से उत्पन्न राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक कारण हैं जो अब धीरे-धीरे हटाये जा रहे हैं। और एक समय जायेगा जब छुआछूत का नामोनिशान भी भारत में नहीं रहेगा। पर विदेशी धर्मावलम्बी चाहते हैं कि छुआछूत भारत में बनी रहे ताकि वे हरिजनों का धर्म परिवर्तन कर सकें।

हिन्दू समाज की बुराइयों के मूल में वह लम्बी दासता है जिसके दौरान हिन्दुओं के सब धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व आर्थिक केन्द्र नष्ट कर दिये गये तथा उन्हें विदेशियों की सब बुराइयों की नकल करने पर बाध्य किया गया। अतः हिन्दू समाज में तुरन्त संशोधन की आवश्यकता है।

## हिन्दू धर्म क्यों ?

आज संसार के सब धर्म अपना धुंआधार प्रचार करके उस पर अरबों रुपया खर्च कर रहे हैं, पर संसार में अनाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार आदि बढ़ता ही जा रहा है। ईसाई देशों में तो दुराचार बहुत तेजी से बढ़ता जा रहा है क्योंकि उनका प्रचार यह है कि पाप करने के बाद यदि चर्च में जाकर पादरी के सामने उस पाप को स्वीकार कर लिया जाता है तो उस पाप से मुक्ति हो जाती है। यह प्रचार वास्तव में अन्य धर्मावलम्बियों को ईसाई धर्म में आकृष्ट करने के लिए ही किया जाता है। पर इसका दुष्परिणाम यह हुआ है कि सारा ईसाई जगत पाप व दुराचार को एक बहुत साधारण बात मानने लगा है जो कभी भी पादरी के सामने स्वीकार करके धोया जा सकता है। इससे पाप व दुराचार को संसार में उत्तेजना मिल रही है। परिणामस्वरूप सारे यूरोप और अमेरिका की जनता ईसाई धर्म से दूर होती जाती है। वहां लोग चर्च में नहीं आते तथा बहुत से चर्च वहां बिकाऊ हैं। अतः वहां के पादरी लोग अब अपना धार्मिक उपनिवेश फैलाने अफ्रीका तथा एशिया में आ रहे हैं।

हिन्दू धर्म में पाप व दुराचार को बहुत गंभीरता से लिया जाता है। हिन्दू धर्म के अनुसार ऋषियों व अवतारों को भी अपने पूर्व जन्म में की हुई भूलों का परिणाम अवश्य भोगना पड़ा है। हिन्दू धर्म की कथाएं बनाने



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का उद्देश्य यही था कि जनता, पाप अथवा दुराचार से हटे व पुण्य अथवा सदाचार के कार्य करे, जिससे मानव जाति को सुख मिलता है। परिणाम-स्वरूप प्रत्येक हिन्दू पाप से दूर रहने का प्रयत्न करता है यद्यपि पाश्चात्य विचारधारा के कारण नई पीढ़ी पाप करना अब उतना बुरा नहीं समझती।

किसी भी समाज व देश को असत्य नष्ट कर देता है। पर भारत में असत्य बोलना सेक्युलर व सत्य बोलना साम्प्रदायिकता कहलाता है। इस नकली सेक्युलरिज्म के कारण हिन्दू लोग अपने देश में पराये हो रहे हैं। यह अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है। इस तरह के झूठे प्रचार के कारण आज हिन्दू समाज भ्रमित है। उसे सत्य व असत्य का ज्ञान नहीं है। अच्छे-बुरे का विवेक नहीं है तथा शत्रु-मित्र का भेद नहीं है। इससे वो धीरे-धीरे नष्ट हो रहा है। अतः प्रेस व देश के नेताओं का कर्तव्य है कि वे धर्म निरपेक्षता के नाम पर असत्य का प्रचार ना करें।

प्रत्येक देश का विश्व के प्रति कुछ विशेष योगदान रहता है। जिस तरह पाश्चात्य देशों ने विज्ञान में विशेष विकास किया, उसी तरह भारत ने आध्यात्म ज्ञान व विश्व शांति क्षेत्र में हजारों वर्षों से अपना योगदान दिया था। अतः संसार के प्रत्येक प्रबुद्ध मानव का कर्तव्य है कि ऐसे हिन्दू धर्म की रक्षा करना अपना प्रथम कर्तव्य समझे और उसे हानि ना पहुंचे।

अपने 'अनेकता में एकता' के सिद्धांत द्वारा हिन्दू धर्म व समाज ही भारत तथा विश्व में एकता व शांति स्थापित कर सकता है। स्मरण रखिए—गांधी जी ने कहा था "भारत का उद्धार मुसलमान व ईसाईयों पर इतना निर्भर नहीं करता जितना इस बात पर निर्भर करता है कि हिन्दू धर्म के लोग किस तरह अपने धर्म की रक्षा करते हैं। मुसलमानों का काशी विश्वनाथ भारत में नहीं है बल्कि मक्का में है तथा ईसाइयों का जेरूसलम में है पर हिन्दू अपना मोक्ष भारत में रहकर ही प्राप्त कर सकते हैं। भारत युधिष्ठिर व रामचन्द्र का देश है। हमारे ऋषियों ने कहा है कि भारत एक कर्मभूमि है भोग भूमि नहीं।"

□



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर (रोहतक) में

## १६ जून ८६ से २५ जून तक विशाल आर्यवीर एवं शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल झज्जर में एक विशाल सार्वदेशिक आर्यवीर दल का आर्यवीर एवं शिक्षक प्रशिक्षण शिविर १६ जून से आरम्भ होगा जिसका समापन समारोह बहुत ही धूमधाम से २५ जून को सम्पन्न होगा, इस बीच अनेक गणमान्य विद्वान एवं राजनेता शिविर में भाग लेने वाले नवयुवकों को अपने विचारों से शिक्षित एवं दीक्षित करके अपने तथा समाज में फैले कुविचारों व कुसंस्कारों को हटाकर, समाज में फैल रही कुरीतियों को समाप्त करने के लिए उत्साहित करेंगे।

इस शिविर का सम्पूर्ण व्यय गुरुकुल ही वहन करेगा। खाने, पीने, रहने आदि का सब उत्तम प्रबन्ध भी गुरुकुल की ओर से ही होगा। इस शिविर में डा० देवव्रत जी व्यायामाचार्य तथा उनके अनेक योग्य शिष्य, जो कि विविध व्यायामों में पारंगत हैं, वे यहां नवयुवकों को शारीरिक, बौद्धिक शिक्षा देंगे। शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं समाजिक उन्नति चाहने वाले नवयुवकों से अनुरोध है कि इस शुभावसर का लाभ उठावें।

शिविर में भाग लेने वाले नवयुवकों से प्रार्थना है कि वस्त्र, पात्र आदि दैनिक कार्य में प्रयोग होने वाला सामान अपने साथ लावें और अपने पहुंचने की सूचना, प्रधानाध्यापक, गुरुकुल झज्जर, रोहतक, हरयाणा को पत्र द्वारा दें, तथा अधिक जानकारी के लिए भी इन्हीं से सम्पर्क करें। शिविर शुल्क केवल २० रु० है। □

---

"हम रहें न रहें, पर हमारे देश का भविष्य "ओ३म्" ध्वज की छाया में स्वर्णिम होगा और धरती का सबसे बड़ा राष्ट्र बनेगा। यह हमारा अटल विश्वास है।"



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# क्या तुम जानते हो ?

१. गौतम बुद्ध ने सर्व प्रथम प्रवचन सारनाथ में दिया था।

२. गौतम बुद्ध के जीवन काल में संघ में शामिल होने वाले अन्तिम सदस्य का गौरव सुबुद्ध को प्राप्त हुआ था।

३. महात्मा गांधी भारत में २०८९ दिन और दक्षिण अफ्रीका में २४९ दिन जेल में रहे।

४. नेपाल एक ऐसा देश है जो कभी गुलाम नहीं रहा है।

५ सफेद कौआं और सफेद हाथी अफ्रीका पाया जाता है।

६. जवाहर लाल के पिता पंडित मोतीलाल नेहरू को अपने पहले मुकदमे में पांच रुपए फीस मिली थी, जबकि जवाहलाल को अपने पहले मुकदमे में पांच सौ रुपए फीस मिली थी।

७. २ दिसम्बर १९४६ को दिल्ली में अन्तरिम सरकार बनी थी और जिनके प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू बनाए गये थे।

८. सुअर की गर्दन बहुत कड़ी होती है। इसलिए वह गर्दन घुमाकर नहीं देख सकता है।

९. रीछ और समुद्री गाय को छोड़कर सभी स्तनधारी जीवों में सात हड्डियां पायी जाती है।

१०. विश्व की पहली महिला प्रधान मंत्री श्रीमती सिरीमाओ बंडारनायक थीं। वह जुलाई, १९६० में श्रीलंका की प्रधान मंत्री बनी थी।

## भूल सुधार

१५ अप्रैल से १५ मई 'जन-ज्ञान' में दिमागी कसरत छपा, जिसमें नन्दु प्रसाद 'जोरी' के स्थान पर नन्द प्रसाद जोशी छपा है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi